सितंबर - 2022
वर्ष - 20 अंक - 2

सुगन्ध

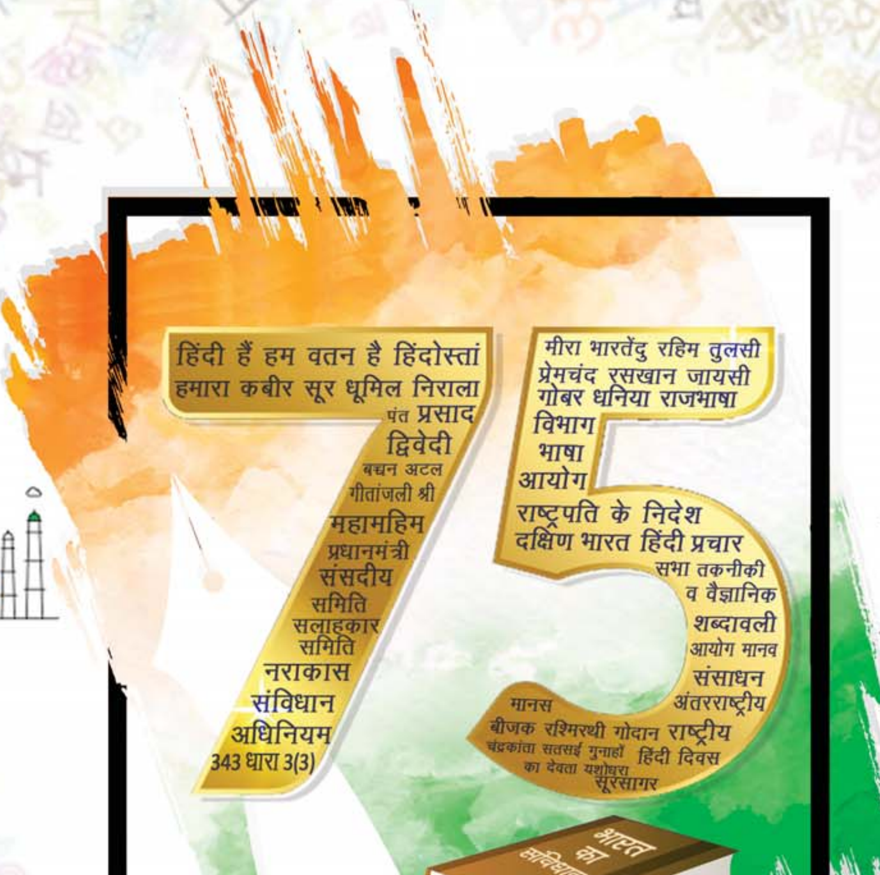

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र
की गृह-पत्रिका

वर्ष 2021-22 के लिए राजभाषा के श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री से 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (प्रथम पुरस्कार)' ग्रहण करते हुए अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री अतुल भट्ट

वर्ष 2021-22 के लिए 'सुगन्ध' पत्रिका हेतु 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (प्रथम पुरस्कार)' ग्रहण करते हुए महाप्रबंधक (राजभाषा एवं प्रशासन) प्रभारी श्री ललन कुमार

ज्योतिरादित्य मा. सिंधिया
JYOTIRADITYA M. SCINDIA

मंत्री
नगर विमानन एवं इस्पात मंत्रालय
भारत सरकार, नई दिल्ली
MINISTER OF
CIVIL AVIATION AND STEEL
GOVERNMENT OF INDIA, NEW DELHI

संदेश

मेरा मानना है कि कोई भी देश अपनी भाषा की ताकत के बिना न मजबूत बन सकता है और न ही विकसित। क्योंकि भाषाओं के माध्यम से ही देश के साहित्य और संस्कृति का संवर्धन संभव होता है, जो किसी भी समाज को उसके अतीत में झांकने और वर्तमान के साथ तालमेल बिठाने में सहयोग देते हैं। भविष्य के सपनों का निर्माण इसी के आधार पर होता है। हमारी सरकार शैक्षणिक व व्यावसायिक विषयों में हिंदी को प्रमुखता से निरंतर लागू कर रही है।

मुझे जानकर प्रसन्नता हुई कि राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड की पत्रिका 'सुगन्ध' देश निर्माण की इस महती भूमिका को पिछले 20 वर्षों से निरंतर निभा रही है और उसका आगामी विशेषांक 'आजादी का अमृत महोत्सव' विषय पर आधारित है। मुझे विश्वास है कि इस अंक में विषय की सामयिक प्रासंगिकता के कारण कई अभिनव तथ्य उभर कर सामने आयेंगे।

'सुगन्ध' के विशेषांक की सफलता के लिए शुभकामनाएँ।

(ज्योतिरादित्य मा. सिंधिया)

फग्गन सिंह कुलस्ते
FAGGAN SINGH KULASTE

इस्पात एवं
ग्रामीण विकास राज्य मंत्री
भारत सरकार
उद्योग भवन, नई दिल्ली-110011
MINISTER OF STATE FOR STEEL
AND RURAL DEVELOPMENT
GOVERNMENT OF INDIA
UDYOG BHAVAN, NEW DELHI-110011

संदेश

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हो रही है कि राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड की हिंदी गृह-पत्रिका 'सुगन्ध' अपने प्रकाशन का 20वाँ वर्ष पूरा कर रही है और वर्तमान अंक भारत के 'आजादी का अमृत महोत्सव' विषय को समर्पित है। किसी सांगठनिक पत्रिका के लिए इतने लंबे समय तक सफलतापूर्वक प्रकाशन और राष्ट्रीय पहचान की प्राप्ति आसान नहीं होता। इसका श्रेय प्रतिबद्ध प्रबंधन, समर्पित संपादक मंडल के साथ-साथ लोकप्रियता के संवाहक जिज्ञासु पाठकों को जाता है। इसके लिए मैं सभी हितधारकों को बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ।

हमारे देश के साहित्य और संस्कृति के विकास और संवर्धन में हिंदी की महती भूमिका है, जिसकी तुलना किसी और भाषा से नहीं की जा सकती। हिंदी हमारे देश की जनभावनाओं का प्रतिनिधित्व करते हुए विश्व भाषा बनने की राह पर तेजी से आगे बढ़ रही है और ज्ञान-विज्ञान की समस्त विधाओं को अपने आप में समेट कर विश्व पटल पर भारत को गौरव प्रदान कर रही है। हमारे छोटे-बड़े सभी प्रयास इसे विश्व भाषा बनाने में सहायक हो रहे हैं। आर आई एन एल के 'सुगन्ध' का प्रयास भी इस दिशा में एक सकारात्मक कदम है।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की शुभकामनाएँ देता हूँ।

(फग्गन सिहं कुलस्ते)

अतुल भट्ट
अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम - 530031

संदेश

अत्यंत गर्व का विषय है कि राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड की गृह-पत्रिका 'सुगन्ध' का सितंबर 2022 अंक 'आजादी का अमृत महोत्सव' विषय पर आधारित है। आजादी के अमृत महोत्सव के काल में हमारी भाषाओं की अहमियत और समाज निर्माण में उनकी भूमिका पर विश्लेषणात्मक सिंहावलोकन की जरूरत है, ताकि हम अपनी भाषाई उपलब्धियों एवं कमियों का आकलन निष्पक्ष और सकारात्मक तौर पर कर सकें।

एक संगठन के रूप में आर आई एन एल ने राजभाषा के विकास व संवर्धन के लिए बहुत ही सराहनीय कार्य किया है और भारत सरकार द्वारा दिये गये लक्ष्यों से आगे बढ़कर काम कर रहा है, जिसके परिणामस्वरूप राजभाषा कार्यान्वयन व गृह-पत्रिका प्रकाशन हेतु भारत सरकार द्वारा दिये जाने वाले शीर्ष प्रोत्साहन 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' संगठन को लगातार प्राप्त हो रहे हैं।

संगठन की पत्रिका 'सुगन्ध' का प्रकाशन निरंतर विशेषांकों के रूप में हो रहा है, ताकि पाठकों को एक ही स्थान पर विषय की पर्याप्त मात्रा में पाठ्य सामग्री मिल सके। हालाँकि मानक स्तंभों एवं विशेष संदर्भों की रचनाओं को जिस प्राथमिकता से छापा जा रहा है, वह प्रशंसनीय है।

मैं पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास और राष्ट्रीय पहचान को बनाये रखने की कामना करता हूँ।

अतुल भट्ट

(अतुल भट्ट)

आपकी पाती - हमारी थाती

प्रिय ललन कुमार जी,

मुझे आपका पत्र मिला और साथ में संलग्नित राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड-विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र की गृह-पत्रिका 'सुगंध' के 20वें वर्ष का अंक-1 भी प्राप्त हुआ। मैंने इस अंक को पढ़ा और मैं इस अंक के अंतर्वस्तु से बहुत प्रभावित और प्रसन्न हुई। इस अंक में लेखों के माध्यम से राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड, विशाखपट्टणम की गतिविधियाँ और अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश डाला गया है, जो सराहनीय है। आपको और आपके टीम को हार्दिक बधाइयाँ और शुभकामनाएँ।

- डॉ अमी याज्ञिक, सांसद (राज्य सभा)

'सुगंध' का मार्च अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका निरंतर प्राप्त हो रही है। इंतजार लंबा हो गया है, पर पत्रिका प्राप्त होते ही मन सुखद हो जाता है। आईना....जो कहता है सभी को पढ़ना चाहिए। 'भाषा कभी शून्य में नहीं पनपती है और न ही उसका आकार शून्य में विकसित होता है। भाषा की उत्पत्ति तो ध्वनियों के उद्घोष से होती है।' इस पंक्ति के लिए हार्दिक बधाई।

अंतरराष्ट्रीय महिल दिवस के उपलक्ष्य में प्रकाशित यह अंक सराहनीय है। विमर्श के लिए इसमें अति महत्वपूर्ण आलेख हैं, जो संकीर्णता के दायरे से बाहर निकल कर आपको एक अनुकूल वातावरण दे रहे हैं। ज्ञान कराती सहज मन सरल पर अति प्रभावी बाल कविताएँ, बाल सुगंध बिखेर रही हैं। आनामिका जी की कविताओं का कहना क्या? किसे सराहें, किसे नहीं। मार्च अंक ने मन मोह लिया। सुगंध संपादक मंडल को मेरी हार्दिक बधाई। एक और अच्छे अंक के लिए शुभकामनाएँ।

- श्री चक्रधर शुक्ल, कानपुर

'सुगन्ध' का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ, हार्दिक धन्यवाद। यह पत्रिका सदैव एक नये विषय के साथ सुसज्जित होकर प्रकाशित होती है और पाठकों का मन हर्षित करती है। पत्रिका के सभी लेख पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। यह पत्रिका मुझे एक मानक की भांति प्रतीत होती है, जो अपने साथ विविध विषयों को लेकर हमारे समक्ष प्रस्तुत होती है। पत्रिका के सभी रचनाकार और संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। 'सुगन्ध' पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मंगलकामनाएँ...

- श्री सी जी जोस मार्टिन, विशाखपट्टणम

'सुगन्ध' यों तो एक विभागीय पत्रिका है। लेकिन इसकी रोचक, स्तरीय एवं ज्ञानपरक सज्जा को देख कर आभास होता है कि यह किसी भी सामान्य पत्रिका से इक्कीस ही है। यह सही है कि इसमें प्रकाशित कई लेख राष्ट्रीय इस्पात निगम की गतिविधियों और इससे जुड़े तकनीकी विषयों पर प्रकाश डालते हैं, जो विभागीय कर्मियों एवं माइनिंग के विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी होते हैं। यहाँ यह बात विशेष उल्लेखनीय है कि ऐसे विषयों पर हिंदी में सामग्री अन्यत्र दुर्लभ है। लेकिन 'सुगन्ध' का विषय विस्तार इन लेखों तक सीमित नहीं है। पत्रिका के पन्नों पर कविताएँ, कहानियाँ, जीवनोपयोगी रोचक लेख, व्यंग्य रचनाएँ भी अपनी सुगंध बिखेरती मिलती हैं, जो संयंत्र के कर्मियों एवं उनके परिवार के सदस्यों के साथ-साथ सामान्य पाठकों का भी मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धक करती हैं। उदाहरण के लिए मार्च अंक में प्रकाशित शंकरलाल माहेश्वरी की कहानी 'आखिरी पड़ाव' वृद्धावस्था की समस्याओं पर बहुत मार्मिक कहानी है। रोचक शैली में लिखी गई शिक्षा, स्वास्थ्य, अध्यात्म, साहित्य आदि विषयों की रचनाएँ पत्रिका को विभागीय सीमा से बाहर निकाल कर साहित्यिक पत्रिका की श्रेणी में ला खड़ा करती हैं। राजभाषा हिंदी से संबंधित कार्यक्रमों की सचित्र जानकारी और तेलुगु के माध्यम से हिंदी सिखाने के पृष्ठ 'सुगन्ध' की विशिष्ट पहचान है। तकनीकी विषयों तथा कहानी, कविता के साथ छपे मनोरम और विषयोचित चित्रों से पत्रिका की शोभा और बढ़ जाती है। मैं पिछले 20 वर्षों से 'सुगन्ध' का नियमित पाठक हूँ। मेरा सुझाव है कि पत्रिका में सामान्य सामग्री का अनुपात बढ़ायें, ताकि कर्मी व सामान्य पाठक दोनों को रोचक और जीवनोपयोगी रचनाएँ पढ़ने को मिल सकें। आशा है, संपादक मंडल इस पर विचार करेंगे। ऐसी सुंदर पत्रिका निकालने के लिए प्रबंधन और संपादकीय टीम बधाई की पात्र हैं।

- श्री सुभाष सेतिया, नई दिल्ली

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड द्वारा प्रकाशित 'सुगन्ध' पत्रिका पाठकों का ज्ञानवर्धन करने में अद्वितीय है। इसमें प्रकाशित कहानियाँ और कविताएँ जहाँ एक ओर पाठकों को साहित्यिक रचनाओं के प्रति रुचि उत्पन्न करते हैं तो वहीं दूसरी ओर कंपनी की विविध इकाइयों के प्रचालन से आम जनता को परिचित कराया जाता है। 'बढ़ते कदम' इस दिशा में एक महत्वपूर्ण मानक स्तंभ बना हुआ है। 'आओ भाषा सीखें' हिंदी और तेलुगु भाषा सीखने वालों को व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करता है। 'अध्यात्म' एक ऐसी रचना है, जिसका पठन करते हुए लोग अनजान तीर्थस्थलों के भ्रमण का आनंद प्राप्त करते हैं। अपने अद्भुत मानक स्तंभों से यह पत्रिका देश की बेहतरीन पत्रिका बनी हुई है। ऐसी उत्कृष्ट पत्रिका के प्रकाशन के लिए आर आई एन एल के संपादक मंडल को हार्दिक बधाई और अभिनंदन। आशा है कि आगे भी यह उच्चस्तरीय पत्रिका अपने स्थान को कायम रखेगी और सहृदय पाठकों का मनोरंजन करती रहेगी।

- श्रीमती एस सुजाता, विशाखपट्टणम

महोदय, 'सुगन्ध' पत्रिका मिली। पत्रिका को देखकर मन प्रफुल्लित हुआ और कुछ कविता रूप में उद्गार मैं दे रहा हूँ -

राष्ट्रीय इस्पात निगम के क्षेत्र में
सुसंपन्न राजभाषा की फुलवारी में
अति सुंदर अनूठे मधु भरे फूल खिले
अपनी सुगंध से सब के मन बहलाये।

स्वच्छ भारत के विकास में विज्ञान की देन
समता के लक्ष्य से प्रांतीय भाषा का अध्ययन
मानवता की रश्मि के लिए आध्यात्मिक चिंतन
मनोचेतना की रश्मि के लिए प्रेरणात्मक कहानियाँ

जीवन के मनोल्लास की नींव, संगीत सरिता
तोते मैने की बोली सी बाल विनोद की रचनाएँ
अनुभूतियों की कसौटी पर कसी स्फूर्ति कविताएँ
मन बहलाव की हास्य रसमयी व्यंग्य रचनाएँ

ये सभी गुलदस्ते के गुल बनकर
चतुर्दिक सुगंध नित नूतन फैलाकर
आप की कार्य क्षमता के प्रतीक बने
आपकी श्रम शक्ति के आदर्श बने

विश्व कल्याण की विचार धारा बहायी
स्वर्ण भारत के आचार्यों के दिमाग में
वसुधैव कुटुंबकम की कल्पना सच बनायी

- डॉ एम शिवप्रसाद राव, अनकापल्लि

पूर्व की भाँति पत्रिका पढ़ने के लिए नियमित रूप से प्राप्त हो रही है, हार्दिक आभार। मार्च 2022 का अंक मिला। लौह उत्पादन टेक्नॉलजी और कोयला प्रिपरेशन जैसे लेखों में कुछ नवीन जानकारियाँ भी मिलीं। इस्पात उत्पादन प्रक्रिया से जुड़े रहने के कारण यह विषय रुचिकर रहा। कविताओं का चयन इस अंक में बहुत बढ़िया हुआ है। मनोज बंसल और चक्रधर शुक्ल दोनों कवियों को बधाई। कहानियों अनामिका अनु की 'अमलतास, अंफन और आत्मा' कहानी मार्मिक और हृदयस्पर्शी है। पत्रिका का कलेवर, साज-सज्जा बेहतरीन हैं।

- श्री श्याम नारायण श्रीवास्तव, रायगढ़

संपादकीय

हिंदी को अपनाने में गुरेज क्यों....

गँवई कहावत है कि 'जो डर गया, सो मर गया', मतलब बड़ा साफ है कि डरने से काम बिगड़ता ही है। हमारे भीतर पल-पल और पग-पग डरने की प्रवृत्ति क्यों है? जब देश को आजाद होकर 75 वर्ष हो गये, लगभग 3 पीढ़ियों ने आजादी के वसंत का रसास्वादन कर लिया, तब भी एक देश, एक भाषा के रूप में हम अपने आपको क्यों तलाशते रहते हैं? क्या हम अपने अतीत से बाहर नहीं आ पाये हैं या बाहर आना ही नहीं चाहते? ये दोनों सवाल नहीं, बल्कि अपने ऊपर जमे शैवाल को हटाने का प्रयास हों। भय ग्रसित अपने अंतर्मन से मुक्त होना होगा। अपने अतीत की विफलताओं का कारण जानते हुए नवसृजन, नवाचार एवं नव-जागरण के लिए उद्यत होना होगा।

हम कब तक दुहराते रहेंगे कि हम परतंत्र थे। कब तक गाते रहेंगे कि पृथ्वीराज चौहान मोहम्मद गोरी को सत्रह बार हराकर आखिर में हारा था। क्या हमने कभी सोचा कि कैसे मुट्ठी भर बाहर के लोग आये और हमें लूटा और सैकड़ों वर्षों तक गुलामी की जंजीर में जकड़ा रखा? माना जाता है कि जब अविभाजित भारत (पाकिस्तान और बांग्लादेश सहित) पर अंग्रेजों का राज था, उस समय भारत में उनकी कुल संख्या मात्र ढाई से तीन लाख के बीच थी, जिसमें स्त्रियाँ व बच्चे भी शामिल थे, जबकि शासन व सेनाओं में लगभग साठ हजार ही फिरंगी थे।

इतने विशाल भूभाग पर शासन में क्या केवल अंग्रेज ही शामिल थे? क्या प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से हमारे पूर्वज नहीं शामिल थे? आशा है, आपने इस विषय पर सोचा जरूर होगा और कारण ढूँढ़ने की कोशिश भी की होगी। फिर भी हम अपने खोलों व कबीलों से बाहर नहीं निकल पा रहे हैं। आज भी हम भारतीयता की तलाश नारों व हुंकारों में कर रहे हैं। राष्ट्रीयता का खोखला दिखावा सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, भाषाई आदि किसी भी क्षेत्र के लिए काम आने वाला नहीं है।

देश का निर्माण देशवासियों की निष्ठा और एकता में अंतर्निहित होती है, न कि किसी के झूठे वादों और सपने बेचने वाले उद्बोधनों से। देशवासियों में निष्ठा और एकता बनाने के लिए सौहार्द्र, विश्वास और भाईचारे की भावना पैदा करनी पड़ती है, तब जाकर एक श्रेष्ठ देश बनता है और उसकी सारी नीतियों और लक्ष्यों को धार मिलती है। इसके लिए सभी उपयोगी संसाधनों, जिसमें भाषा भी शामिल है, का भरपूर संवर्धन करना होता है। आजादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली हिंदी भाषा की शिक्षा माध्यमों में उपेक्षा की खामियाजा भावी पीढ़ियों को भुगतना पड़ सकता है।

कहा जाता है कि अकबर के शासनकाल में खड़ीबोली शिष्ट समाज की भाषा बन गई थी। अकबर अपने शासन के लिए हिंदी को राजभाषा का दर्जा देना चाहता था। लेकिन टोडरमल के सुझाव पर उसने फारसी को राजभाषा का दर्जा दिया था। अकबर को ईरानी संस्कृति से अधिक हिंदुस्तानी संस्कृति पसंद थी। इसलिए उसके शासन काल में हिंदू-मुस्लिम एकता मजबूत बनी। शहँशाह के चारों तरफ हिंदी का माहौल था। तीन प्रधान हिंदू रानियाँ, कई सिपहसालार, मंत्री और कवि आदि हिंदू थे। चतुर्भुज दास, गंग, आसकरण, पृथ्वीराज, मनोहर, नरहरि, बीरबल जैसे विद्वान उसके साथ हिंदी में वार्ता करते थे।

जब अंग्रेजों का शासन था और तत्कालीन कलकत्ता देश की राजधानी हुआ करता था तो राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर बंगाल के लोग हिंदी के प्रति बहुत आकृष्ट हुए थे और उस समय कलकत्ता में हिंदी शिक्षकों की बहुत माँग थी, जिसे उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे प्रदेशों के हिंदी शिक्षक पूरा करते थे।

शहँशाह अकबर, बांग्ला भाषी तथा देश के अन्य भूभागों के लोग कभी नहीं डरे कि हिंदी के प्रभाव से हमारी भाषा, संस्कृति नष्ट हो जाएगी, बल्कि उन्होंने हिंदी के माध्यम से अपने आपको विकसित किया। फिर आजाद भारत के भारतीयों को हिंदी से इतनी परहेज क्यों हुई, जो अंग्रेजी और हिंदी जानने वालों के बीच संभ्रांत और गँवार की रेखा खींच दी गई। हिंदी शिक्षा माध्यमों एवं शिक्षण संस्थानों से क्यों विलुप्त सी हो गई है? इस गंभीर मुद्दे पर देश में राजनीतिक बहस छिड़ी है और प्राथमिक शिक्षा में हिंदी और प्रांतीय भाषाओं की अनिवार्यता की बातें की जा रही हैं। नई शिक्षा नीति में हिंदी को उचित स्थान दिलाने की मंशा को सभी भाषा-भाषियों द्वारा सराहा जा रहा है।

इन्हीं सवालों और जवाबों को तलाशते और हिंदी के मार्ग को नवचेतना से तराशते हुए 'सुगन्ध' अपने प्रकाशन के 20वाँ वर्ष पूरा करने जा रही है। 'सुगन्ध' की इस यात्रा में अनेक रचनाकार, व्यंग्यकार, कवि, चित्रकार, मुद्रक, प्रकाशक, उक्कुनगरम में स्थित विद्यालयों के छात्र-छात्राएँ, अध्यापक, पाठक व संगीतकार शामिल रहे और अपनी-अपनी लेखनी से इसे सँवारते रहे।

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड का प्रबंधन और 'सुगन्ध' का संपादक मंडल अपने सभी सहयोगियों के प्रति कृतज्ञ रहेगा। यह सूचित करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है कि 'सुगन्ध' के लिए भारत सरकार के संबद्ध विभाग द्वारा आर.आई.एन. नंबर मिल गया है, जिसके प्रावधानों के अनुसार इसके आगामी अंक का नाम 'राष्ट्रीय इस्पात सुगन्ध' होगा। आशा है, आप अपना प्यार यथावत बनाये रखेंगे।

संपादक

विषयसूची

सृजनात्मक स्तंभ

लेख

संचार माध्यम और अनुवाद	डॉ प्रणव शर्मा शास्त्री	9
हिंदी में व्यंग्य रचना एवं उसकी विकास यात्रा	श्री आनंद कुमार	13
आजादी के अमृत महोत्सव पर ... पुण्य स्मरण	डॉ देवकीनंदन शर्मा	17
भारत की आजादी में हिंदी की भूमिका	डॉ कविता विकास	20
हिंदी भाषा में विदेशी शब्दों की प्रासंगिकता	श्री श्याम नारायण श्रीवास्तव	23
राष्ट्रभाषा में विकसित होता हिंदी का स्वरूप	इंजीनियर आशा शर्मा	26
स्वतंत्रता के बाद हिंदी कविता का विस्तार...	श्रीमती सुरेखा जैन	29
स्वातंत्र्योत्तर भारत में राजभाषा .. की उपलब्धियाँ	सुश्री सुशील कंवर राठौर	32
हिंदी के विकास में अनुवाद की प्रासंगिकता	डॉ राजश्री पी मोरे	43
राजभाषा प्रशिक्षण की चुनौतियाँ : मेरे अनुभव	डॉ टी हैमावती	48
मुलाकात रिटायर्ड बॉस से (व्यंग्य)	श्री हरीश कुमार अमित	63
राजभाषा ... संवैधानिक समितियों की भूमिका	सुश्री रुमन कुमारी	64
कहानी		
एक और द्रोणाचार्य (लघुकथा)	डॉ शैल चंद्रा	22
एक मैसेज	सुश्री भारद्वाज	41
बीड़ी वाले का लड़का	मोहम्मद शफीक अशरफ	45
अनाम रिश्ता	डॉ रश्मि शील	60
हाई स्कूल पास	डॉ रंजना जायसवाल	66
कविता		
श्री सुधीर निगम की कविताएँ		54-55
डॉ एम शिवप्रसाद राव की कविताएँ		56-57
बाल-सुगन्ध		
भारत की अस्मिता है हिंदी	सुश्री आकृति इशिका	58
हिंदी हैं हम वतन है हिंदोस्ताँ हमारा	मास्टर वी आरुश	59
मानक स्तंभ		
गतिविधियाँ		34-39
संगीत सरिता		40
वी एस पी के बढ़ते कदम		
आर आई एन एल का जयपुर स्टॉकयार्ड : एक आदर्श स्टॉकयार्ड		51-52
अध्यात्म		
संतोष		53
आओ भाषा सीखें		68-69
जरा गौर करें		70

'सुगंध'

आर आई एन एल की अर्द्धवार्षिक गृह-पत्रिका

वर्ष-20 - अंक-2 सितंबर, 2022

संपादक

ललन कुमार

उप-संपादक

वी सुगुणा

गोपाल

प्रकाशन सहयोग

एम बी पडाल

डॉ जे के एन नाथन

संपादकीय कार्यालय

राजभाषा विभाग

कमरा सं.245, पहला तल

मुख्य प्रशासनिक भवन

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड

विशाखपट्टणम-530031

मोबाइल: 9989317329, 9989888457 & 9949844146

ई-मेल: vspsugandh@gmail.com

'सुगन्ध' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं एवं उनके प्रति 'राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड प्रबंधन' जिम्मेदार नहीं है।

'सुगन्ध' पत्रिका हमारे संगठन के वेबसाइट 'www.vizagsteel.com' के 'Publications' लिंक में भी उपलब्ध है।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

संगठन की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री अतुल भट्ट की अध्यक्षता में क्रमशः 18 जून, एवं 24 सितंबर, 2022 को संपन्न हुईं। समिति के माननीय सदस्यों ने संगठन को वर्ष 2021-22 के दौरान राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन एवं गृह-पत्रिका 'सुगन्ध' के लिए प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (प्रथम पुरस्कार) की प्राप्ति हेतु कर्मचारी समूह को बधाई दी। तत्पश्चात समिति के सदस्यों ने विभिन्न विभागों में पिछली तिमाही के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा की और विपणन के क्षेत्रीय एवं शाखा बिक्री कार्यालयों द्वारा हिंदी पुस्तकों की खरीद के मामले में बजट की राशि बढ़ाने का निर्णय लिया। बैठक में निदेशकगण, मुख्य महाप्रबंधकगण उपस्थित थे। समिति के सदस्य-सचिव एवं महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री ललन कुमार ने बैठक का संचालन किया।

संचार माध्यम और अनुवाद

- डॉ प्रणव शर्मा शास्त्री, डी. लिट -

अनुवाद एक ऐसी प्रक्रिया है, जो दो भाषाओं, दो संस्कृतियों के बीच सेतु का काम करती है। अनुवाद की प्रक्रिया से हम सब गुजरते रहते हैं, शायद जिसका हमें कभी-कभी आभास भी नहीं होता। अनुवादक के लिए द्विभाषा का ज्ञान होना आवश्यक है। हम अंग्रेजी लिखते हुए अक्सर अपनी मातृभाषा हिंदी में सोचते हैं और फिर अंग्रेजी में उसका अनुवाद करते हैं। वे बच्चे, जिनकी मातृभाषा अंग्रेजी नहीं है, उन्हें अंग्रेजी सिखाने के लिए अंग्रेजी-हिंदी अनुवाद की प्रविधि अपनाई जाती है।

यद्यपि अंग्रेजी-हिंदी भाषाओं की वाक्य संरचना में पर्याप्त अंतर है और दो भाषाओं की संरचना जानने के लिए यह प्रविधि उत्तम है, क्योंकि इससे दो भाषाओं की संरचनात्मक समानताओं और असमानताओं का ज्ञान हो जाता है और यह पता चल जाता है कि वाक्य के किस शब्द का क्या अर्थ है। साधन रूप में अनुवाद का प्रयोग भाषा शिक्षण की एक विधि के रूप में किया जाता है, जबकि साध्य रूप में अनुवाद व्यापार के अनेक क्षेत्रों में अपनाया जा रहा है। यहाँ अनुवाद पाठ की अपेक्षा भाषा के आयाम पर होता है। इस रूप में अनुवाद राष्ट्रीय विकास में सहायक होता है। यहाँ अनुवाद के माध्यम से विकासशील भाषा में आवश्यक और महत्वपूर्ण साहित्य का प्रवेश होता है।'[1]

जिस परंपरागत अनुवाद का प्रयोग तुलनात्मक अध्ययन एवं अध्यापन के लिए किया जाता था, आज उसका स्वरूप बदल चुका है। जैसे-जैसे भाषा ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश करती है, वैसे-वैसे अनुवाद का स्वरूप भी बदलता जाता है। अब अनुवाद केवल साहित्य अनुवाद तक ही सीमित नहीं रह गया, बल्कि तकनीक, विधि, प्रशासनिक और जनसंचार क्षेत्रों में अनुवाद का दायरा बढ़ा है। अनुवाद प्रत्येक व्यवसाय की जरूरत बन चुका है। आज अनुवाद अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान की शाखा के रूप में न केवल सैद्धांतिक सीमाओं पर दृष्टिपात करता है, बल्कि व्यावहारिक स्तर पर भी अनुवाद की बहुमुखी, बहुप्रकृति से हमारा साक्षात्कार होता है।

आज भाषा विज्ञान की कई शाखाओं जैसे व्यतिरेकी-विश्लेषण, समाज-भाषा विज्ञान, प्रतीक-सिद्धांत और शैली-विज्ञान ने अनुवाद प्रक्रिया को सैद्धांतिक और व्यावहारिक दृष्टि से व्यापक बनाया है। अनुवाद अध्ययन का अनुप्रयुक्त पक्ष समाज-भाषा विज्ञान, शैली-विज्ञान और अर्थ-विज्ञान से जुड़ता जा रहा है। अनुवाद में व्यापकता, भाषा प्रकार्यों को महत्व मिलने के कारण आयी है, क्योंकि आज भाषा के व्यवहारगत प्रकार्यों को अधिक महत्व दिया जा रहा है। अधिकांश क्षेत्र व्यावसायिक हो चुके हैं, और अनुवाद कार्य उन व्यवसायों को विकसित करने का माध्यम बन चुका है।

यह सत्य है कि अनुवाद का व्यवसाय साहित्यिक अनुवाद से प्रारंभ हुआ। यह प्रक्रिया अमेरीका, यूरोप में बहुत तेजी से विकसित हुई। इन देशों का साहित्य जब मूल रूप में लाखों लोगों तक पहुँचता है तो उसका अन्य भाषाओं में तुरंत अनुवाद कर उसकी मार्केटिंग की जाती है। भारत में भी अंग्रेजी का लोकप्रिय साहित्य हिंदी भाषा में अनूदित होकर फैलने लगा है। तस्लीमा नसरीन, विक्रम सेठ, खुशवंत सिंह, शोभा अरुंधती रॉय, चेतन भगत और अन्य लोकप्रिय लेखकों की अंग्रेजी कृतियाँ, हिंदी में अनूदित होकर प्रकाशित हुई हैं और इन्होंने अच्छा व्यवसाय किया है।

बड़े प्रकाशक अनेक कृतियों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करवा कर इन्हें विभिन्न वर्ग के पाठकों तक पहुँचा रहे हैं और अपना व्यवसाय बढ़ा रहे हैं। पत्र-पत्रिकाओं के बहुभाषी संस्करण निकाले जाते हैं। इंडिया टुडे, ब्लिट्ज, रीडर्स डाइजेस्ट मूल रूप से अंग्रेजी में छपते हैं। परंतु अब इन्हें हिंदी में भी छापा जाने लगा है। हिंदी और अंग्रेजी के समाचार पत्र एक साथ बड़े-बड़े शहरों से निकल रहे हैं। बड़े समाचार पत्रों की अधिकांश सामग्री अंग्रेजी में उपलब्ध होती है, जिसका तुरंत हिंदी में अनुवाद कर छापा जाता है। शेयर बाजार की खबरें, नये उत्पादों की जानकारी और व्यवसाय जगत की हलचलों से संबंधित पाठ्य सामग्री पहले अंग्रेजी में तैयार की जाती है। फिर उसका भारतीय भाषाओं में अनुवाद कर उपभोक्ता समुदाय तक पहुँचाया जाता है। अनुवाद के माध्यम से जन जागरण का काम किया जा रहा है। समाज-कल्याण, और जन-कल्याण की योजनाएँ जन-जन तक पहुँच रही हैं। विश्व भर में सामाजिक-सांस्कृतिक साहित्यिक दृष्टिकोण, राजनीतिक उथल-पुथल प्रतिक्षण हम तक अनुवाद के माध्यम से ही पहुँच रहे हैं।

जार्ज स्टीनर अनुवाद के महत्व को स्वीकार करते हुए कहते हैं कि 'अनुवाद के कारण ही हम मानव की उस आधारभूत सार्वभौमिक, वंशजीय, ऐतिहासिक तथा सामाजिक एकता को अनुभव करते हैं, जो भाषाओं के बाह्य भेद के बावजूद मानवीय भाषा के

प्रत्येक मुहावरे की तह में निहित है। अनुवाद कर्म का आशय है कि दो भाषाओं के बाह्य अंतरों की तह में प्रवेश कर मानवीय अस्तित्व के समान तत्त्वों को प्रकाश में लाए।'[2]

भाषा विकास में अनुवाद की भूमिका:

भाषा विकास में अनुवाद की अहम भूमिका रही है। जब किसी भाषा को ऐसे व्यवहार क्षेत्रों में प्रयुक्त होने का अवसर मिलता है, जिसमें पहले उसका प्रयोग नहीं होता था, तब उसे विषयवस्तु और अभिव्यक्ति पद्धति दोनों दृष्टियों से विकसित करने की आवश्यकता होती है। फलस्वरूप विषयवस्तु की परिधि के विस्तार के साथ भाषा में अभिव्यक्ति कोश का क्षेत्र भी विस्तृत होता है। अनेक नये शब्द गढ़े जाते हैं, नये सह-प्रयोग विकसित होने लगते हैं। संकर शब्दावली प्रयोग में आने लगती है और भाषा का एक नवीन रूप विकसित होने लगता है। आधुनिक मीडिया और प्रशासनिक हिंदी इसके अच्छे उदाहरण कहे जा सकते हैं।

जनसंचार माध्यमों में अनुवादक ऐसी भाषा का प्रयोग करता है, जो स्पष्ट, सरल, स्वाभाविक हो और जनमानस के नजदीक हो तथा उसे प्रभावित करे। इस दिशा में न्यूमार्क के सिद्धांत की चर्चा करनी अपेक्षित होगी। उन्होंने अनुवाद प्रणाली के दो पक्ष निर्धारित किये, अर्थ-केंद्रित अनुवाद प्रणाली और संप्रेषण-केंद्रित अनुवाद प्रणाली। संप्रेषण-केंद्रित अनुवाद प्रणाली ही जनसंचार माध्यमों के लिए उपयुक्त है। क्योंकि अनुवादक मूलपाठ में सुधार ला सकता है, अभिव्यक्ति को अधिक आकर्षक बना सकता है। वाक्य विन्यास की जटिलता, दुर्बोधता आदि का परिहार कर सकता है। भाषा प्रयोग की असामान्यताओं का उपचार कर सहज भाषा के संदेश की पुनरावृत्ति कर सकता है। इसलिए वाक्य प्रधान लेखन के लिए संप्रेषण केंद्रित अनुवाद उपयुक्त है।[3]

परंतु दर्शन, धर्म, राजनीति आदि के लिए अर्थ केंद्रित अनुवाद प्रणाली उपयुक्त रहती है, जिसमें भाषा उतनी ही महत्वपूर्ण होती है, जितना कथ्य। जनसंचार की भाषा में सुबोधता, लचीलापन होता है, जो विषय क्षेत्र को विशिष्टता प्रदान करता है। जनसंचार माध्यमों द्वारा सूचनाएँ प्रत्येक वर्ग के लोगों तक पहुँचती हैं। सूचना संप्रेषण पाठकों एवं दर्शकों की बौद्धिक क्षमता के अनुकूल हो, इसलिए जनसंचार भाषा को सरल और सर्वग्राहय बनाया जाता है। अनुवाद द्वारा जहाँ भाषा का संर्वधन होता है, वहीं ज्ञान का प्रसार व संस्कृति का संवहन भी होता है।

भाषा का सीधा संवंध मानव मन, मानव जीवन और समाज से होता है। भाषा का संबंध यदि एक ओर मन की आंतरिक स्थिति से है तो दूसरी ओर समाज की संचार व्यवस्था से भी है। परिणामस्वरूप अनुवाद सामाजिक संप्रेषण और प्रयोक्ता सापेक्ष बनता जा रहा है। जैसे-जैसे समाज का व्यापक वर्ग अनूदित पाठ का जाने-अनजाने उपभोक्ता बनता है, वैसे-वैसे अनुवाद की मंतव्य केंद्रित दृष्टि अभिव्यक्ति की सटीकता, प्रभावशीलता और लक्ष्य भाषा की सृजनात्मक शक्ति पर केंद्रित होने लगती है। इस प्रकार समाज और भाषा, ज्ञान के एक विशेष क्षेत्र का प्रतिपादन करते हैं।

जनसंचार माध्यमों में अनुवाद:

समाचार पत्र, रेडियो और टेलीविजन ये तीनों जनसंचार के माध्यम अनुवाद की अनिवार्यता से जुड़े हुए हैं। समाचार पत्रों में विज्ञापन, अर्थव्यवस्था, संपादकीय, फिल्म समीक्षा, खेलकूद सभी विषयों की अपनी भाषा है। इनमें तकनीकी शब्दों का प्रयोग विषय विशेष के अनुसार होता है। समाचार पत्रों में अनुवादक की भाषा क्षमता की अहम भूमिका रहती है। विशिष्ट संदर्भ के अनुसार शब्द चयन करना और जटिल वाक्य संरचना से बचना, अनुवादक का गुण माना जाता है। समाचार पत्र, पत्रिकाएँ लिखित भाषा ही नहीं, बल्कि (फोटो, चित्र के माध्यम) उच्चरित भाषा के तत्वों को साथ लेकर चलते हैं। साक्षात्कार, विज्ञापन, समाचारों में जो बोलचाल का प्रवाह नजर आता है, वह उच्चरित भाषा को लिखित भाषा में समाहित करने से आता है।

निस्संदेह टेलीविजन और रेडियो की उच्चरित अभिव्यक्ति का आधार लिखित भाषा ही होती है, क्योंकि लिखित सामग्री को ही मौखिक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। रेडियो और टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले विज्ञापन भी मौखिक भाषा की प्रवृत्तियों को ध्यान में रखकर बनाये जाते हैं। उनमें अंग संचालन और शारीरिक प्रतिक्रिया भी भाषा के अनुरूप होती है। संचार माध्यमों में Webdunia.Converter.UI.Util.Chunk रेडियो में हिंदी में प्रस्तुत किये जाने वाले समाचारों को अंग्रेजी में भी पढ़ा जाता है। टेलीविजन में लिखित और मौखिक भाषा को दृश्यों से जोड़ा जाता है।

यदि किसी मंत्री ने हिंदी में भाषण दिया है या हिंदी में साक्षात्कार किया है तो अंग्रेजी समाचारों में उच्चरित अंशों को भाषण के साथ अंग्रेजी में अनूदित कर स्क्रीन पर दिखाया जाता है। संचार माध्यमों में पाठ की संप्रेषणीयता, स्वीकार्यता और विषयनुकूलता महत्वपूर्ण मुद्दे हैं। टी वी, रेडियो, समाचार पत्रों में अनुवाद पाठकों एवं दर्शकों को ध्यान में रखकर किया जाता है। इसलिए ऐसी शैली का प्रयोग किया जाता है, जो बोधगम्य हो और सर्वमान्य हो।

समाचार पत्र और अनुवाद:

समाचार पत्रों में प्रयुक्त होने वाली भाषा में समय के अनुसार काफी परिवर्तन आया है। सूचना और प्रौद्योगिकी के कारण शब्दकोश में तो वृद्धि हुई ही है, इससे संबधित शब्दों का प्रयोग भी समाचार पत्रों में आम होने लगा है। जैसे:

मूलपाठ - The basic rate of mobile to mobile call has been increased.

अनूदित पाठ - मोबाइल से मोबाइल पर की जाने वाली कॉल का बेसिक रेट बढ़ा दिया गया है।

मूलपाठ : Reliance hiked pre-paid call rates by 33%.

अनूदित पाठ: रिलांयस ने **33** प्रतिशत मंहगी कीं प्रीपेड कॉल दरें।

समाचार पत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी से संबधित शब्दावली, जैसे: लैपटॉप, मोबाइल, फोटोशॉप, मेल आई डी, फैक्स, इंटरनेट, अपलोडिंग, प्रीपेड कॉल, पोस्ट कॉल, आनलाईन ट्रॉजेक्शन, ई-मेल, वेबसाइट का प्रयोग बिना किसी अनुवाद के किया जाता है। वैसे भी समाचार पत्रों में हिंग्लिश भाषा के प्रयोग की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। जैसे,

मूलपाठ : Pending cases will be disposed off very soon

अनूदित पाठ : पेंडिंग केसों को जल्द लगेंगे पंख।

अनुवाद सिद्धांत के अनुसार कोई भी लक्ष्यपाठ, मूलपाठ के समतुल्य नहीं हो सकता। अनुवादक को अनुवाद करते हुए कई बार कुछ छोड़ना और कुछ जोड़ना पड़ता है, परंतु लेखक के संदेश व मंतव्य को बनाये रखना पड़ता है। कई बार विभिन्न विकल्पों में से सटीक विकल्प ढूँढना पड़ता है। सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक संदर्भो के अनुसार शब्दों का चयन करना पड़ता है और उनकी व्याख्या करनी पड़ती है। समाचार पत्रों में शब्दों व वाक्यों को साधारण क्रम में प्रस्तुत किया जाता है। जैसे:

मूलपाठ : CBI questioned former Railway Minister in railway bribery scam.

अनुवाद : रेल घूस कांड में सी बी आई ने पूर्व रेलमंत्री से पूछताछ की।

टी वी और अनुवाद:

टेलीविजन में दो तरह के अनुवाद महत्वपूर्ण हैं, ध्वन्यांतरण और उपशीर्षक लेखन। टेलीविजन, समाचार शीर्षकों के लिखित और उच्चरित दोनों रूप प्रस्तुत करता है। डी डी न्यूज चैनल पर अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषाओं में शीर्षकों के स्क्रॉल चलते रहते हैं। समाचारों को भी हिंदी और अंग्रेजी में लगातार प्रस्तुत किया जाता है। अंग्रेजी-हिंदी खबरों में साउंड बाइट को अनुवाद कर स्क्रीन पर फ्लैश किया जाता है। दूरदर्शन समाचारों में उच्चरित संप्रेषणीयता और दृश्य दोनों पर ध्यान दिया जाता है। किसी विदेशी नेता का भाषण अगर उसकी अपनी भाषा में है तो उसे ध्वन्यांतरण द्वारा अंग्रेजी में प्रस्तुत किया जाता है। जो बात शब्दों में कही जाती है, उसे तथ्यात्मक बनाने के लिए दृश्यों का सहारा लिया जाता है।[5]

छोटे व सरल वाक्यों का प्रयोग किया जाता है, ताकि भाषा सहज, स्वाभाविक, स्पष्ट और बोधगम्य हो। जैसे,

मूलपाठ : Delhi University admission open today.

अनूदित पाठ: (क) आज से दिल्ली यूनिवर्सिटी में दाखिले शुरू।

(ख) डी यू में शुरू हो गई दाखिले की दौड़।

मूलपाठ : World Environment Day is being observed today.

अनूदित पाठ : (क) विश्व पर्यावरण दिवस आज।

(ख) आज विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जा रहा है।

मूलपाठ : India beat England by 7 wickets

अनूदित पाठ : भारत ने इंग्लैंड को सात विकटों से हराया

मूलपाठ : Gold import duty hiked

अनूदित पाठ : सोने पर आयात शुल्क बढ़ा।

खेलकूद के समाचारों की अपनी शब्दावली है और अधिकांश शब्द हिंदी में भी अंग्रेजी की तरह ही प्रयोग होते हैं, जैसे: टूर्नमिंट, वर्ल्ड कप चैंपियन, सेमी-फाइनल मैच, रन, फाइनल, वनडे, चैंपियंस ट्रॉफी, प्रीमियर लीग, स्पॉट-फिक्सिंग, कैंप, क्वार्टर फाइनल, टीम। इन शब्दों का अनुवाद नहीं किया जाता, हिंदी में भी इन शब्दों का इस्तेमाल यथावत कर लिया जाता है।

विज्ञापन और अनुवाद:

व्यवसाय के रूप में अनुवाद को कई गतिविधियों ने बढ़ावा दिया है। व्यापार जगत में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आने से प्रतिस्पर्धा बढ़ी है और विपणन की रणनीति में भी परिवर्तन आया है। विभिन्न वस्तुओं के विपणन हेतु प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में ढेरों विज्ञापन दिये जाते हैं, ताकि विभिन्न उत्पादों के बारे में उपभोक्ताओं को जानकारी प्राप्त हो सके। विज्ञापन की भाषा, विज्ञापित वस्तु के अनुसार अपने को ढालती है। विज्ञापनों में हिंदी-अंग्रेजी कोड मिश्रण का प्रयोग किया जाता है, ताकि अधिक से अधिक लोगों पर इसका प्रभाव पड़े। टेलीविजन के विज्ञापन में उत्पाद के सुंदर चित्रों को गीत, संगीत, लय, ताल में बांध कर प्रस्तुत किया जाता है[6], जो लंबे समय तक दर्शकों एवं श्रोताओं के दिल और दिमाग पर छाये रहता है। जैसे-

(क) मैंगो फ्रूटी, फ्रेश एण्ड जूसी,
दिमाग रहे कूल, गर्मी जाओ भूल

(ख) Clear for real
अब हुआ न सचमुच साफ
Your Natural Choice
आपकी स्वाभाविक पसंद
Trust (Godrej)
भरोसा पूरा भरोसा
Adds good taste gives good health

वढ़िया स्वाद वढ़िया स्वास्थ्य

एक ही विज्ञापन में अंग्रेजी और हिंदी दोनों का अनुवाद एक साथ मिलता है, ताकि विज्ञापन अधिक से अधिक प्रभावी हो सके। विज्ञापन अनुवादक का यह दायित्व होता है कि वह जोड़ने और छोड़ने के चक्कर में मूल रूप के संदेश से दूर न हटे। मूल संदेश व लक्ष्यार्थ को ध्यान में रखकर अनुवाद किया जाना चाहिए।[7] निम्नलिखित विज्ञापन में अभिधात्मक और लक्ष्यार्थ संदेश इस प्रकार है:

You just cant beat bajaj

आप ऐसे ही बजाज को परास्त नहीं कर सकते।

जबकि लक्ष्यार्थ संदेश यह है: 'हर दौड़ में बेजोड़ बजाज'

संकेतों के प्रतिस्थापन से विज्ञापन का अनुवाद नहीं किया जा सकता। इसे भाव के धरातल पर सबसे पहले अनुभूत करना होगा, फिर लक्ष्य भाषा में उसका लक्ष्यार्थ संप्रेषित करना होगा।

टेलीविजन पर प्रसारित हिंदी विज्ञापन अब यह भी सिद्ध कर रहे हैं कि अंग्रेजी में प्रसारित विज्ञापन उन वस्तुओं के होते हैं, जिनकी खपत अमीर वर्गों में होती है। विज्ञापन की भाषा एक अलग प्रयोग के परिदृश्य की माँग करती है। इसमें चयनित भाषा का लोचदार प्रयोग मिलता है।

विज्ञापनों में भाव अनुवाद और अनुसृजन के महत्व को नहीं भुलाया जा सकता, जैसे:

bank you can bank upon (आपके भरोसे का बैंक)

Double action Nikhar roj

दोहरा निखार रोज

Chick hair is thick hair

चिक है यानि थिक है

विज्ञापन में अंग्रेजी-हिंदी कोड मिश्रण की तरह ही लिप्यंतरण का प्रयोग भी अधिक होने लगा है। हिंदी शब्दों को रोमन लिपि में लिखने की प्रवृत्ति उपभोक्ताओं का ध्यान खींचने हेतु अपनाई जाती है।[8] जैसे,

Simphani
bharat ko rakkhe kool
Dil mange mor
Toofani thanda
Sab chale befikar

हिंदी भाषा के शैलीगत भेदों को विज्ञापन का सटीक प्रयोग बांध कर रखता है। विज्ञापनों का अनुवाद शाब्दिक नहीं बल्कि अनुसृजनात्मक होता है। कभी-कभी अनुवाद मूल से भी अधिक सर्जनात्मक, काव्यात्मक और सुंदर होता है, जो अनूदित विज्ञापन को रोचक, प्रभावात्मक बनाता है।[9]

संक्षेप में जब एक भाषा की रचनाएँ अनूदित रूप में लक्ष्य भाषा के संसार में प्रवेश करती हैं तो उस के साथ नई अवधारणाएँ, नयी भंगिमाएँ और मौलिक प्रयोग की पूरी दुनिया स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में आ जाती हैं। दो भाषाओं के अपने सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश होते हैं, जो एक समान नहीं होते। भाषा की विशिष्टता को ध्यान में रखकर अनुवाद किया जाना चाहिए, अन्यथा स्रोत और लक्ष्य भाषा की संप्रेषणीयता और बोधगम्यता पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।

जनसंचार माध्यमों की भाषा साहित्य की भाषा से बिल्कुल भिन्न एवं सरल, स्पष्ट और विषय के अनुकूल होती है। इसलिए अनुवादक को जनसंचार माध्यमों को ध्यान में रखकर अनुवाद करना चाहिए, ताकि लोगों तक सटीक संदेश सही अर्थों में पहुँच सके।

- अध्यक्ष, हिंदी विभाग
उपाधि महाविद्यालय, एवं
सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति,
इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार
पीलीभीत-262001, उत्तर प्रदेश
मोबाइल: +91 9837960530
drpranav_pbt23@rediffmail.com

संदर्भ ग्रंथ:

1. विजय कुलश्रेष्ठ व राम प्रकाश कुलश्रेष्ठ, 2005, प्रयोजनमूलक हिंदी, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, पृष्ठ सं.44,
2. विजय कुलश्रेष्ठ व राम प्रकाश कुलश्रेष्ठ, 2005, प्रयोजनमूलक हिंदी, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, पृष्ठ सं.448
3. कृष्ण कुमार गोस्वामी, 2005, भाषा के विविध रूप और अनुवाद, नई दिल्ली; वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ सं.125
4. कृष्ण कुमार गोस्वामी 2007, आधुनिक हिंदी: विविध आयाम; आलेख प्रकाशन, पृष्ठ सं.256
5. कृष्ण कुमार गोस्वामी, 2008 अनुवाद विज्ञान की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ सं.236
6. कैलाशचंद्र भाटिया, 1985 अनुवाद कला: सिद्धांत और प्रयोग: दिल्ली: तक्षशिला।
7. सूरजभान सिंह, 2003, अंग्रेजी-हिंदी अनुवाद व्याकरण; नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन
8. विजय राघव रेड्डी, 1986 व्यतिरेकी भाषा विज्ञान; आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर
9. दलीप कुमार, 2011 अनुवाद की व्यापक संकल्पना, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

हिंदी में व्यंग्य रचना एवं उसकी विकास यात्रा

- श्री आनंद कुमार -

'व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार कराता है,
जीवन की आलोचना करता है,
विसंगतियों, मिथ्याचारों और
पाखंडों का पर्दाफाश करता है।'

- हरिशंकर परसाई

आजादी का अमृत महोत्सव

सर्वप्रथम, हम उस अमृत पल की बात करते हैं, जिसका महोत्सव हम इस साल कई दिनों से मना रहे हैं। जी हाँ, हम मना रहे हैं अपने देश की आजादी का अमृत महोत्सव। यह अवसर हमारे लिए सिर्फ एक महोत्सव मात्र नहीं है, एक अनवरत यात्रा है 75 साल से विकास की ओर बढ़ने की, सबके साथ चलने की, अपनी संस्कृति को अक्षुण्ण रखने की और अपनों के बलिदान और योगदान को याद करने की। भारत ने विगत 75 वर्षों से सफलता के कई आयाम हासिल किये हैं। अपितु हर क्षेत्र में विश्व में अपना लोहा मनवाया है। जिस आजादी के लिए हमारे पूर्वजों ने कई यातनाएँ सहीं, कुर्बानियाँ दीं, आज उसी पावन पर्व का 75 वाँ साल है।

हम सब जानते हैं कि हमारी हिंदी भाषा एवं साहित्य भी देश के विकास के साथ कदम मिला कर चला है। देश के स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आजाद भारत के भविष्य निर्माण में भी हमेशा समुचित योगदान दिया है। हिंदी के साहित्यकारों ने अपने व्यंग्य बाणों से अंग्रेजों पर निरंतर प्रहार किया। साथ ही स्वतंत्रता के बाद भ्रष्टाचार, परिवारवाद जैसे विषयों पर व्यंग्य के द्वारा जनता को जागृत करते रहे हैं। हिंदी भाषा एवं साहित्य ने बड़ी परिपक्वता से भारत की अन्य भाषाओं के साथ तालमेल बनाकर देश की एकता को सुदृढ़ बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

व्यंग्य क्या है?

यदि हिंदी व्याकरण से इसे परिभाषित करें तो व्यंग्य शब्द की उत्पत्ति 'अज्ज' धातु में 'वि' उपसर्ग व 'ण्यत' प्रत्यय लगाने से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है ताना कसना, आलोचना करना। आप कह सकते हैं कि 'व्यंग्य एक ऐसी साहित्यिक अभिव्यक्ति अथवा रचना है, जिसके द्वारा व्यक्ति या समाज की कुरीतियों, विसंगितियों और विडंबनाओं या उसके किसी पहलू को रोचक तथा हास्यास्पद ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है।

वर्तमान समाज में व्याप्त अव्यवस्थाओं को देखकर जब हम सबका मन दु:खी हो जाता है, चाहे वह अव्यवस्था सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक या धार्मिक हो, मन इनका प्रतिकार करना चाहता है। परंतु किन्हीं व्यक्तिगत कारणों से हम इनका प्रतिकार नहीं कर पाते हैं और यों भावनाएँ मन के किसी कोने में संचित होने लगती हैं। व्यंग्यकार इन्हीं संचित भावनाओं को व्यंग्य के माध्यम से समाज में लाने का प्रयास करता है।

व्यंग्य की परिभाषा

भाषा की जिस विधा में समाज में व्याप्त राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक अथवा व्यक्तिगत विसंगतियों की शाब्दिक व्यंजना हो, वही व्यंग्य है। व्यंग्य साहित्यकारों का वह अस्त्र है, जिसके माध्यम से वह समस्त कटुताओं को काटने का प्रयास करता है। हँसी भी आए और लक्षित के मर्मस्थल पर चोट भी पहुँचे, यह व्यंग्य का सबसे बड़ा कर्म है।

यूँ कहें तो व्यंग्य एक प्रकार का शीशा है, जिसमें देखने वाले को अपने चेहरे को छोड़ प्रत्येक का चेहरा दिखाई देता है। यही कारण है कि विश्व में व्यंग्य का सम्मान किया जाता है। भारतीय विद्वानों की तरह पाश्चात्य विद्वानों ने भी व्यंग्य को अनेक प्रकार से परिभाषित किया है, जिनसे व्यंग्य को समझने में सहायता मिलती है। मेरीडिथ के अनुसार 'व्यंग्यकार नैतिकता का ठेकेदार होता है। बहुधा वह समाज की गंदगी की सफाई करने वाला होता है। उसका कार्य सामाजिक विकृतियों की गंदगी को साफ करना होता है।' ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसार 'व्यंग्य वह रचना है, जिसमें प्रचलित दोषों अथवा मूर्खताओं का कभी कभी कुछ अतिरंजना के साथ मजाक उड़ाया जाता है।'

व्यंग्य साहित्य की ऐसी विधा है, जिस पर उपहास, मजाक और आलोचना का प्रभाव रहता है। यूरोप में डिवाइन कॉमेडी दांते की लैटिन में लिखी किताब को मध्यकालीन व्यंग्य का महत्वपूर्ण कार्य माना जाता है, जिसमें तत्कालीन व्यवस्था का मजाक उड़ाया गया था। व्यंग्य को मुहावरे में व्यंग्यबाण कहा गया है। हिंदी में हरिशंकर परसाई और श्रीलाल शुक्ल इस विधा के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। आज हिंदी साहित्य जगत में व्यंग्य एक विशाल वृक्ष बन चुका है, जिसके पालन-पोषण की शुरुआत भारतेंदु युग में हुआ था।

हास्य और व्यंग्य के अंतर

हास्य साहित्य की वह विधा है, जिससे हँसी, विनोद या आमोद की उत्पत्ति होती है। हास्य कभी भी आक्रामक या घातक नहीं होता है। व्यंग्य, विकृत अंग से उद्भूत है, जिसका वास्तविक अर्थ उसके वास्तविक मंतव्य से अलग होता है और स्वभाव से अधिक आक्रामक होता है। इससे यदि क्षणिक आमोद भी हो तो

भी निशाना कहीं और होता है। लेकिन हास्य से समाज का तनाव कम होता है। हास्य और व्यंग्य दोनों हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग रहे हैं, जो समाज की प्राणवायु का काम करते हैं।

हिंदी साहित्य में व्यंग्य की शुरुआत

भारतीय संस्कृति में व्यंग्य का आदि काल से नाता रहा है, जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण कबीर के दोहे में मिलता है। उन्होंने अपने दोहों में धार्मिक कुरीतियों पर करारा प्रहार किया है। उनके दोहे तत्कालीन धार्मिक आडंबरों एवं अनुयायियों पर गहरी चोट करते हैं। उन्होंने अपने दोहों के माध्यम से समाज में जाति, धर्म की रूढ़ियों और सामाजिक असमानता को दूर करने का अथक प्रयास किया। जैसे,

'ऊंचे कुल का जनमिया करनी ऊँची न होय।
सुवर्ण कलश सुरा भरा, साधू निंदा होय।'

धार्मिक आडंबर पर उन्होंने जो व्यंग्य कसा है, वह वर्तमान समाज के लिए भी बहुत प्रासंगिक है, जैसे -

'माला फेरत जुग भया? फिरे न मन का फेर।
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।'

कबीर ने अपने दोहों के माध्यम से लोगों को भाईचारे की भावना के साथ मिलजुल कर रहने की शिक्षा दी। उनका यह दोहा इस बात का एक ज्वलंत उदाहरण है -

'पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।'

समाज में जाति-पाँति की जो विषमता व्याप्त है, उस पर व्यंग्य कसते हुए उन्होंने लिखा -

'हिंदू कहे मोहिं राम पियरा, तुर्क कहे रहमाना।
आपस में दोउ लड़ी लड़ी मुए, मरम न कोउ जाना।'

व्यंग्य और भारतेन्दु युग

हिंदी साहित्य जगत में भारतेंदु से ही हिंदी गद्य व्यंग्य का शुभारंभ हुआ था। समकालीन व्यंग्य साहित्य को ठोस नींव भारतेंदु युग के व्यंग्यकारों ने ही प्रदान किया। इस युग के प्रमुख व्यंग्यकारों में भारतेंदु हरिश्चंद्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी आदि का नाम उल्लेखनीय है। भारतेंदु युग में प्रहसन और स्तोत्र शैली में सबसे अधिक व्यंग्य लिखे गये थे। व्यंग्य निबंध के विकास की दृष्टि से भी भारतेंदु युग का महत्वपूर्ण स्थान है।

भारतेंदु की प्रमुख व्यंग्य रचनाओं में 'बंदर-सभा', 'बकरी का विलाप', 'अंधेर नगरी चौपट राजा' आदि उल्लेखनीय हैं। भारतेंदु ने अपनी रचनाओं में एक ओर जहाँ सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई, वहीं वे अंग्रेजी शासन की मुखालफत में भी पुरजोर ढंग से मुखर रहे। उन्होंने लिखा -

'भीतर भीतर सब रस चूसै, हँसि हँसि कै तन मन धन मूसै।
बातन मैं अति तेज, क्यों सखि सज्जन, नहिं अँगरेज।'

लोक-प्रचलित पहेलियों का एक काव्य-रूप है मुकरी। भारतेंदु जी की मुकरी लोक जीवन में खूब प्रचलित हुई। उनकी अनेक पंक्तियाँ तो कहावतों, मुहावरों की तरह लोक जीवन में प्रचलित हो गईं। सृजन में ताजे भाव, भाषा, शैली के कारण वह हिंदी नवजागरण के पुरोधा बने। हिंदी भाषा की उन्नति उनका मूल मंत्र था, जैसे -

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय को शूल'।

उन्होंने अंग्रेजों के काले कारनामों को आम जनता के सामने लाने के लिए अपनी मुकरियों में व्यंग्य का सफल प्रयोग किया। उनकी रचना अंधेर नगरी मुख्यतया एक व्यंग्य नाटिका है। भारतेंदु की रचनाओं का व्यंग्य कालजयी और प्रभावपूर्ण इसलिए हैं, क्योंकि व्यवस्था की त्रुटियों और विसंगतियों पर तीखे किंतु शिष्ट तेवर में प्रहार करता है, जिसे भारतेंदु युग के व्यंग्यकारों ने शक्ति प्रदान की।

मुंशी प्रेमचंद

व्यंग्य की बात हो और मुंशी प्रेमचंद्र की रचनाओं का जिक्र न हो, यह असंभव है। युगीन समस्याओं पर व्यंग्य करने की प्रवृत्ति प्रेमचंद की रचनाओं में बहुतायत मिलती है। उन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों में आम आदमी और कृषक वर्ग की दैनंदिन कठिनाइयों पर करारा व्यंग्य किया है। प्रेमचंद अजीवन सामाजिक कुरीतियों जैसे भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता, गरीबी, सूदखोरी इत्यादि विषयों को आधार बनाकर लिखते रहे।

स्वतंत्रता आंदोलन और व्यंग्य

आजादी के आंदोलन में हिंदी साहित्य के पुरोधा व्यंग्य बाण का सहारा लेकर अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों पर लगातार हमला करते रहे। स्वतंत्रता आंदोलन में व्यंग्य के सहारे जनता को जागरूक करने हेतु कई लेख छापे गये एवं अनन्य कालजयी रचनाएँ रची गईं। मैथिलीशरण गुप्ता जी की ये पंक्तियाँ इस बात के गवाह हैं -

'जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है,
वह नर नहीं, नर-पशु निरा है और मृतक समान है।'

भारतेंदु के बाद द्विवेदी युग में भी अंग्रेजों के शोषण, सामाजिक कुरीतियों, धर्माडंबरों, पश्चिम के अंधानुकरण और फैशन-परस्ती पर हास्य-व्यंग्य से प्रहार करने वाली अनेक कविताएँ लिखी गयीं। महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रताप नारायण मिश्र और बालमुकुंद गुप्त द्विवेदी युग के प्रमुख व्यंग्यकार हैं।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

प्रेमचंद के बाद के रचनाकारों में निराला के साहित्य में यह बात देखी जा सकती है। इनकी 'कुकुरमुत्ता' में व्यंग्य की अभिव्यक्ति विद्रूपता फैलाने वाले समाज के खिलाफ चुनौती के रूप में हुई है। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कविताएँ हिंदी साहित्य के क्षेत्र में विशेष स्थान रखती हैं। निराला जी हिंदी साहित्य के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। पर व्यंग्य में नये युग की शुरुआत भी निराला की देन है। निराला जी की व्यंग्य रचनाओं में 'कुकुरमुत्ता', 'नये पत्ते', 'गजानंद जी', 'बिल्लेसुर बकरिहा' इत्यादि प्रमुख हैं।

हरिशंकर परसाई

हरिशंकर परसाई हिंदी के प्रसिद्ध व्यंग्यकारों में से थे। वे हिंदी के पहले रचनाकार हैं, जिन्होंने व्यंग्य को विधा का दर्जा दिलाया और उसे हल्के-फुल्के मनोरंजन की परंपरागत परिधि से उबारकर समाज के व्यापक प्रश्नों से जोड़ा। उनकी व्यंग्य रचनाएँ हमारे मन में गुदगुदी ही पैदा नहीं करतीं, बल्कि हमें उन सामाजिक वास्तविकताओं से रूबरू कराती हैं, जिनसे राजनैतिक व्यवस्था में पिसते मध्यमवर्गीय मन की सच्चाइयाँ उजागर होती हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में विवेक और विज्ञान सम्मत दृष्टि को सकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। उनकी भाषा शैली में खास किस्म का अपनापान महसूस होता है और पाठक को ऐसा लगता है कि लेखक सामने ही बैठा है।

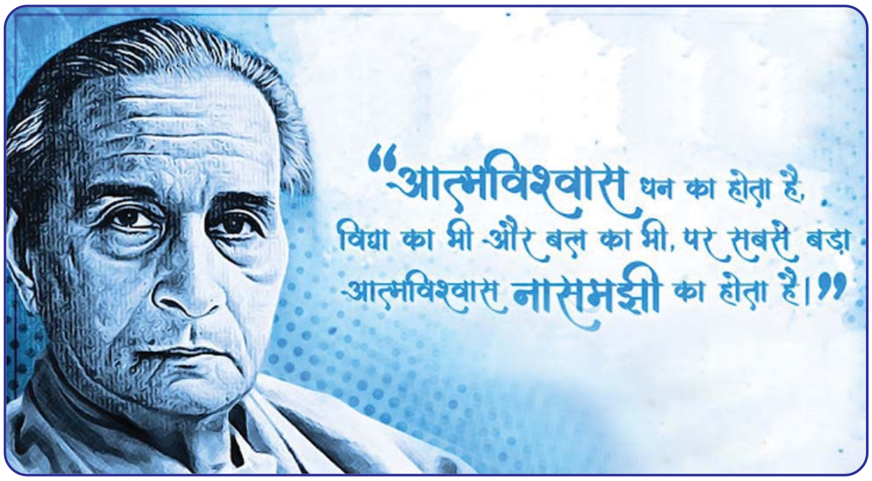

उनकी रचनाओं में 'हँसते हैं रोते हैं', 'जैसे उनके दिन फिरे', 'भोलाराम का जीव', उपन्यास 'रानी नागफनी की कहानी', 'तट की खोज', 'ज्वाला और जल', संस्मरण 'तिरछी रेखाएँ', 'तब की बात और थी', 'भूत के पाँव पीछे', 'बेईमानी की परत', 'अपनी अपनी बीमारी', 'प्रेमचंद के फटे जूते', 'माटी कहे कुम्हार से', 'काग भगोड़ा', 'आवारा भीड़ के खतरे', 'ऐसा भी सोच जाता है', 'वैष्णव की फिसलन', 'पगडंडियों का जमाना', 'शिकायत मुझे भी है', 'उखड़े खंभे', 'सदाचार का तावीज', 'विकलांग श्रद्धा का दौर', 'तुलसी दास चंदन घिसैं', 'हम एक उम्र से वाकिफ हैं', 'बस की यात्रा', 'परसाई रचनावली' इत्यादि प्रमुख हैं। परसाई जी 'विकलांग श्रद्धा का दौर के लिए' साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किये गये।

परसाई ही एकमात्र ऐसे लेखक हैं, जिन्होंने समाज के प्रत्येक अंग, प्रत्येक वर्ग का बड़ी बारीकी से अध्ययन करते हुए समाज की कमजोरियों, उसमें व्याप्त बुराइयों पर अपने व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से बड़ा ही सबल प्रहार किया। यहाँ तक कि स्वयं को भी उन्होंने उसी समाज का अंग माना और अपने को उस परिधि से बाहर नहीं रखा और आत्मालोचन का नश्तर चलाकर सच्चे लेखक का परिचय दिया। परसाई जी की सारी रचना प्रक्रिया और उनकी विचार-प्रक्रिया उस समाज के कटु यथार्थ के समनांतर चलती है, जिस समाज में अवसरवादी राजनीति है, अन्याय है, प्रजातंत्र अपनी परिभाषा खो चुका है, भ्रष्टाचार रक्तवीज बन गया है। ऐसे कठिन समय में परसाई ने अपने व्यंग्य में एक ऐसा शिल्प विकसित किया, जिसमें अभिव्यक्ति की सादगी, संवेदना की तीव्रता और भोगे हुए यथार्थ की तस्वीरें साफ उभरकर प्रस्फुटित होती हैं।

काका हाथरसी

काका हाथरसी भारत के प्रसिद्ध हिंदी हास्य कवि थे। उन्हें हिंदी हास्य-व्यंग्य कविताओं का पर्याय माना जाता है। उनकी रचनाएँ समाज में व्याप्त दोषों, कुरीतियों, भ्रष्टाचार और राजनीतिक कुशासन की ओर सबका ध्यान आकर्षित करती हैं। काका हाथरसी के मुख्य कविता संग्रह 'काका की फुलझड़ियाँ', 'काका के प्रहसन', 'लूटनीति मंथन करि', 'खिलखिलाहट', 'काका तरंग', 'जय बोलो बेईमान की', 'काका के व्यंग्य बाण' आदि हैं।

श्रीलाल शुक्ल

श्रीलाल शुक्ल को समकालीन कथा-साहित्य में उद्देश्यपूर्ण व्यंग्य लेखन के लिए विख्यात साहित्यकार माना जाता है। व्यंग्य पर आधारित उनकी पुस्तक 'अंगद का पाँव' काफी चर्चित हुआ। स्वतंत्र भारत के ग्रामीण जीवन की मूल्यहीनता को परत-दर-परत उघाड़ने वाले उपन्यास 'राग दरबारी' के लिये उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

आधुनिक भारत के व्यंग्यकार

सामाजिक मूल्यों के विघटन को केंद्र में रखकर समकालीन साहित्यिक परिदृश्य में व्यंग्य का लगातार सृजन हो रहा है। हिंदी साहित्य में 21 वीं सदी को व्यंग्य का स्वर्णिम युग कहा जाता है। अनगिनत रचनाकारों ने व्यंग्य को एक नये आयाम तक पहुँचाने में बहुमूल्य योगदान दिया है और अपनी लेखनी से व्यंग्य को नई ऊँचाई पर ले जाने के लिए अनवरत प्रयत्नशील हैं।

शरद जोशी के व्यंग्य संग्रह 'जीप पर सवार इल्लियाँ', 'पिछले दिनों', 'नावक के तीर', 'यथासमय', 'परिक्रमा', 'किसी बहाने', 'तिलिस्म', 'रहा किनारे बैठ' एवं 'दूसरी सतह पर आदमी' आदि हैं। शरद जोशी ने अपने लेखन का आरंभ व्यंग्य विधा से नहीं किया था। अपनी आलोचना से क्षुब्ध होकर आलोचक को करारा जवाब देने के लिये वे व्यंग्य लेखन के क्षेत्र में उतरे। शरद जोशी के व्यंग्यों में गजब की बौद्धिकता, संवेदनशीलता, विसंगतियों पर पैनी नजर के साथ गहन सामाजिक सरोकार और तीव्र दायित्व बोध हैं।

ठाकुर प्रसाद सिंह ने सामाजिक समस्याओं पर तीखे और गहरे व्यंग्य किये हैं। उनके पास लाक्षणिकता की शक्ति है। इस कारण उनके व्यंग्य बहुत पैने और दूरगामी होते हैं। बेढ़ब बनारसी के व्यंग्यों में हँसी और विनोद की भरपूर खुराक है। उनके व्यंग्य का मूल विषय राजनीति है। श्री नारायण चतुर्वेदी ने 'विनोद शर्मा के छद्म' नाम से व्यंग्य लिखे हैं। राजभवन की 'सिगरेटदानी' में उन्होंने बहुत सार्थक और परिष्कृत व्यंग्य लिखे हैं।

प्रोफेसर सुरेश आचार्य जी की गिनती श्रेष्ठ व्यंग्यकारों में होती है। 'पूँछ हिलाने की संस्कृति', 'उधर भी हैं, इधर भी हैं' तथा 'पोजीशन सालिड है' इनके प्रसिद्ध व्यंग्य-संग्रह हैं। इनके व्यंग्य भी कबीर की भांति गहन मानवीय संवेदना, समाज के प्रति तीव्र दायित्व-बोध, सामाजिक विसंगतियाँ और विद्रूप से उत्पन्न गहरे क्षोभ से जन्मे हैं। सुरेश आचार्य जी के पास बुंदेली बोली के वजनदार शब्दों से भरपूर ताकतवर भाषा है। सुरेश आचार्य के व्यंग्यों की भाषा अपने तीखेपन के कारण दोषी को घायल करने में समर्थ हैं।

खुशवंत सिंह ने व्यंग्य को नये तरीके से पेश किया। हालाँकि उनकी आलोचना भी की गई। वे एक प्रसिद्ध पत्रकार, लेखक, उपन्यासकार और इतिहासकार थे। सुशील सिद्धार्थ के पास कमाल की भाषा थी, जो समृद्ध भी है और बेहद पठनीय भी। 'नारद की चिंता' इसका सुंदर प्रमाण है।

दक्षिण भारत के रचनाकारों में डॉ सुरेश कुमार मिश्रा की 'उरतृप्त' सबसे बहुत प्रसिद्ध व्यंग्य रचना है। उनका 'एक तिनका इक्कावन आँखें' प्रसिद्ध व्यंग्य-संग्रह है। इसी में 'किताबों की अंतिम यात्रा' जैसी प्रसिद्ध व्यंग्य रचना भी शामिल है। डॉ सुरेश कुमार मिश्रा की 'उरतृप्त' के लिए तेलंगाना सरकार की हिंदी अकादमी ने उन्हें श्रेष्ठ नवयुवा रचनाकार सम्मान से सम्मानित किया।

समकालीन व्यंग्य रचनाकारों में सुरेश कांत, ज्ञान चतुर्वेदी, सुशील सिद्धार्थ, नरेंद्र कोहली, शंकर पुणतांबेकर, जवाहर चौधरी का नाम लिया जाता है। सुरेश कांत ने व्यंग्य-जगत को एक दर्जन से अधिक व्यंग्य-संकलनों के साथ-साथ 'ब से बैंक', 'अफसर गये विदेश' जैसे दो अद्भुत व्यंग्य-उपन्यास दिये हैं। नरेंद्र कोहली ने अपनी व्यंग्य रचनाओं में नये प्रयोगों पर विशेष ध्यान दिया है।

व्यंग्य को सामाजिक सतर्कता के हथियार के रूप में देखा जाता है। अन्य व्यंग्यकारों में डॉ सुरेश चंद्र खरे, के पी सक्सेना, माणिक वर्मा, यशवंत व्यास, सुभाष चंद्र, अरविंद तिवारी, अनूप मणि त्रिपाठी, डॉ संतोष त्रिवेदी, सुरजीत सिंह, निर्मल गुप्त, मलय जैन, शशिकांत सिंह शशि प्रमुख हैं। केशवचंद्र वर्मा, भीमसेन त्यागी, रवींद्रनाथ त्यागी और सूर्यबाला ने (या इलाही ये माजरा क्या है) व्यंग्य विधा को समृद्ध करने में अपना अमूल्य योगदान दिया है।

निष्कर्ष

व्यंग्य की विकास यात्रा हिंदी साहित्य में एक विशाल वट वृक्ष की तरह अपनी शाखाएँ फैलाते हुए आगे बढ़ रही है। समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, नैतिकता के गिरते स्तर, धर्म-द्वेष एवं पाखंड पर, जो समाज और देश को अंदर से कमजोर बना रहे हैं, व्यंग्यकार को और तीक्ष्ण बाण साधने की जरूरत है। समाज को आईना दिखाने के लिए व्यंग्य को भविष्य में और ज्यादा आक्रामक होना होगा। व्यंग्य रचनाकार सामाजिक माध्यमों के जरिये अपनी लेखनी को जन-जन तक पहुँचाने का काम कर रहे हैं, जिससे समाज, हास्य व्यंग्य के आनंद के साथ-साथ विभिन्न सामाजिक पहलुओं एवं सरकारी नीतियों के प्रति सजग भी हो रहा है। तो आइए, आजादी के अमृत महोत्सव के इस पावन अवसर पर व्यंग्य रचना की यह यात्रा समाज में अपेक्षित बदलाव लाये, जिससे सभी का जीवन अमृतमयी हो और भारत एक विकसित देश के रूप में अग्रसर हो।

'आजादी का अमृत महोत्सव,
हम सब को साथ मिलकर मनाना है।
जन जन की भागीदारी से
आत्मनिर्भर भारत बनाना है।'

- उप महाप्रबंधक (विपणन) एवं
वरिष्ठ शाखा प्रबंधक
शाखा विक्री कार्यालय
इंदौर-452001
मोबाइल: +91 9694011177

आजादी के अमृत महोत्सव पर पंडित सोहनलाल द्विवेदी का पुण्य स्मरण

- डॉ देवकीनंदन शर्मा -

'वंदना के इन स्वरों में, एक स्वर मेरा मिला दो।
वंदिनी माँ को न भूलो, राग में जब मत झूलो,
अर्चना के रत्नकण में, एक कण मेरा मिला दो।
जब हृदय का तार बोले, श्रृंखला के बंद खोले,
हो जहाँ बलि शीश अगणित,
एक शिर मेरा मिला दो।।'

इस पावन विनयी भावना और महान् बलिदानी कामना के साथ सरस्वती के वरदपुत्र पंडित सोहनलाल द्विवेदी जी ने सन् **1920** के आस-पास जब साहित्य-संसार में पदार्पण किया, तब देश में स्वतंत्रता आंदोलन का ज्वर उमड़ रहा था। परतंत्रता की जंजीरों में जकड़ा हिंदुस्तान स्वतंत्र होने के लिए छटपटा रहा था। सौभाग्यवश राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के रूप में उन्हें युगद्रष्टा, युगस्रष्टा, संरक्षक एवं मार्गदर्शक मिल गया था। गांधी जी द्वारा संचालित असहयोग, सत्याग्रह तथा स्वदेशी आंदोलन ने द्विवेदी जी को अपनी ओर आकृष्ट किया और देखते ही देखते वे गांधी जी के परमभक्त बन गये।

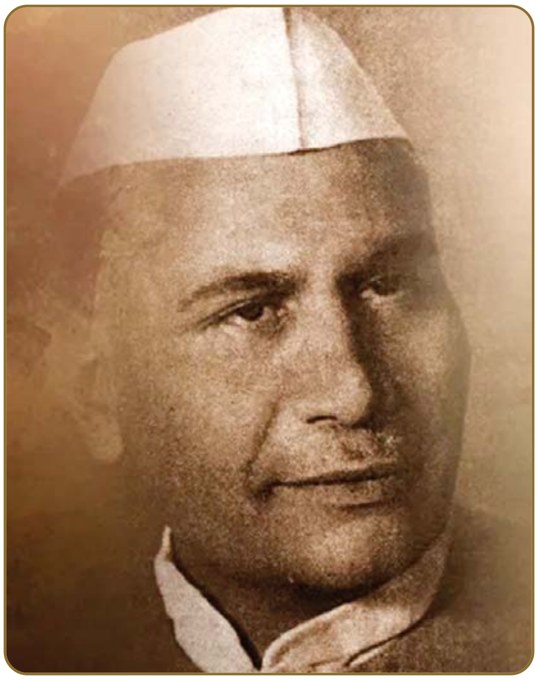

'चल पड़े जिधर दो डग, मग में, चल
पड़े कोटि पग उसी ओर,
पड़ गई जिधर भी एक दृष्टि,
पड़ गये कोटि दृग उसी ओर।'

इसी का अमर गान करते हुए द्विवेदी जी ने खादी के विचार धागों से बुनी, दांडी यात्रा के अदम्य उत्साह में पगी तथा सेवाग्राम की गौरव गरिमा से अभिमंडित अनेक रचनाओं का सृजन कर बच्चों से लेकर वृद्धों तक समान और सहज रूप से देशप्रेम के संस्कार जगाये। देशप्रेम से ओतप्रोत द्विवेदी जी के पूजा गीत, खादी गीत, प्रयाण गीत, प्रभाती गीत और विप्लव गीत स्वतंत्रता आंदोलन में राष्ट्रव्यापी क्रांति की अग्नि प्रज्वलित करने एवं राष्ट्रप्रेमियों के लिए ऊर्जा का प्रचंड स्रोत सिद्ध हुए। उनकी 'भैरवी', 'वासवदत्ता', 'प्रभाती', 'युगाधर', 'पूजागीत', 'विषपान', 'मुक्तिगंध', 'चेतना' आदि कृतियों से राष्ट्रीयता की भावना गिरि-मैदानों में दौड़ती नदियों के समान जन-जन में प्रवाहित हुई। मातृभूमि को समर्पित द्विवेदी जी के कवि मन को लोहे की हथकड़ियाँ मणियों की लड़ियाँ प्रतीत हुई। राष्ट्र के प्रति प्राणोत्सर्गका उनका यह मधुर तकाजा वरण योग्य है -

'दुनिया में जीने का सबसे सुंदर मधुर तकाजा,
ऐ शहीद! उठने दे अपना फूलों भरा जनाजा।'

अपने राष्ट्र की दुर्दशा और पतन की तीव्र अनुभूति एवं तज्जन्य मर्मांतक पीड़ा द्विवेदी जी को विचलित करती है। उनकी आत्मा को धिक्कारती है, स्वाभिमान को जगाती है। अंततः वे सोये हुए राष्ट्रवासियों को 'भैरवी' सुनाकर जगाते हैं -

'जागो हे पांचाल निवासी! जागो हे गुर्जर, मद्रासी!
जागो हिंदू, मुगल, मरहठे! जागो मेरे भारतवासी!
जननी की जंजीरें बजतीं, जगा रहे कड़ियों के छाले!
सुना रहा हूँ तुम्हें भैरवी, जागो मेरे सोने वाले!'

द्विवेदी जी परतंत्रता की गहरी तंद्रा से भारतवासियों को जगाते ही नहीं, अपितु उन्हें प्रोत्साहित भी करते हैं -

'शाबाश! शूरवीरों मेरे, शाबाश!
समरधीरों मेरे!
शाबाश! जननी के चरणों में लूटने वाले
हीरो मेरे!
मंजिल थोड़ी ही शेष रही,
साहस ले उर में चले चलो,
मुस्कानों से बलिदानों से,
बाधा-विघ्नों दले चलो।'

इन पंक्तियों को पढ़कर जब आज भी धमनियों में बहने वाला रक्त उष्ण हो उठता है, तब स्वतंत्रता आंदोलन के उस दौर में इन गीतों ने राष्ट्रप्रेमियों को कितना रोमांचित किया होगा, यह बात बताने की अपेक्षा समझने और महसूस करने की अधिक है।

प्रख्यात कवि गया प्रसाद शुक्ल 'त्रिशूल' ने लिखा था -

'लुत्फ आजादी को हमने पाया नहीं,
कुछ मजा जिंदगी का उठाया नहीं।'

कहने की आवश्यकता नहीं कि आजादी के लुत्फ से जिंदगी को मजेदार बनाने की तमन्ना द्विवेदी जी में इतनी तीव्र है कि वह छिपाये नहीं छिपती, दबाये नहीं दबती। उनकी हृदय वीणा के तारों से बार-बार यही झंकार झंकृत होती है -

'जीना हो तो जियें आज बनकर स्वतंत्र हे वीर!
नहीं समा जाओ नीचे पृथ्वी की छाती चीर!'

राष्ट्रकवि सदैव समर काव्य का ही प्रणयन नहीं करता, अर्थात वह मात्र युद्ध ही नहीं लिखता, ललकार ही नहीं देता, वरन् शांति, अपनत्व, एकत्व और संस्कार की भी अभ्यर्थना करता है। 'वासवदत्ता' के 'आमुख' में द्विवेदी जी अपने इसी धर्म का स्मरण करते हुए लिखते हैं - 'कवि से आशा की जाती है कि वह देश की आजादी के ही गीत न दें, वे रचनायें भी दें जो उसके समाज, जाति, राष्ट्र के मेरुदंड - आदर्श को सीधा रख सकें।' इस दिशा में द्विवेदी जी सजग ही नहीं रहे, सदैव यत्नवान दिखाई देते हैं। उनकी वासवदत्ता, सरदार चूड़ावत, कर्ण और कुंती, महाभिनिष्क्रमण तथा विक्रमादित्य आदि रचनाओं ने राष्ट्र में उदात्त भावों, सद्‌विवेक, सद्‌विचार और सद्‌भावना का संचार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

पंडित सोहनलाल द्विवेदी की दृष्टि बड़ी गहरी और व्यापक है। वह केवल राष्ट्रीय आंदोलन के परिदृश्यों तक ही सिकुड़ी नहीं रही, वल्कि उसकी परिधि में संपूर्ण राष्ट्र स्पंदित हुआ है। राष्ट्रीयता के सजग प्रहरी द्विवेदी जी निर्धन जनता की व्यथा-कथा के भी गायक रहे हैं। किसानों और मजदूरों के प्रति उनका मन अगाध स्नेह से आप्लावित है। उन्होंने फटे-चीथड़े पहने, पुरई-पालों, खपरैलों में रहने वाले 'रहिमा-रमुआ' को ही सच्चा हिंदुस्तानी माना, इसीलिए वे बड़े अभिमान के साथ मस्तक ऊँचा करके गाते हैं - 'है अपना हिंदुस्तान कहाँ? वह बसा हमारे गाँव में।'

हलधरों को उद्‌वोधित करते हुए वे कहते हैं -

'हल के बल पर तुम उपजाते ऊसर में भी गेहूँ धान,
हल के बल पर तुम देते हो क्षुधित-तृषित को जीवन-दान।
हल का पूजन करो आज फिर, हल की उठे निराली तान,
हल से हल हों सभी समस्या, हलका होवे भार महान।
हल के गाओ गीत निराले, बढ़ो, विजय वरने आई।
जगो, किसानों! आज तुम्हारे जगने की बेला आई।'

मजदूर और किसान ही नहीं, अपितु कोटि-कोटि भिखमंगों के साथ कंधा जोड़कर दुखियों पर दया करके, अत्याचार का प्रतिकार करते हुए मानवता से संस्थापित करने के लिए आत्मोत्सर्ग करने वाले प्रत्येक कर्मवीर द्विवेदी जी के लिए प्रणम्य हैं। वे हरिजनों की चरणधूलि को बार-बार मस्तक से लगाकर शवरी और निषाद को याद करते हैं। पंडित सोहनलाल द्विवेदी जी की श्रम के प्रति प्रतिवद्धता, ग्रामोत्थान की आकांक्षा, दलितों के प्रति सम्मान भावना उनके संपूर्ण चिंतन और सृजन को मानव-मुक्ति की अमूल्य भावना का एक ऐतिहासिक दस्तावेज बना देती है। उनकी 'पूजागीत' कृति का परिचय देते हुए श्री हरिभाऊ उपाध्याय लिखते हैं - 'द्विवेदी जी का कवि युग के प्रति वफादार है। जो कवि अपने आपके प्रति सच्चा रहता है, वह कवि सबके प्रति सच्चा रहता है।' सत्य ही तो है, तुलसी की भक्ति, राणाप्रताप और गौतम बुद्ध की त्याग-शक्ति, गांधी जी की देश-सेवा और दलितों की पीड़ा ने द्विवेदी जी को पक्का युगकवि बना दिया। तभी तो उनके मन का पिक युग का राग गाता है, सोये देश को सजग करता है, रण-निमंत्रण सुनाता है, राष्ट्र देवता के चरणों में सर्वस्व अर्पित करने को मचलता है और नवयुग की शंख-ध्वनि गुंजरित करता है। तुलसी के आँगन में, कबीर के प्रांगण में उनकी साँसों के तार बार-बार यही गुनगुनाते हैं -

'कब होगा गृह-गृह में मंगल?
टूटेगी आँगन की कारा, मुक्त बनेगा जनगण सारा,
'जय जननी' के महाघोष से गूँजेगा अंबर अवनी तल।'

कोटि-कोटि कंठों का गर्जन, कोटि-कोटि शीशों का अर्पण सफल हुआ, परतंत्रता की निविड़ निशा में स्वाधीनता का सुवर्ण प्रभात आया। अंबर हँसा, धरा मुस्कुराई, दिक्‌दिगंत ने सुरभि लुटाई, भला ऐसे में किस हृदय सिंधु में आनंद की हिलोर न उठती। द्विवेदी जी ने भी इस चिर प्रतीक्षित पावन बेला का आनंदोन्मत्त हो स्वागत किया। उनके कंठ से मंगल गीत फूटा -

'पावन पर्व युगों में आया,
पुलकित बने प्राण मन काया,
गूँज रही आनंद भैरवी,
मंद हुई करुणा विहागिनी।
गाओ मंगलगीत, रागिनी।'

सत्कवि राष्ट्र का शुभचिंतक होता है। उसकी खुशहाली पर वह यदि अपने भावों की मकरंद धार प्रवाहित करता है, मुक्ति के मंगल दिवस की पूजा-अर्चना करता है तो राष्ट्र के पनपने वाली विकृतियाँ उसकी रातों की नींद गायब कर देती हैं। वह अपनी इस पीड़ा, निराशा और हताशा को भी व्यक्त करने से नहीं हिचकता। पंडित सोहनलाल द्विवेदी ने स्वतंत्र भारत का जो चित्र अपनी कल्पनाओं में बनाया था, जब उसमें उन्हें दरार पड़ी हुई, विकृति उभरती हुई दिखाई दी तो उनका बोझिल मन कहने लगा, प्रश्न करने लगा -

'क्या यही स्वातंत्र्य सुख है, दशों दिशि प्रतिकूल रुख है
हो रहा सतत आशा पर तुषार-निपात।'

सचमुच स्वतंत्रता से पूर्व हमने जो स्वप्न देखे थे, वे किसी भुने हुए पापड़ की तरह बिखरकर चूर-चूर हो गये। खंडित सपने, टूटी आस्थाएँ और ध्वस्त कामनाएँ सब शिखर से लुढ़की चिड़िया की मानिंद धरा पर आ गिरी हैं। आतंक, असुरक्षा, अनिश्चय और अजनबीपन के स्याह अंधेरे में भटकते हुए भारत को स्वयं द्विवेदी जी ने अपने जीवन के अंतिम पड़ाव पर देखा है। राष्ट्रीय मूल्यों के साथ होते बलात्कार को, राष्ट्रीय आस्थाओं के होते चीरहरण को, राष्ट्रीय अस्मिता के लुटते सतीत्व को देखकर आजादी के सच्चे सिपाही द्विवेदी जी को कितनी निराशा हुई होगी, कितनी छटपटाहट हुई होगी? इसका अनुमान लगाना सहज नहीं है। पराधीनता के क्रूर इतिहास को बदलने और नया सवेरा लाने में मातृभूमि के कण-कण से प्यार करने वाले असंख्य सपूतों के बलिदान और उत्सर्ग से प्राप्त स्वतंत्रता की दुर्गति देखकर उनका अवसाद ग्रस्त हो जाना स्वाभाविक ही था। परंतु बिंदकी के इस साहित्य संत ने हार नहीं मानी, हिम्मत हार न मेरे देश' का गान करते हुए राष्ट्र को नयी प्रेरणा प्रदान करते रहे -

'खामोश न बैठो वन मुरदे, आँधियाँ बनो, तूफान बनो।
दुनिया है बदल गयी सारी, तुम आज नये इंसान बनो।'

इस ओजपूर्ण वाणी को सुनकर मातृभूमि का कोई सपूत निष्क्रिय नहीं बैठा रह सकता है। द्विवेदी जी के सामने ही क्षेत्रवाद, जातिवाद, भाषावाद, आतंकवाद और सांप्रदायिकता की विष-ग्रंथियाँ राष्ट्रीय जीवन को तिल-तिल कर गलाने लगी थीं, उसी को देखकर उन्होंने लिखा था -

'मस्जिद से मंदिर लड़ते हैं,
गिरिजा से लड़ते बिहार मठ,
धर्म अनर्थ कर रहा कितना?
करते हैं अधर्म पामर शठ।
वर्ण-वर्ण में छिड़ा द्वंद्व है,
जाति-जाति से जूझ रही है,
स्वार्थ किये व्यग्र सभी को,
सुमति-सुगति कब सूझ रही है?'

द्विवेदी जी की उपर्युक्त पंक्तियाँ वर्तमान परिप्रेक्ष्य को कितनी स्पष्टता के साथ रेखांकित कर रही है, जब राम जन्मभूमि मंदिर निर्माण और आरक्षण जैसे मुद्दों ने संपूर्ण राष्ट्र को झकझोर कर रख दिया था, तब द्विवेदी जी की वाणी ने ही सही राह दिखायी थी -

'मेरे हिंदू और मुसलमान! रे अपने को पहचान जान!
हम लड़ते जाते हैं आपस में, मंदिर-मस्जिद है लड़ जाती।
हम गड़ जाते हैं धरती में, मंदिर-मस्जिद है गड़ जाती,
मंदिर-मस्जिद से ऊपर हम, रे अपने को पहचान जान।'

पंडित सोहनलाल द्विवेदी जी ने गौरवमय प्राचीन गाथाओं का तेजोदीप्त स्मरण करते हुए सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति आस्था ही व्यक्त नहीं की, समान आदर्शों के आधार पर पारस्परिक सहयोग एवं सौहार्द-भावना के प्रसार का संदेश ही नहीं दिया तथा भावी नवनिर्माण एवं स्वप्नों की विश्वास भरी झलक ही नहीं दिखलायी, अपितु देश-प्रेम, सांस्कृतिक गौरव गरिमा, सदाचार, साहस, वीरता तथा सुदृढ़ संकल्प से ओतप्रोत बाल साहित्य का भी प्रणयन किया। उन्होंने 'दूध बताशा', 'बाँसुरी', 'झरना', 'शिशु भारती', 'बाल भारती', 'बच्चों के बापू', 'नेहरू चाचा', 'मोदक' एवं 'बिगुल' आदि बालकृतियों से राष्ट्र की बाल पीढ़ी को सबल एवं सुसंस्कृत बनाने में भी अपना अविस्मरणीय योगदान दिया।

आज जब हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं, हमारे सम्मुख राष्ट्रप्रेम का दारिद्र्य सबसे बड़ी चुनौती है तथा राष्ट्र के प्रति अचल निष्ठा का अकाल पड़ा हुआ है, तब द्विवेदी जी के साहित्य का मंथन हमारे लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है। राष्ट्रीय चेतना के इस अग्रदूत का सृजन-कर्म बताता है कि राष्ट्र हिंदुओं और मुसलमानों से नहीं बनता, उच्चवर्णों और पिछड़े वर्गों से नहीं बनता, शहरों और गाँवों से नहीं बनता, राष्ट्र बनता है, त्याग-तप की रगड़ से, चमकती देशभक्ति और दमकती देशाभिमान की भावना से। पंडित सोहनलाल द्विवेदी जी राष्ट्रीय साहित्य धारा में मैथिली शरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह 'दिनकर' तथा बालकृष्ण शर्मा नवीन परंपरा के गौरव रत्न हैं।

आइए, स्वतंत्रता आंदोलन के महायज्ञ को अपने स्वर-मंत्र भेंट करने वाले इस चिरस्मरणीय राष्ट्रधर्मी की पुकार को जन-जन में प्रचारित, प्रसारित करें -

'एक ध्वजा के नीचे आओ,
युग-युग का विद्वेष भुलाओ,
जीवन में नव जीवन लाओ।'

- शिक्षाविद एवं साहित्यकार
'नमन' निकट मिलन चित्रलोक
रामनगर, गुलावठी
बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश-203408
मोबाइल: +91 9837573250

भारत की आजादी में हिंदी की भूमिका

- डॉ कविता विकास -

हिंदी हमारी आन-बान-शान की भाषा है। हमारी अस्मिता की भाषा है। हमारी सांस्कृतिक पहचान की भाषा है। राष्ट्रहित की बात हो या देश हित की, इसके योगदान को कभी भूला नहीं जा सकता। स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की अस्मिता न केवल देश भक्तों की आवाज बनी, बल्कि उनकी शान का पर्याय बनी। प्राचीन काल में देश में संस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रंश आदि भाषाओं का राजभाषा के रूप में प्रयोग होता था। बाद में हिंदी का प्रयोग भी शुरु हुआ था, लेकिन मुगलों के आने के बाद हिंदी की जगह फारसी और उर्दू ने ले ली।

राजपूत और मराठा काल में हिंदी का प्रयोग प्रचलित रहा, अर्थात हिंदी राज्य की भाषा बनने में पूर्णत: सक्षम रही है। अंग्रेजों ने भी फारसी, उर्दू और अंग्रेजी को अपनी राज-काज की भाषा बनायी। पर हिंदी का अध्ययन-अध्यापन नहीं रुका। साथ ही वह व्यापार की भी भाषा बनी रही। इतना ही नहीं, आजादी की लड़ाई में हिंदी संपर्क भाषा के रूप में उभरी। 1857 की मेरठ क्रांति से जो आजादी की लड़ाई शुरु हुई, उसमें हिंदी ने ही क्रांतिकारियों में देश-प्रेम एवं देश के लिए मर मिटने का जोश पैदा किया और ऐसे-ऐसे नारों को जन्म दिया, जिससे लोगों को लगने लगा कि परतंत्रता एक अभिशाप है और इससे स्वतंत्र होना ही हमारा पहला धर्म है।

महाराष्ट्र में तिलक 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' का उद्घोष कर रहे थे तो चंपारन से साबरमती तक गाँधी के 'करो या मरो' का शंखनाद सुनाई दे रहा था। कहीं सुभाष चंद्र बोस 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा' का जयघोष कर रहे थे तो कहीं चंद्रशेखर आजाद 'दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे, आजाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे' के नारों से युवाओं में शक्ति भर रहे थे। पंजाब में 'इंकलाब - जिंदाबाद' की अग्नि प्रज्ज्वलित थी।

हिंदी राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक थी और इसका प्रयोग करने से देशभक्तों में राष्ट्रीय जागरण की भावना आती थी। लोक मानस में हिंदी ही विचारों का संवाहक बनी। पोस्टरों में हिंदी स्लोगन लिखे गये। स्वर-कोकिला सरोजिनी नायुडु ने अपनी कविताओं को हिंदी में गाकर जन चेतना में जोश भर दिया। हिंदी हिंदुस्तानी भाषा कहलायी, जिसमें विभिन्न प्रांतों के लोकप्रिय शब्द मिलते चले गये। संस्कृत और उर्दू के प्रचलित शब्द भी जुड़ गये तथा अंग्रेजी के अनेक शब्द उसी रूप में प्रयोग होते गये। तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशज शब्दों की उत्पत्ति से हिंदी हिंदुस्तानी भाषा के रूप में एक विस्तृत रूप ले चुकी थी और आज भी अपने आयाम को बढ़ाने में जुड़ी हुई है।

सन 1857 से 1900 तक का युग भारतेंदु युग के नाम से जाना जाता है, क्योंकि भारतेंदु ने इस दौरान वृहद साहित्यिक योगदान दिया था। केवल भाषा ही नहीं, साहित्य में भी उन्होंने नवीन आधुनिक चेतना का समावेश किया और साहित्य को जन से जोड़ा। हंटर कमीशन 1882 के समक्ष उन्होंने हिंदी के लिए अपनी प्रबल दावेदारी पेश करते हुए कहा था, 'किसी भी देश में राजा और प्रजा की भाषा अलग-अलग नहीं होती है। सभी सभ्य देशों की अदालतों में उनके नागरिकों की बोली और लिपि का प्रयोग किया जाता है। भारत ही एक ऐसा देश है, जहाँ अदालती भाषा न तो शासकों की मातृभाषा है और न प्रजा की।' भारतेंदु युग में भाषा जागरण एवं द्विवेदी युग में भाषा सुधार के लिए महती कार्य हुए।

आजादी की लड़ाई में गाँधी युग के समय हिंदी का महत्त्व भी उल्लेखनीय है। गाँधीजी ने हिंदी को जन-जन की भाषा माना। हिंदी ही अधिसंख्य जनता द्वारा बोली जाती है तथा इसकी संप्रेषण शक्ति अद्भुत है। इसलिए उन्होंने संग्राम के समय इसे देशवासियों और देशभक्तों के बीच की कड़ी बनाया। हिंदी में दो अखबार निकाले - नवजीवन और हरिजन सेवक। उनके साथ वार्ता करने या पत्रों का जवाब हिंदी में देने की सख्ती थी। उन्होंने इंदौर के हिंदी साहित्य सम्मेलन 1918 में कहा था कि 'जैसे ब्रिटिश अंग्रेजी में बोलते हैं और सारे काम निष्पादित करते हैं, वैसे ही सभी हिंदी को राष्ट्रीय भाषा का सम्मान दें, इसे राष्ट्रीय भाषा बना कर ही हमें अपने कर्तव्य निभाने हैं।'

इस संदर्भ में सूरज पालिवाल अपने लेख 'हिंदी का वैश्विक भविष्य' में कहते हैं - 'देश को स्वाधीनता मिलने के बाद बी बी सी के संवाददाता ने गाँधीजी से संदेश देने को कहा तो उन्होंने तपाक से कहा कि 'दुनिया से कह दो गाँधी अंग्रेजी नहीं जानता।' स्पष्ट है, वे साम्राज्यवादियों की भाषा नहीं जानते थे। वे केवल अपनी भाषा जानते थे, जो जनता की भाषा थी। उनका मानना था कि भारतीयता, राष्ट्रीयता और स्थानीयता के गौरव-बोध के लिए हिंदी का ज्ञान जरूरी है। सन् 1885 में जब राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई, उसी समय स्वतंत्रता की लड़ाई के साथ राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय झंडा एवं राष्ट्रभाषा की संकल्पना भी जोर पकड़ती गयी। 1925 ई. में कानपुर अधिवेशन में गाँधीजी के प्रयास से कांग्रेस ने

एक प्रस्ताव पारित किया था कि अखिल भारतीय स्तर पर जहाँ तक संभव हो, कांग्रेस की कार्यवाही हिंदी में चलायी जाय और अपने सभी प्रादेशिक कांग्रेस कमिटियाँ प्रादेशिक या हिंदुस्तानी भाषाओं का प्रयोग करें। हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए गाँधी जी ने अपने पुत्र देवदास गाँधी को दक्षिण भारत भेजा था। दक्षिण भारत में राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने के लिए हिंदी को विधिवत सिखाया जाना आवश्यक समझा और पुरुषोत्तम दास टंडन, वेंकटेश नारायण तिवारी, शिव प्रसाद गुप्ता जैसे हिंदी सेवियों को लेकर दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा का गठन किया। उन्होंने 20 अक्टूबर 1917 को गुजरात के दूसरे शिक्षा सम्मेलन में राष्ट्रभाषा के कुछ लक्षण बताये थे, जो निम्नलिखित हैं -

- सरकारी कामों के लिए आसान हो।
- ज्यादातर लोगों द्वारा प्रयोग किया जाता हो।
- भारत के धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक कामकाज में प्रयोग की संभावना हो।

गाँधीजी ने अपने भाषण में कहा था कि 'राष्ट्रभाषा बनने के ये सारे गुण हिंदी में मौजूद हैं। उनके अनुसार हिंदी वह भाषा है, जिसे उत्तर में हिंदू- मुसलमान बोलते हैं और देवनागरी या फारसी में लिखते हैं।

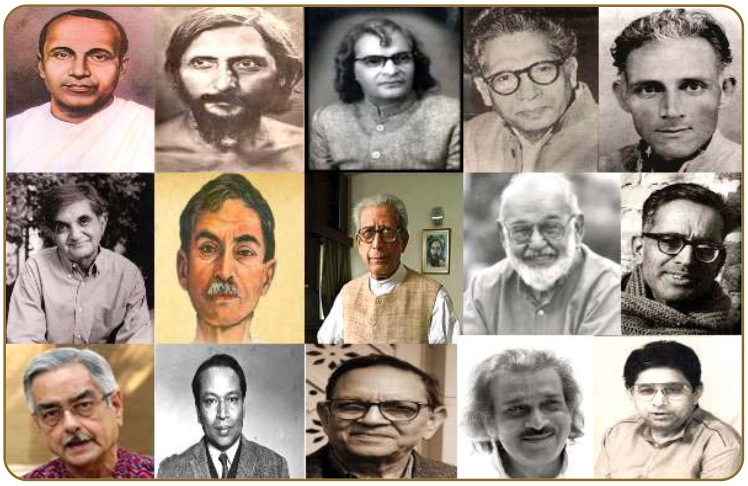

सुराज का जो सपना लेखकों और कवियों ने देखा था, उसे पंडित नरेंद्र शर्मा, केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, नेपाली, माधव शुक्ल, गया प्रसाद स्नेही, सियाराम शरण गुप्त और सोहन लाल द्विवेदी अपनी रचनाओं में रूपायित कर रहे थे। सुभद्रा कुमारी चौहान की 'खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झाँसी वाली रानी थी', एक तरफ जवानों में ओज भर रही थी तो पंडित माखन लाल चतुर्वेदी की पंक्ति 'मुझे तोड़ लेना तुम वनमाली' - पुष्प की अभिलाषा की ऐसी पंक्तियाँ ओज के प्रवाह को गति प्रदान कर रही थी।

महाकवि जयशंकर प्रसाद का प्रयाण गीत 'हिमाद्री तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती' अपने आप में रण का जयघोष था तो जगदंबा हितैषी की 'शहीदों के मजारों पे लगेंगे हर वर्ष मेले' पंक्ति देशभक्ति का बिगुल फूँकने के लिए काफी थीं। श्यामलाल गुप्त पार्षद के 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा' अमर्त्य वीर पुत्रों को एकजुट कर रही थी।

जयशंकर प्रसाद के नाटक चंद्रगुप्त व स्कंदगुप्त में देश प्रेम के अनुगूँजें थीं तो उपेंद्र नाथ अश्क, यशपाल और भगवती चरण वर्मा के कथा साहित्य में स्वाधीनता की आँच दिखती है। धनपत राय का लिखा 'सोजे वतन' और 'चाँद का फाँसी' अंक जब अंग्रेजी शासन में जब्त हुआ, तब धनपत राय ने प्रेमचंद का नाम अख्तियार कर लिया। उन पर अंग्रेजी जासूसों की विशेष नजर रहती थी। महावीर प्रसाद द्विवेदी, अज्ञेय, जैनेंद्र, मोहन राकेश आदि लेखकों के कथा साहित्य से समाज के हर तबके में चेतना प्रवाहित हुई। स्वतंत्रता की आग सुलगाने का काम साहित्य द्वारा खूब हुआ।

इसी संदर्भ में 'कर्मवीर', 'स्वदेश', 'प्रताप' एवं 'सैनिक' जैसी पत्रिकाओं के योगदान का उल्लेख आवश्यक है। इन पत्रिकाओं में देश की तत्कालीन अवस्था को दिखलाने के साथ-साथ पार्टी की गतिविधियों की खबरें और आगामी योजनाएँ तो होती ही थीं, सांकेतिक भाषाओं में खुफिया जानकारी देनी भी होती थी। साथ में क्रांतिकारी साहित्य के माध्यम से क्रांति की अलख को जलाए रखने की प्रेरणा भी। हिंदी पत्रकारिता का वह जमाना ही अजीब था। अकबर इलाहाबादी कहते थे, 'खींचो न कमानों को न तलवार निकालो, जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो।'

मदन मोहन मालवीय ने 1907 में 'अभ्युदय' के प्रकाशन से जन जागृति का बिगुल बजा दिया। 'कर्मवीर' पत्र ने स्वतंत्रता के समय अपने ओजस्वी शीर्षक 'राष्ट्रीय ज्वाला जगाइए' के साथ देश के युवाओं में देश-भक्ति का भाव भर दिया था। माखन लाल चतुर्वेदी की 'कैदी और कोकिला' में ब्रिटिश जेल की यातनाओं का उल्लेख पढ़कर आज भी क्रोध भाव पैदा हो जाता है। उन्हें 12 बार जेल की यात्रा करनी पड़ी थी। इन हिंदी अखबारों से जुड़े पत्रकारों पर जब प्रतिबंध लगाया जाता था तो ये भूमिगत होकर, हस्तलिखित पत्र प्रकाशित करके क्रांति-दीप प्रज्ज्वलित रखते थे। हिंदी इस दीपक में शब्दों का घी डालती तथा जवानों के हृदय में भभकती रहती। इस दौर में राजनीतिक एवं सामाजिक पत्रकारिता के समानांतर साहित्यिक पत्रकारिता का भी एक दौर चल रहा था, जिसमें 'सरस्वती' और उसके संपादक महावीर प्रसाद द्विवेदी उसके प्रतिनिधि के रूप में उभरे।

आजादी की लड़ाई में हिंदी के नारों का भी महती योगदान रहा है। ये नारे वेद ऋचाओं की तरह अभिमंत्रित होते हैं, जो जन-जागरण का काम करते हैं। गाँधी जी ने जहाँ 'अंग्रेज़ों! भारत छोड़ो' का नारा दिया, वहीं सुभाष चंद्र बोस ने 'जय हिंद' का नारा बुलंद किया। लाला लाजपत राय ने 'सायमन कमीशन वापस जाओ' कहकर फिरंगियों को ललकारा तो भगत सिंह ने 'इंकलाब - जिंदाबाद' के नारे से क्रांति को जिंदा रखा। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने 'वंदे मातरम', तिलक ने 'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा', नेहरु ने 'आराम हराम है' जैसे नारों से भारतीय चेतना को कभी सुप्त नहीं होने दिया। ऐसे नारों में एक ओर ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला देने की समर्थता थी, तो दूसरी ओर देश की अखंडता को बनाए रखने की प्रेरणा थी।

हिंदी भाषा ने आजादी के समय अपनी शक्ति सामर्थ्य से लोगों को परिचित करा दिया था, क्योंकि यह देश के अधिकांश हिस्सों में बोली और समझी जाती थी और आज भी यही स्थिति है। उस समय जनसंचार के माध्यम करीब-करीब नगण्य थे। मात्र तार और टेलीफोन ही प्रचलन में थे। पर शब्दों की ताकत और भाई-बंधुत्व के भाव के कारण ही हिंदी प्रबल रूप से जनचेतना का माध्यम बन सकी। यह जनता-जनार्दन की आवाज थी और देश के गौरव से जुड़ी हुई थी, इसलिए भारत वर्ष को आजादी दिलाने में सक्षम हो सकी। यह सदा सुशोभित रही भारती के भाल पर, उच्चार संशय से रहित, अविकल्प उच्च उछाल भर। इसे संपर्क की भाषा कहें या राष्ट्र की भाषा, लेकिन देश को जोड़ने का एक सूत्र बनकर हिंदी ने आजादी दिलाने का अभूतपूर्व काम किया है।

- डी, सेक्टर-9
कोयलानगर
धनबाद-826005
झारखंड
मोबाइल: +91 9934519534

एक और द्रोणाचार्य

- डॉ शैल चंद्रा -

चिन्मय आज एक बड़ी प्राइवेट कंपनी में असिस्टेंट सी.ई.ओ. के पद के लिए इंटरव्यू देने आया था। अभी वह रिसेप्शन हॉल में बैठने ही वाला था कि किसी ने उसे उसके नाम से पुकारा। उसने देखा कि उसके प्राइमरी स्कूल के टीचर खड़े थे।

चिन्मय ने खुश होते हुए उन्हें प्रणाम किया और पूछा - 'सर आप यहाँ कैसे?'

सर ने उससे रहस्यमयी आवाज में कहा - 'बेटे, तुमसे मैं कुछ कहने आया हूँ। आज तुमसे मैं कुछ माँगना चाहता हूँ। इसे तुम गुरुदक्षिणा समझो।'

सर को आश्चर्य से देखते हुए चिन्मय ने कहा - 'जी सर, जरूर माँगिए। आप तो मेरे गुरु हैं। आप से ही तो ज्ञान प्राप्त कर मैं यहाँ तक पहुँचा हूँ। आप तो मेरी प्रेरणा हैं।'

सर ने कहा - 'देखो चिन्मय, तुम्हें मालूम होगा कि इस पद हेतु लिखित परीक्षा में सिर्फ दो लोगों का चयन हुआ है। चूँकि एक ही पद है तो मैं चाहता हूँ कि तुम यह इंटरव्यू न दो। यहाँ से चले जाओ, क्योंकि वह दूसरा उम्मीदवार मेरा बेटा है। मैं अपने बेटे को कोई सुख-सुविधा या महँगे गिफ्ट तो न दे सका, पर उसे अच्छी शिक्षा जरूर दी और आज अगर वह इस पद पर बैठ जाता है तो मेरी तपस्या पूरी हो जाएगी।

यह सुनकर चिन्मय को रक्त से लथपथ कटी उंगली को थामे हुए एकलव्य की याद आ गई।

- रावण भाठा, नगरी
जिला धमतरी
छत्तीसगढ़
मोबाइल: +91 9977834645

हिंदी भाषा में विदेशी शब्दों की प्रासंगिकता

- श्री श्याम नारायण श्रीवास्तव -

भाषा और बोली को लेकर जब भी बात उठती है तो एक कहावत सर्वप्रथम हमारे समक्ष आकर खड़ी हो जाती है, 'कोस कोस पर पानी बदले, चार कोस पर बानी।' यह बोली-बानी ही आगे चलकर भाषा का रूप लेती है, जब उसकी अपनी लिपि और व्याकरण का निर्धारण हो जाता है। लिपि, वर्ण और फिर वर्ण का स्वर और व्यंजन में विभाजन, सार्थसाथ व्याकरण के अनुशासन की एक सीमा होती है। इसी सीमा के अंतर्गत संपन्न होता है लेखन कार्य, जो अभिव्यक्ति को संप्रेषित करने का एक अनुपम तरीका है, जिससे विचारों का आदान-प्रदान होता है। किसी भाषा में लेखन हमारी कला, संस्कृति और विभिन्न व्यावहारिक ज्ञान का संरक्षण करता है। निश्चय ही यदि भाषा के माध्यम से अतीत में अर्जित विभिन्न क्षेत्रों के ज्ञान को लिपिवद्ध न किया गया होता तो आज हम बहुत पीछे होते।

प्रत्येक प्रांत की भाषा भिन्न हो सकती है, लेकिन प्रत्येक राष्ट्र की अपनी एक भाषा तो होती ही है। जैसे भारतीय संविधान के प्रणेताओं ने **14** सितंबर **1949** को देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। फिर **1955** में राजभाषा आयोग का गठन हुआ। भाषाविज्ञान से जुड़े तमाम विद्वान हिंदी के विकास हेतु निरंतर कार्य कर रहे हैं । देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद ने कहा था कि 'राष्ट्रीयता का भाषा और साहित्य के साथ बहुत ही घनिष्ट और गहरा संबंध है। इस बात को आगे बढ़ाते हुए पुरुषोत्तमदास टण्डन जी कहते हैं' 'भाषा ही राष्ट्र का जीवन है।'

किसी भाषा में दूसरी भाषा के शब्द समाहित होते हैं तो उस भाषा की व्यापकता एवं संप्रेषण शक्ति बढ़ जाती है। विचारों के आदान-प्रदान को गति मिलती है। हम सहज ही दूसरों की भावनाओं से अवगत हो जाते हैं। बखूबी समझ लेते हैं कि आखिरकार वह कहना क्या चाहता है। जब वे विदेशी शब्द हमारी भाषा की वेशभूषा, अर्थात व्याकरण में ढल जाते हैं तो वे हमारे अपने शब्द जैसे प्रतीत होते हैं।

जैसे 'स्टेशन' विदेशी शब्द है। इसे जब हम बहुवचन में प्रयोग करते हैं तो व्याकरण के अनुसार स्टेशन्स नहीं लिखते, बल्कि स्टेशनों लिखते हैं, जैसे स्टेशनों पर बहुत भीड़ थी। अब यह शब्द इतना परिचित हो गया कि विदेशी लगता ही नहीं। सच तो यह है कि हिंदी में स्टेशन जैसा सहज या सरल कोई शब्द भी नहीं है, जिसका अब बोलचाल की भाषा में प्रचुरता से प्रयोग हो रहा है। यूँ तो स्टेशन के लिए संस्कृत से आया एक शब्द 'स्थानक' का चयन किया गया है। किंतु यह इतना प्रचलित शब्द नहीं है, जितना कि विदेशी शब्द 'स्टेशन'।

दरअसल हमारे देश में तमाम विदेशी आक्रांता आये और हमें लूट कर गये, जैसे गजनवी, तैमूरलंग, सिकंदर आदि। मुगल और ब्रिटिश तो यहाँ के शासक ही बन बैठे, जिनमें एक लूटने आया था तो दूसरा व्यापार करने और दोनों ही क्रमश: यहाँ के शासक हो गये। तो उनकी भाषा ने भी हमारे बीच अपनी पैठ बना ली।

पर्यटन के कारण हो अथवा फिर शिक्षा के कारण, एक देश से दूसरे देश में जाने से भी तमाम शब्दों का प्रचार होता है। नये उद्योग अथवा नई फैक्ट्रियों के स्थापित होने पर विभिन्न प्रांत और देश के इंजीनियर व अन्य कुशल श्रमिक जब एक परिसर में जुटते हैं तो वे एक-दूसरे की भाषा और संस्कृति से परिचित होने लगते हैं।

वार्तालाप में उन्होंने अपने शब्दों का प्रयोग किया तो हमने अपने शब्दों का। हमने उनके शब्दों को सीखने का प्रयत्न किया तो उन्होंने भी हमारे शब्दों को समझने का। इस बीच उपजे अपभ्रंश ने भी नये शब्द गढ़े। कुछ शब्द तो लोग बिना समझे ही प्रयोग कर बैठे। यहाँ पर बचपन में घटी एक घटना का उल्लेख करना चाहूँगा। हमारे गाँव में कुम्हारों और अहीरों की बस्ती है। एक आदमी को लोग 'डामफूल' नाम से पुकारते थे, जिसके बारे में बहुत बाद में पता चला कि उनके दादा जी का जमींदार के यहाँ आना-जाना होता था। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, वहीं अंग्रेजों के द्वारा दी गई गाली 'डैमफूल' को उन्होंने सुना होगा। उन्हें लगा होगा गेंदा, गुलाब, बेला, चमेली जैसे फूल की तरह यह कोई विदेशी फूल होगा। और बेटे का नाम ही 'डैमफूल' रख दिया। अब इतना शुद्ध उच्चारण निकालना तो उनके लिए कठिन था। लिहाजा उसका नाम 'डामफूल' हो गया। जबकि आप सब जानते हैं, 'डैमफूल' का हिंदी में मतलब है, पूरी तरह से बेवकूफ, मूर्ख या निर्वुद्धि। खैर यह प्रसंग तो यों ही याद आ गया। लेकिन बहुत से ऐसे भी शब्द हैं, जो विदेश से आये और उनमें स्थानीय समाज ने कुछ जोड़ा और वे प्रचलित शब्द बन गये। जैसे प्रतापगढ़ में एक जगह है मकन्दू गंज। यह 'मैकएंड्रूज' का अपभ्रंश है।

जब से यातायात के साधन बढ़े, आवागमन की सुविधा बनी। हम एक स्थान से दूसरे स्थान क्या, देश से विदेश गये या

विदेशी यहाँ आये। ऐसे ही शब्दों ने भी यात्रा की। आज तमाम विदेशी शब्द हमारे बीच प्रचलित हैं। वे तब तक रहेंगे, जब तक हमारे अपने शब्द न खोज लिये जायें और वे शब्द विधिवत प्रचार में न आ जाएँ। हालाँकि मैथिलीशरण गुप्त जी कहते हैं कि 'हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।

फिर भी भाषा की समृद्धि के लिए हमने एक दूसरे की भाषा के बहुत से शब्दों को स्वीकार किया। इसमें अंग्रेजी, फारसी, अरवी, तुर्की, पुर्तगाली, फ्रांसीसी आदि विदेशी भाषाओं के शब्द बहुतायत प्रयोग में हैं। जैसे अंग्रेजी में बुक, पेन, पेन्सिल, रेडियो, हॉस्पिटल, डॉक्टर, स्कूल, रजिस्टर, कापी, सर्कस, टेलीफोन, मोबाइल, टिकट, स्टेशन, प्रतिदिन प्रयोग में आने वाले अनेक शब्द हैं, जैसे अरवी के किस्मत, औरत, तारीख, मतलब, इज्जत, इलाज, किताब, वकील, मालिक, गरीब, जहाज, कीमत आदि तो फारसी के शब्द जवान, दरोगा, जहर, शादी, मुफ्त, अनार, चश्मा, अफसोस आदि।

फारसी का एक शब्द 'बीमार' हमारे हिंदी के अस्वस्थ शब्द से अधिक प्रयोग में है। कुछ शब्द हम सीधे प्रयोग में लाये तो कुछ अपने उच्चारण के अनुरूप, अर्थात अपभ्रंश रूप में जैसे अलमारी, लालटेन आदि। कुछ विदेशी शब्दों को उसके परिवर्तित रूप में भी स्वीकारा गया, जैसे ट्रेजेडी (Tragedy) से त्रासदी, टेकनिक (Technique) से तकनीक आदि।

आज 'बरामदा' एक प्रचलित शब्द है, जो गाँव से शहर तक बोलचाल और लिखने-पढ़ने तक में प्रयोग किया जाता है। जो विदेश से आया 'वरांडा' (Varanda) का ही नाम है। दरअसल पहले गाँव में अधिकतर कच्चे मकान होते थे और उसके सामने एक ओसारा होता था, जिससे उस मकान की कच्ची दीवार की सुरक्षा होती थी। प्राय: एक-दो खटिया भी ओसारे में पड़ी रहती थीं, जो कई तरह से प्रयोग में आती थी, जिसमें छाजन के लिए सरपत, गन्ने की पत्तियों, धान का पुआल, बाँस और बाँस की कई न, अरहर का हरहठा आदि प्रयोग में लाये जाते थे। फिर शहर की तरह गाँव का भी शहरीकरण हुआ। पक्के मकान बने और ओसारा समाप्त हो गया। लेकिन ओसारे की उपयोगिता बहुत थी तो पक्की ईंटों के सहारे ओसारे ने अपना नाम बदलकर 'बरामदा' कर लिया। अब तो विदेशी भाषा के इतने शब्द हमारी बोलचाल क्या लेखन तक में सम्मिलित हैं कि उन्हें त्यागना कठिन है। फिर त्यागने की आवश्यकता भी क्या है।

हमारे शब्द भी तो वहाँ जाकर अपना स्थान बना रहे हैं। ऑक्सफोर्ड शब्दकोश में प्रतिवर्ष हमारे तमाम ऐसे शब्द जोड़े जाते हैं, जो हमारी दैनिक बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त होते हैं। मैंने पढ़ा था कि ऑक्सफोर्ड शब्दकोश के दसवें संस्करण में कुल **384** भारतीय अंग्रेजी के शब्द शामिल किये गये हैं। खिचड़ी, जलेबी, पलंग, महाराजा, महल, डकैत, कोयल, कुरता, खाकी, शाल, महावत, पीपल, तुलसी, खरीफ जैसे शब्द ऑक्सफोर्ड के शब्दकोश में ऐसे ही मिल जायेंगे ।

हिंदी यों भी एक समृद्ध भाषा है। यहाँ एक वस्तु के कई नाम हैं, जिनके पर्यायवाची भी हैं। कई भाषाओं में एक ही शब्द से कई वस्तुओं के नाम हैं, जैसे एक चर्चित खेल क्रिकेट और झींगुर के लिए एक ही शब्द 'Cricket' लिखते हैं, तो चमगादड़ और बल्ला को 'Bat' ही नाम देते हैं, किंतु हम अलग-अलग नामों से संबोधित करते हैं। पानी के लिए हम कई पर्यायवाची शब्द बता सकते हैं, जैसे जल, नीर, अंबु, वारि, तोय आदि। किंतु वहाँ 'Water' के अतिरिक्त दूसरा शब्द नहीं मिला।

फिर भी बहुत से विदेशी शब्दों ने हमारे बीच गहरी पैठ बना ली हैं - जैसे अरवी का एक शब्द 'कफन' है, जो हिंदी के शववस्त्र से अधिक प्रयोग में है। दरअसल किसी शब्द की सार्थकता पूर्णरूपेण उसके द्वारा संप्रेषित भाव से है। जिन शब्दों के प्रयोग से हम अपनी बात दूसरों तक पहुँचा पाते हैं, वे हमारे लिए सदैव प्रासंगिक रहेंगे। उद्योगों के आगमन और व्यापार आदि के कारण बहुत से विदेशी शब्द उनके साथ भी आये जो आज भी प्रासंगिक हैं। मशीन (Machine) एक ऐसा प्रचलित शब्द है, जिसके लिए यंत्र शब्द लेखन में भले ही प्रयोग में आये, लेकिन बोलचाल की भाषा में तो मशीन ही अधिक उपयुक्त पाया गया।

विदेशी शब्दों की आवश्यकता या सार्थकता पर एक उदहारण देखें। यातायात के साधनों में सबसे प्राचीन सवारी है साइकिल, जिसका निर्माण 1860 में हुआ था। एक साइकिल आप अपने सामने खड़ी कर दीजिए और उसके एक-एक अंग का नाम लिखना शुरू कर दें। आपको नब्बे प्रतिशत विदेशी शब्द ही मिलेंगे। हैण्डल, पैडल, ट्यूब, टायर, शीट, स्टैंड, चैन, मडगार्ड, नट, बोल्ट, रिम, कवर, बुश आदि, जिन्हें गाँव का अनपढ़ मिस्त्री भी समझता है। यही नहीं, जब ट्यूब में कोई कील धँस जाती है तो उसे हम विदेशी शब्द पंचर (Puncture) ही कहकर मिस्त्री को बताते हैं।

इसी तरह अभी देश क्या पूरी दुनिया में एक महामारी कोरोना के नाम से फैली। उसने मास्क, क्वारेंटाइन, सेनेटाइजर, लॉकडाउन, ऑनलाइन, ऑफलाइन, वैक्सीन जैसे कई शब्द दिये, जिनका गाँव के अनपढ़ तक प्रयोग कर रहे हैं। वर्तमान में तत्काल संप्रेषण की तकनीक मोबाइल ने चिट्ठी-पत्री लिखने का सिलसिला ही बंद करा दिया। आज मोबाइल से जुड़े कुछ शब्द, जैसे मिस्ड कॉल, व्हॉट्स एप्प, फेसबुक, मैसेज, फेक न्यूज, सोशल मीडिया, वीडियो, आडियो, वेबिनार आदि बहुत से शब्द दिये, जो सदैव प्रासंगिक ही रहेंगे। न्यायालय परिसर में प्रयोग होने वाले विदेशी शब्द अदालत, नजीर, हलफनामा, गवाही, वकील, मुकदमा, पैरवी, जमानत, फैसला, तकरीर, मुवक्किल, फाइल, दस्तखत, अप्लिकेशन, दफ्तर प्रचलित विदेशी शब्द हैं, जो बिना रोकटोक के निरंतर प्रयोग में हैं।

देश में तमाम ऐसे शब्द प्रचलन में हैं, जिनका मूल क्या है? वर्तमान पीढ़ी जानती ही नहीं। ये शब्द उनके पाठ्यक्रम में भी नहीं मिलते। बचपन में प्राइमरी की कक्षाओं में हमने जो तोला, माशा, रत्ती, सेर, सवैया, पौवा, छटांक, मन, पसेरी, मील, कोस आदि पढ़े थे, अब ग्राम, किलोग्राम, मीटर, किलोमीटर के रूप में प्रचलित हैं, जो विदेशी शब्द हैं। यदि हम अपनी वेशभूषा, अपने पहनावे पर ही निगाह डालें तो धोती-कुरता, गमछा को छोड़ कोट, पैंट, शर्ट, जींस, टावेल पर आ गये हैं। दरअसल इसका कोई विरोध नहीं है। परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। अपनी सुख-सुविधा के अनुसार हम एक-दूसरे की परंपरा और संस्कृति को भी स्वीकार कर लेते हैं, उसी में जीने लगते हैं। प्रारंभ से ही सीखना मानव की प्रवृत्ति रही है। इसलिए हिंदी में तमाम ऐसे विदेशी शब्द मिलते हैं, जिनकी प्रासंगिकता आज भी है और आगे भी रहेगी।

वैसे धीरे-धीरे बहुत सा परिवर्तन दिखने लगा है। पूर्व में हम जिसे वैद्य, हकीम कहते थे, वे पहले डॉक्टर हुए और अब चिकित्सक के रूप में पहचाने जाने लगे। नौकरियों का एक चर्चित शब्द तबादला अब ट्रांसफर हो गया। फैसला जजमेंट से होता हुआ निर्णय पर आ चुका है तो फौज सेना में बदल गया, साहूकार का कर्ज लोन से ऋण तक आ गया है। कार्यालयों का तातीलनामा हालीडे लिस्ट से होता हुआ अवकाश-तालिका में परिवर्तित हो चुका है। सच है कि अपनी भाषा और उधार की भाषा में अंतर तो होता ही है। अपनी भाषा में जो माधुर्य और अपनत्व की भावना होती है, वह अन्य भाषा में नहीं होती। शायद तभी भारतेंदु जी कहते हैं –

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल
अंग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन
पै निज भाषा-ज्ञान बिन रहत हीन के हीन।।'

भाषा हमारे भावों की संवाहक होती है। भाषा द्वारा ही राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोया जा सकता है। किसी भी राष्ट्र को सक्षम और आर्थिक दृष्टिकोण से धनवान बनाना है तो उसकी भाषा और साहित्य की संपन्नता में उत्तरोत्तर विकास नितांत आवश्यक है। हमें अपनी मातृभाषा, संस्कृति और कुछ परंपराओं को जीवित रखना होगा। ग्रामीण क्षेत्र से जुड़े लोग खड़ीबोली में बात करते-करते प्राय: अपने गाँव की बोली में वार्तालाप करने लगते हैं। शायद इसका मूल कारण यह है कि वे अपनी मातृभाषा में अपने विचारों को ग्रामीण अंचल के शब्दों के माध्यम से बेहतर कह पाते हैं।

हिंदी भाषा की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से है। संस्कृत एक ऐसी प्राचीन भाषा है, जो किसी भी दृष्टि से सुदृढ़ है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का कहना है – 'आप जिस तरह बोलते हैं उसी तरह लिखा भी जाना चाहिए, भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।' यह सच है कि हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है। किंतु जब हम भाषा को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि 'भाषा भावनाओं की संवाहक है तो तमाम भावनाओं को संप्रेषित करने के लिए अपनी भाषा में विदेशी शब्दों की प्रासंगिकता भी बनी रहती है। हमें किसी भी भाषा से दुराव नहीं है। कबीर के शब्दों में कहूँ तो 'भाषा बहता नीर है, उसे रोकना उचित नहीं है।' किसी भी भाषा का सीखा जाना बहुत अच्छी बात है, किंतु अपनी भाषा का वर्चस्व बनाये रखना बहुत बड़ी बात है। प्रयास रहे कि हम अपनी भाषा को अधिक से अधिक समृद्ध बनायें।

– ए-302, ग्रीन व्यू कालोनी,
खैरपुर, रायगढ़-496001
छत्तीसगढ़
मोबाइल: +91 7999652646
ईमेल: snsrivastava717@gmail.com

राष्ट्रभाषा के रूप में विकसित होता हिंदी का स्वरूप

- इंजीनियर आशा शर्मा -

हर देश, हर राष्ट्र की एक अपनी बोली होती है, जो सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि कारणों से विकसित होकर भाषा का रूप धारण कर लेती है। धीरे-धीरे उन्नत होकर यह मानक भाषा संपूर्ण राष्ट्र की सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करने लगती है। उस क्षेत्र के निवासियों को उससे लगाव हो जाता है और वे अन्य राष्ट्रीय प्रतीकों के समान ही उस भाषा से लगाव और गर्व महसूस करने लगते हैं और उसे राष्ट्रभाषा कहा जाता है।

इस तथ्य में कोई दोराय नहीं कि अपनी भाषा के बिना राष्ट्र गूँगा होता है। भारत की फिलहाल कोई घोषित राष्ट्रभाषा नहीं होने के कारण इसे गूँगा राष्ट्र कहा जाये तो कैसा तमाचा सा लगता है ना गाल पर? लेकिन यह एक कड़ुवा सत्य है कि भारत में बहुतायत से बोली और समझी जाने वाली हिंदी भाषा को अभी तक संवैधानिक रूप से राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त नहीं हुआ है। फिलहाल हमें इसी बात पर संतोष करना होगा कि भारत में कम से कम हिंदी को राजभाषा का दर्जा तो हासिल है। इस आशा के साथ कि शीघ्र ही अपनी प्यारी हिंदी को हम राष्ट्रभाषा के रूप में देखेंगे।

हिंदी बहुत सरस, सरल, सहज और सुगम भाषा है। हिंदी को राजभाषा बनाये जाने के पीछे भी यही तथ्य है। हम सब जानते हैं कि राजभाषा किसे कहते हैं। राजभाषा, यानी प्रशासन की भाषा, जिसके माध्यम से सभी प्रशासनिक कार्य संपन्न किये जाते हैं, जो जनता और प्रशासन के बीच आपसी संपर्क के काम आती है।

तो अब सोचने वाली बात यह है कि राजभाषा के रूप में आखिर हिंदी को ही क्यों चुना गया, कोई दूसरी भारतीय भाषा भी तो हमारी राजभाषा बन सकती थी। महात्मा गांधी जी ने एक बार कहा था कि 'किसी भी भाषा को राष्ट्रभाषा बनने के लिए उसमें ये पाँच गुण अवश्य होने चाहिए। यहाँ यह बात भी स्पष्ट होनी चाहिए कि महात्मा गांधी जी ने ये पाँच गुण राष्ट्रभाषा के बताये थे, न कि राजभाषा के। खैर! ये गुण थे -

1. वह भाषा, जिसे सरकारी अधिकारी आसानी से सीख सके।
2. वह समस्त भारत में धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक संपर्क के माध्यम के रूप में प्रयोग के लिए सक्षम हो।
3. वह भाषा अधिकांश देशवासियों द्वारा बोली जाती हो।
4. सारे देश को उसे सीखने में आसानी हो।
5. ऐसी भाषा को चुनते समय (जिसे हम राष्ट्रभाषा चुन रहे हों) क्षणिक हितों को ध्यान में न रखा जाए।

और ऊपर की पाँचों बातों को यदि ध्यान में रखा जाए तो भारतीय भाषाओं में केवल हिंदी ही ऐसी भाषा थी, जिसमें ये सभी विशेषताएँ थीं। चूँकि देश के एक भाग को हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाये जाने पर कुछ एतराज था, इसलिए हिंदी को राष्ट्रभाषा तो नहीं, लेकिन 14 सितंबर 1949 को भारतीय संविधान में राजभाषा के रूप में स्थान दिया गया।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि ऊपर लिखे गये पाँच गुणों में भी दो बार सीखने में आसान भाषा का जिक्र हुआ है और फिर हिंदी का राजभाषा के रूप में चयन होना इस बात पर मुहर लगाता है कि हिंदी कितनी सरल भाषा है। हिंदी भाषा इतनी सरल और सुगम है कि इसे सीखने के लिए हमें अलग से कोई अतिरिक्त प्रयास नहीं करना पड़ता। आज देश में ही नहीं, बल्कि विश्व भर में ऐसे बहुत से विद्वान साहित्यकार हैं, जो डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, वैज्ञानिक, बैंकिंग, सैन्य सेवा आदि विभिन्न तकनीकी और व्यावसायिक क्षेत्र में सफल होने के साथ-साथ हिंदी के क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान बनाये हुए हैं। इस बात से यह साबित होता है कि हिंदी सीखने में कितनी सरल भाषा है।

हम सब जानते हैं कि हिंदी का उद्‌गम संस्कृत से है। सिर्फ हिंदी का ही नहीं, बल्कि हमारी अन्य प्रादेशिक और देशज बोलियों का भी, यहाँ थोड़ा रुककर हम बोली और भाषा के मोटे फर्क को समझ लें कि बोलियों के समूह से भाषा बनती है। खैर! फिलहाल इसकी गहराई में न जाकर सिर्फ हिंदी की सरलता और सुगमता की बात करेंगे।

हालाँकि कुछ लोग हिंदी को एक कठिन भाषा मानते हैं, क्योंकि यह संस्कृत से निकली है। लेकिन यह हमारी बोलचाल की भाषा है। इसे सीखने के लिए हमें कहीं बाहर नहीं जाना पड़ता। अक्सर हमने महसूस किया है कि हमारे विदेशी मेहमान बहुत ही सरलता से हिंदी बोलना सीख जाते हैं। बेशक उनका उच्चारण सही नहीं होता, लेकिन वे अपनी बात को संप्रेषित करने में सफल हो जाते हैं। यही हमारी हिंदी की सरलता है कि यह बेहद ग्राह्य भाषा है।

उत्तर और मध्य भारत में हिंदी और उसकी सहभाषाएँ, और वह भाषा, जिसे हम खड़ीबोली कहते हैं, आसानी से समझी और बोली जाती हैं। हालाँकि दक्षिण भारत में राजभाषा हिंदी का चलन अपेक्षाकृत थोड़ा कम है। लेकिन फिर भी कोई हिंदी भाषी वहाँ केवल भाषा के कारण किसी परेशानी में पड़ा हो, ऐसा कभी देखने-सुनने में नहीं आया। इसे नादानी ही कहा जायेगा कि हमने देश को हिंदी और हिंदीतर भाषी क्षेत्रों में बाँट दिया है।

हिंदी बहुत ही सुंदर, समृद्ध और उदार भाषा है। यह एक बड़ी नदी की तरह है, जो छोटी धाराओं को अपने साथ लेकर चलती है। जैसे हमारी भारतीय संस्कृति दूसरी अन्य सभ्यताओं के संपर्क में आने के बाद उनके आचरण और संस्कारों को खुद में समाहित करती हुई समृद्ध होती गई, वैसे ही हमारी हिंदी ने भी अन्य भाषाओं को उदारतापूर्वक गले लगाया। विभिन्न बोलियों और सहयोगी भाषाओं के शब्दों को खुद में शामिल कर लिया और उत्तरोत्तर अपने आप को विशाल करती गई।

हिंदी बहुत ही मिलनसार भाषा है। इसने दूसरी भाषाओं से कभी परहेज नहीं किया। उर्दू के साथ मिली तो हिंदुस्तानी हो गई और अंग्रेजी के साथ मिली तो हिंग्लिश बन गई। उर्दू के साथ तो इसका मेल इस तरह से हुआ है कि जो लोग भाषा के जानकार नहीं हैं, वे हिंदी को उर्दू से अलग कर ही नहीं पाते। यदि हम आपसी वार्तालाप पर मनन करेंगे तो पायेंगे कि बातचीत के दौरान बहुत से शब्द अंग्रेजी के, बहुत से उर्दू और कई दूसरी भाषाओं के भी इस्तेमाल होते हैं। लेकिन इससे वार्तालाप बाधित होता हुआ महसूस नहीं होता। संप्रेषण में जरा सी भी रुकावट महसूस नहीं होती।

यह हिंदी की सरलता और सुगमता ही है कि इसने दूसरी भाषाओं के शब्दों को इतनी सहजता से अपना लिया है। आज की पीढ़ी की बात करें तो हम देखेंगे कि हमारी नई नस्ल भले ही अंग्रेजी को जरूरी मानती है। लेकिन अच्छी बात यह है कि उसे अपनी हिंदी से भी उतना ही लगाव है। यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि पड़ोसी का बंगला कितना भी बड़ा क्यों न हो, सुकून तो अपने घर में मिलता है।

पिछले दिनों एक लेख देखा था, जिसका शीर्षक था - 'लोकप्रिय भाषा के रूप में हिंदी का कमबैक'। शीर्षक पढ़ते ही लगा, 'क्या हिंदी कहीं चली गई? नहीं... और जब हिंदी कहीं गई ही नहीं थी तो उसका कमबैक कैसे हो सकता है। इसी उत्सुकता से पूरा लेख पढ़ा। तब पता चला कि यहाँ कमबैक से मतलब हिंदी की वापसी से नहीं, बल्कि उसकी धमाकेदार वापसी से है। पिछले कुछ वर्षों में युवा पीढ़ी इस भाषा से दूरी बना रही थी। उन्हें यह भाषा अंग्रेजी के मुकाबले कमतरी का अहसास करवा रही थी या दूसरे शब्दों में कहें तो अंग्रेजी उन्हें अधिक पढ़ा-लिखा या जेंटलमैन होने की खुशफहमी का अहसास दिला रही थी। लेकिन देर आये-दुरुस्त आये। यह खुशी की ही नहीं, बल्कि गर्व की बात है कि वह इसे वापस अपना रही है, वह भी पूरे दिल से। युवाओं को अब हिंदी कूल लगने लगी है। उन्हें हिंदी खालिस, गीत-गजल लुभा रहे हैं। हिंदी में बातचीत करना बेहद दोस्ताना लगने लगा है। यही तो है राष्ट्रभाषा के रूप में विकसित होता हिंदी का स्वरूप, जो अब स्पष्ट दिखाई देने लगा है।

हिंदी बहुत सुंदर भाषा भी है। इसकी लोकोक्तियाँ और मुहावरे किसी को भी बरबस अपने मोहपाश में बाँधने की क्षमता रखते हैं। मजे की बात यह है कि कई बार तो सकारात्मक और नकारात्मक... दोनों पहलुओं को दर्शाने के लिए दो अलग-अलग मुहावरे भी मिल जाते हैं। जैसे हम किसी को याद करते हैं और वह व्यक्ति अचानक हमारे सामने आ जाता है तो हम कहते हैं - इसकी उम्र बहुत लंबी है, जो सकारात्मक है। यदि हम कहें - 'लो, शैतान का नाम लिया और शैतान हाजिर' तो यह नकारात्मक हो जाता है। इसी तरह यदि हम सीमित संसाधन में कोई अतिरिक्त प्रयोजन साध लेते हैं, जैसे 'एक पंथ दो काज' तो सकारात्मक हो जाता है। वहीं यदि 'एक तीर - दो शिकार' तो नकारात्मक हो जाता है। ऐसे कई

उदाहरण मिल जायेंगे, जो हिंदी के भाषाई सौंदर्य को विशेष बनाते हैं।

दूसरी खूबसूरती यह है कि इस भाषा में एक ही शब्द के इतने समानार्थी शब्द या पर्यायवाची शब्द मिल जायेंगे कि हम हैरान रह जाते हैं। कहा जाता है कि - 'हरि के हजार नाम, कृष्ण के करोड़ नाम, लाख नाम विष्णु के'। यह भाषा की सुंदरता का एक और प्रतीक है। एक और उदाहरण, अंग्रेजी के 'Love' शब्द के लिए हिंदी में ढेर सारे शब्द हैं, जैसे प्यार, ममता, दुलार, स्नेह, लाड़, लगाव, प्रेम। हर रिश्ते के हिसाब से ये शब्द अलग अहसास दिलाते हैं।

हिंदी की देश और विश्वव्यापी लोकप्रियता के उदाहरण हैं, हिंदी फिल्में और उनका गीत-संगीत। भारत में हिंदी फिल्मों का एक बड़ा कारोबार है। भारत में बनने वाली फिल्मों में से 60% फिल्में हिंदी में बनती हैं। फिल्मों के व्यवसाय के विभिन्न आयामों का आकलन करने वाली संस्था ओमैक्स मीडिया की रिपोर्ट के मुताबिक जनवरी 2022 से लेकर अप्रैल 2022 तक बनी फिल्मों ने चार हजार करोड़ रुपये से अधिक का कारोबार किया है, यानी हर महीने लगभग एक हजार करोड़ का व्यापार। इससे हिंदी फिल्मों की लोकप्रियता का अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता है।

आजकल विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं की फिल्में भी हिंदी में डब, में अनूदित करके दर्शकों को परोसे जा रहे हैं, जिससे क्षेत्रीय भाषाओं के निर्माता-निर्देशकों को भी अपना व्यवसाय बढ़ाने हेतु हिंदी से जुड़ना पड़ रहा है। साथ ही क्षेत्रीय कलाकारों को भी राष्ट्रीय स्तर की पहचान प्राप्त हो रही है। अत: क्षेत्रीय कलाकार भी हिंदी फिल्मों के प्रति अपना रुख बना रहे हैं, जो हिंदी के बढ़ते वर्चस्व का प्रमाण है। यदि फिल्मों के संगीत की बात की जाय तो ऐसा कोई भारतवासी नहीं होगा, जो हिंदी फिल्मी गाने सुनना नहीं चाहता हो। हिंदी के कुछ फिल्मी गाने तो विश्व स्तर पर मशहूर हुए हैं। यह विश्व में हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता का प्रतीक है।

इसमें कोई दोराय नहीं कि हिंदी विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर जारी वर्ल्ड लैंग्वेज डेटाबेस के 22 वें संस्करण इथनोलॉजी के अनुसार दुनिया में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिंदी का तीसरा स्थान है। दुनिया भर में 61.5 करोड़ लोग हिंदी का प्रयोग करते हैं। कुछ लोगों को हिंदी में शामिल दूसरी भाषाओं के शब्दों से एतराज है तो कुछ इसे सही मानते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि हिंदी का कथित स्वरूप लिखित स्वरूप से भिन्न होती है। जो भी हो, हिंदी की लोकप्रियता को नकारा नहीं जा सकता।

राजभाषा के साथ-साथ हिंदी को अब राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने की मुहिम तेज होती जा रही है। सरकार के लगभग सभी कार्यालयों में राजभाषा विभाग का गठन किया गया है, जो कार्यालयों में हिंदी के कार्यान्वयन की समीक्षा करता है और कार्यालयों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग पर जोर देता है। इसके लिए विभिन्न तरह की प्रतियोगिताएँ आयोजित करवाई जाती हैं। अनेक बार इन प्रतियोगिताओं में विभागीय कर्मचारियों के परिवार के सदस्यों को भी शामिल किया जाता है। इस प्रकार हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु कर्मचारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों को अभिप्रेरित किया जाता है।

एक आम धारणा के तहत यह देखा गया है कि दक्षिण भारत में हिंदी को अपेक्षाकृत कम पसंद किया जाता है। 1960 के दशक में केंद्र सरकार ने तमिलनाडु के स्कूलों के पाठ्यक्रम में हिंदी को दूसरी भाषा बनाया। लेकिन सार्वजनिक विरोध को देखते हुए उस समय इस योजना को रद्द करना पड़ा। लेकिन 1980 के दशक में निजी स्कूलों में हिंदी को दूसरी भाषा के रूप में पढ़ाया जाने लगा। उनका मानना था कि वे स्थानीय लोग, जो नौकरी, शिक्षा या व्यवसाय जैसे कारणों से देश के अन्य भागों में रहते हैं, बिना हिंदी के ज्ञान के उन्हें परेशानी हो सकती है। आंध्र प्रदेश और तेलंगाना राज्यों में 1999 से यह दूसरी भाषा के रूप में पढ़ाई जा रही है। मलयाली भाषी लोग भी हिंदी सीखने और बोलने में बहुत रुचि रखते हैं और यह सब एक शुभ संकेत है कि अब दक्षिण भारत के राज्यों में भी हिंदी स्वीकार की जाने लगी है।

आज चूँकि इंटरनेट क्रांति के कारण समस्त विश्व एक गाँव सा लगने लगा है। ऐसे में देश का कोई व्यक्ति पढ़ाई, शादी, व्यवसाय या नौकरी के कारण देश के किसी भी हिस्से में जा सकता है। इस लिहाज से कम से कम कोई एक भाषा ऐसी होनी चाहिए, जो संपूर्ण भारतवर्ष को एक सूत्र में जोड़ सके और वह भाषा हिंदी के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं हो सकती। बहुत ही सकारात्मक बदलाव है कि इस तथ्य को अब सहज मान्यता मिलने लगी है। आशा है कि शीघ्र ही हमारी राजभाषा को राष्ट्रभाषा का स्थान भी हासिल हो। हम हिंदी भाषी और गैर-हिंदी भाषी क्षेत्र की सीमाओं से बाहर निकल कर वैश्विक स्तर पर एक भाषी और हिंदी भाषी बनें।

- छ: - 123, करणी नगर
लालगढ़, बीकानेर- 334001
मोबाइल: +91 9413369571

स्वतंत्रता के बाद हिंदी कविता का विकास एवं उसका विस्तार क्षेत्र

- श्रीमती सुरेखा जैन -

'चंद्र धवल भीगी चाँदनी सतरंगी अहसास,
वही शब्द मंदाकिनी गूँज उठा आकाश।...'

कवि कविता कब लिखता है, जब दर्द का सैलाब, आँसुओं की बारिश, खुशियों का शोर मन उद्वेलित करता है। जब अत्याचारी, भ्रष्टाचारी अनर्थ करने पर उतारू होते हैं, तब कवि चिरागों की लौ तेज कर रोशनी की कलम थाम लेता है और अंधेरे को दूर करने के लिए कविता को जन्म देता है।

कितने कष्टों और यातनाओं के बाद भारतीयों ने स्वतंत्रता के सूरज का दर्शन किया। उन्हें आशा थी कि अब न कोई भूखा-प्यासा होगा। न कोई राजा होगा, न ही कोई रंक। लोकतंत्र में सब स्वतंत्र होंगे। भूख, बेरोजगारी, गरीबी सभी से छुटकारा मिलेगा। लेकिन स्वर्णिम भारत का सपना, सपना ही रह गया। विपरीत परिस्थितियों ने आक्रोश, उग्रता, निराशा व झुंझलाहट को जन्म दिया।

कवियों ने समय की कसौटी को समझा और अपनी कलमें चलाई। समाज में फैली अराजकता, घुटन, कुंठा, खीझ के प्रभाव को कविता-अकविता-छंदमुक्त के माध्यम से अपना धरम निभाया। इस तरह कविता के नये तेवर उभर कर सामने आए और कविता जन सरोकारों से जुड़ गई।

कवि देश के ऐसे कर्णधारों को खोज रहा था, जो देश को सही दिशा की ओर ले चले। नैराश्य के घोर तम में भी वह आशा की किरण तलाश रहा था। प्रगतिवादी, प्रयोगवादी कविताएँ लिखी और पढ़ी जा रही थी। प्रयोगवाद की कविताओं में बैयक्तिकता अधिक हावी थी। यह कहना गलत न होगा कि स्वतंत्रता के बाद की कविता में पश्चिमी साहित्य का प्रभाव देखा जा रहा था। लेकिन इस धारा को कोई नूतन कविता तो कोई सहज कविता, कोई युयुत्सवादी कविता कहकर संबोधित कर रहा था।

नये तेवर की कविताओं के स्वर विद्रोही भी थे और आशावान भी। जीवन का यथार्थ काव्य में ढल रहा था। छंदों के बंधन से मुक्त कविता शिल्प की ओर मुड़ रही थी। बिंव विधान, उपमान सब बदल रहे थे। मानव की विवशता व उसके संघर्ष को कविता में स्थान मिलने लगा था। नई कविता के शहरी परिवेश के कवियों में धर्मवीर भारती, शमशेर बहादुर सिंह, गिरिजा कुमार माथुर प्रमुख थे तो ग्रामीण आंचल के कवि नागार्जुन, केदारनाथ सिंह तथा भवानी प्रसाद मिश्र थे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की कविता में बैयक्तिकता व बौद्धिकता के दर्शन होते हैं। वैसे, देखा जाए तो कविता को निज व्यथा-कथा कहने से बचना चाहिए। क्योंकि कविता तो संवेदनापूर्ण होती है और उसकी संवेदनाओं का प्रसार बहुत दूर तक होता है। शेक्सपीयर जब कहते हैं कि 'मैं दूसरों के दुख से दुखी होता हूँ।' तभी तो हम कह सकते हैं कि वे इतना अच्छा लिखते हैं। चार्ली चैप्लिन ने भी कहा 'मैं बारिश में इसलिए भीगता हूँ, जिससे मेरे आँसू कोई देख न सके।'

आजादी के बाद तो काव्य लोक संपृक्त हुआ। उसमें जन-जन की पीड़ा, आक्रोश, विद्रोह बढ़े। हमारे देश को अंग्रेज खोखला कर गये थे। हमारी संस्कृति, सभ्यता, साहित्य सब पर उनके अंकुश की छाप थी। लेकिन स्थिति को हमारे नेता भी कब संभाल पा रहे थे। तभी तो कवि ने लिखा है:

'सच हम नहीं, सच तुम नहीं, सच है सतत संघर्ष ही...'

उस समय देश को आत्मनिर्भरता की ओर ले जाने वाले स्वर को गुंजायमान करना था। अंध-विश्वास से विकास की ओर ले आना था। तभी तो रामधारी सिंह 'दिनकर' ने लिखा :

'वैराग्य छोड़ बाहों की विभा संभालो
चट्टानों की छाती से दूध निकालो...।'

कविता नदी की भांति अविरल बहती है, कभी नीचे ले जाती है, कभी चट्टानों को ठेल कर आगे बढ़ जाती है तो कभी समतल भूमि पर मंथर गति से शांत धारा बन बहती है। जब नई कविता जन्म ले रही थी, तब अकविता, वीर कविता, सहज कविता के नाम से जानी जा रही थी। छंदों से मुक्त ऊँची उड़ान भर रही थी। बिंव नये, उपमान नये, भाषा देशज व उर्दू शब्दों से परहेज

नहीं कर रही थी। लोकभाषा व लोक संस्कृति भी कविता को समृद्ध कर रही थी। केदारनाथ अग्रवाल लिखते हैं :

'हवा हूँ हवा मैं/बसंती हवा हूँ
सुनो बात मेरी अनोखी हवा हूँ...'

आजाद भारत का कवि सोच रहा था कि अब कोई छत बारिश में नहीं टपकेगी। अब कोई किसी की रोटी नहीं छिनेगा। लेकिन परिस्थितियाँ नहीं बदलीं तो कवि धूमिल को 'रोटी और संसद' जैसी कविता लिखनी पड़ी।

लोकतंत्र में आम आदमी किस से गुहार लगाए। सुनवाई न हो तो फिर कहाँ जाएँ। जैसे जयपुर के शासक को बिहारी लाल के एक छोटे से छंद 'नहीं पराग नहीं मधुर मधु नहिं विकास इहिं काल...।' ने गहरी नींद से जगा दिया था। लेकिन 'धूमिल' की इस कविता ने अभी भी अपना प्रहार जारी रखी है। 'धूमिल' ने अपने देश प्रेम को कभी धूमिल नहीं होने दिया, जैसे:

'मैं इतना कृतघ्न नहीं कि उस जमीन को/जिस पर मेरा जन्म खड़ा है/मेरे लिए मेरा देश.../जितना बड़ा है; उतना बड़ा है...'

***

'मैंने भी नक्शे के ऊपर/लाल कलम से जगह घेर दी/ और उसी सीमा के भीतर/अपने घायल कबूतरों को/फिर से उड़ना सिखा रहा हूँ।'

'धूमिल' के लिए कविता सिर्फ शब्दों की बिसात नहीं, बल्कि वाणी की आँख है। कवि ने वाणी को आँख का उपमान लिखकर कविता को नई ऊँचाई दे दी। किसी और ने भी लिखा -

'...यूँ ना शब्दों को अधरों पर तोलो,
मैं आँखों से सुनता हूँ, तुम आँखों से बोलो।'

स्वतंत्रता के बाद के कवियों की रचनाओं में रचनात्मकता के साथ-साथ उनकी चित्रात्मकता और ध्वन्यात्मकता भी झलकती व छलकती है। इसलिए कविता अपनी सी लगती है। 'अज्ञेय' का दूसरा तारसप्तक हिंदी काव्य धारा को नन्हें नन्हें कदमों से एक लंबी ऊँचाई पर लेकर आया। सक्रिय कवियों ने स्वातंत्र्योत्तर कविता को नई पहचान, नये परिधान, नये संवेग, नये विचारों से खास बनाया।

तारसप्तक के कवि सृजनात्मक शैली में एक दूसरे से एकदम भिन्न होते हुए भी कविता की इस विकास यात्रा में हमराही बनकर आगे बढ़ रहे थे। धर्मवीर भारती की कविताओं में प्रेम और सौंदर्य का अनूठा सम्मिश्रण पाठक मन को भीतर तक झकझोर जाता है। उन्होंने उद्दाम यौवन पर बाँध नहीं बाँधा, बल्कि युवा मन की प्यास को छलकने दिया।

भवानी प्रसाद मिश्र, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय, शमशेर बहादुर सिंह व अन्य कवियों के अलग-अलग तेवर थे। कविताएँ एकदम अलग शिल्प सौंदर्य के साथ लिख रहे थे। शमशेर बहादुर सिंह को उन्हीं के साथियों ने कवियों का कवि कहकर विभूषित किया। उन्हीं की कविता की ये पंक्तियाँ :

'मुझको प्यास के/पहाड़ों पर लिटा दो/
जहाँ मैं एक झरने की/तरह तड़प रहा हूँ...'

प्रेम की अनुभूति के सत्य को जिस प्रकार अंग्रेजी के कवि 'कीट्स' के काव्य में पढ़ा जा सकता है, वैसा ही उन्मुक्त भाव कवि शमशेर बहादुर सिंह की कविताओं में भी झलकता है, यथा :

'जी, हाँ हुजूर मैं गीत बेचता हूँ/मैं तरह-तरह के गीत बेचता हूँ/मैं किसिम किसिम के गीत बेचता हूँ...'

स्वतंत्रता के बाद की कविता की सच्चाई और अच्छाई यही है कि उसमें कवि का प्रतिबिंब दिखाई देता है, जिसने जो जिया है, वही लिखा है। कविता खेल नहीं, शब्दों का मेल भी नहीं, भावों की उदात्तता है, साधना है। कविता के बाहर आने से पहले कवि सजग हो जाता है। क्योंकि वह समाज के प्रति उत्तरदायी है। समाज को बेहतर बनाने में ही उसके जीवन की सार्थकता है। इसीलिए तो वह साधना में लीन होता है, उदाहरण देखिए :

'सोना होता है कवि को एक करवट साल भर
खानी होती हो सूखी रोटी
पीना पड़ता है हिसाब से दिया गया पानी
बात बोलेगी हम नहीं, भेद खोलेगी बात ही।'

स्वतंत्रता के बाद लिखी गयी छायावादी कविता के बिंबों में भिन्नता देखिए, कविता 'बात रात से'

'आँख उजली धुलीरात'

×× × × × ×

'कहा मैंने रुको/मैं भी साथ चलता हूँ/निस्तब्ध तट पर/बैठ कर बातें करेंगे...'

दूसरी ओर जयशंकर प्रसाद लिखते हैं...

'ले चल मुझे भुलावा देकर/मेरे नाविक धीरे-धीरे/जिस निर्जन में सागर लहरी/अंबर के कानों में गहरी/निश्छल प्रेम कथा कहती हो/तज कोलाहल की अवनि रे।'

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना तारसप्तक के प्रमुख कवियों में रहे। उन्होंने भी भावों के अनुरूप कविता में शब्दों का प्रयोग किया। साहित्यिक शब्दों की बहुलता से कविता अछूती रही।

'झींख झींख हारा
सर मारा/पर किसी तरह/उसका निषेध नहीं होता'

परिवेश और परिस्थितियों पर लिखने वाले कवि अपने को स्वयं गढ़ते हैं, तराशते हैं और उनकी कविता हृदय में स्वयं उतरने लगती है। वह परिस्थिति ही तो थी जब देवराज दिनेश ने भारत माँ की लोरी लिखकर सोये शेर जगाये थे :

'ये कैसा कोलाहल कैसा कुहराम मचा।
है शोर डालता कौन आज सीमाओं पर?...'

यह कविता देशवासियों की रग-रग में जोश भरने के लिए पर्याप्त है। सोमनाथ ठाकुर लिखते हैं:

'सागर चरण पखारे/गंगा शीश चढ़ावे नीर/मेरे भारत की माटी ही चंदन और अबीर/सौ-सौ नमन करूँ मैं मैया।'

अज्ञेय जी की 'नया कवि आत्म स्वीकार' कविता में मानो नये दौर की कविता का संपूर्ण कथ्य एवं समाज की विसंगतियाँ दर्पण में प्रतिबिंब की भांति एक-एक करके उभरती हैं :

'किसी का सत्य था, मैंने संदर्भ में जोड़ दिया।
कोई मधु कोष काट लाया था, मैंने निचोड़ लिया।
किसी की उक्ति में गरिमा थी,
मैंने उसे थोड़ा सा संवार दिया,
किसी की संवेदना में आग का सा ताप था।
मैंने दूर हटते-हटते उसे धिक्कार दिया।'

स्वतंत्रता के पश्चात कविता के विकास की यात्रा न जाने कितने पड़ावों से होकर यहाँ तक पहुँची है। जहाँ भी दृष्टि जाती है, साहित्य की काव्य विधा में सोना ही सोना बिखरा है। 'दुष्यंत' ने गजल को नये अंदाज में पिरोया है। दुष्यंत जी की पीर पिघली तो लावा बनकर कविता संग्रह में लाल नदी बन गयी:-

'हो गई है पीर पर्वत सी - पिघलनी चाहिए
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि सूरत बदलनी चाहिए।'

कवि के भीतर जो आग धधकती है, वह पन्नों पर उतरकर देशवासियों को उनका धर्म, उनका कर्तव्य याद दिलाती। हिंदी कविता प्रत्येक युग में परिष्कृत, परिमार्जित, परिवर्तित होती रहती है। स्वतंत्रता के बाद की कविता ने कई दौर देखे हैं। तीनों तारसप्तक के कवियों की कुछ झलक हमने ऊपर उनकी कविताओं में देखी है।

दिनकर जी हमारे राष्ट्रकवि बने, जिन्होंने हमें श्रृंगार व वीर रस की गंगा में डुबकी लगाने का अवसर प्रदान किया। अटल बिहारी वजपेयी, उदय प्रकाश, अशोक चक्रधर, प्रसून जोशी, काका हाथरसी, कुँवर बेचैन, कुमार विश्वास जैसे नामचीन कवियों की लंबी श्रृंखला हमारे पास है।

कुँवर बेचैन जी खुद से खुद की पहचान कविता के माध्यम से यह कहकर कराते हैं:

'सबकी बात न माना कर, खुद भी पहचाना कर
बारिश में औरों पर भी अपनी छतरी ताना कर...'

आधनिक हिंदी कविता में गोपाल दास नीरज का नाम भी सदैव सम्मान से लिया जाएगा। उन्होंने लिखा :

'आसूँ जब सम्मानित होंगे। मुझको याद किया जाएगा
जहाँ प्रेम की चर्चा होगी। मेरा नाम लिया जाएगा।'

कवि आते हैं, जीवन जीते हैं, लिखते हैं और कारवाँ की तरह गुजर जाते हैं। उन्हीं गीतों व कविताओं को गुनगुनाते हुए हम उन्हें अपने भीतर जिंदा रखते हैं। मनोज मुंतशिर वर्तमान दौर के कवि हैं, जिनकी कविताओं में देशप्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी है :

'देखो हमारी ओर पहचानों हमें
हम वही हैं जो बाण भेद कर धरती से
धारा निकाल दिया करते थे।...'

वर्तमान दौर तक आते-आते कविता में बिंब बहुलता से प्रयोग किये गये। कविता अब केवल पुस्तक व मंच तक सीमित नहीं रही। मीडिया के इस नये युग में हरेक के दिल पर कविता दस्तक दे रही है। वाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम पर कैप्शन के रूप में कविताओं की पंक्तियाँ बड़े चाव से लिखी व पढ़ी जा रही हैं। कविता ने छंद विधान से मुक्त होकर अपने को नये-नये रूपों में ढाल अब हाइकु, क्षणिकाएँ, महिया और मुक्तक तक विस्तार कर लिया है। हरि कीरत हीर की क्षणिका की बानगी देखें :

'खुदाया! ये कैसी जमीं लिख दी/तूने लकीरों में/कोई पौधा इश्क का उगता ही नहीं।'

अज्ञेय के हाइकु की एक बानगी प्रस्तुत है :

'भोर की प्रथम किरण फीकी/अनजाने जागी हो/याद किसी की।'

कमल भट्ट 'कमलेश' की हाइकु देखें :

'कौन मानेगा/सबसे कठिन है/सरल होना। ढूंढ़ता रहा/खुद को दिन रात/ढूँढ़ न पाया।'

अब मुक्त छंद मुक्तक सारगर्भित छंद है, जिसकी कहन काफी कुछ गजल के शेर जैसी ही है। देखा जाय तो ये अपने आप एक छोटी रससिक्त रचना जैसी होती है। ओम नीरव के मुक्तक का उदाहरण देखें:

'आँसुओं का समंदर सुखाया गया/अंत में बूँद भर ही बचाया गया/बूँद वह गुनगुनाने लगी ताल पर/तो उसे गीत में ला छुपाया गया।'

यूँ तो कविता का विस्तार क्षेत्र विराट स्वरूप ले रहा है। स्वतंत्रता के बाद की कविता ने अपना रास्ता खुद बना लिया है। उसे किसी लीक पर चलने के लिए बाध्य नहीं होना पड़ा। कविता की विकास यात्रा देखकर यह कहना तर्कसंगत होगा कि कविता आदमी को आदमी बनाती है। संस्कृति को पोषित करती है। अपने विस्तार में वह इंद्रधनुषी रंग सजाती है और समाज हित के लिए कविता गाती है, गुनगुनाती है। प्रसाद के शब्दों में:-

'जीवन का उद्देश्य नहीं है/शांत भवन में टिक रहना
किंतु पहुँचना उस सीमा तक/जिसके आगे राह नहीं।।'

- ई-1/47, सेक्टर-11
वाई एम सी ए के निकट
फरीदाबाद-121006
मोबाइल: +91 8130812363

स्वातंत्र्योत्तर भारत में राजभाषा हिंदी की उपलब्धियाँ

- सुश्री सुशील कंवर राठौर -

शोध सार:

भाषा मनुष्य के भावों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। बिना भाषा के हम अपने विचारों को व्यक्त नहीं कर सकते। यह किसी समाज व देश की संस्कृति, रीति-रिवाज व मूल्यों की सच्ची परिचायक है। हिंदी आज विश्व में बोली जाने वाली भाषाओं में तीसरे नंबर पर है। हिंदी केवल भारत में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी बोली व समझी जाती है। यहाँ तक कि विदेशों में भी यह पढ़ाई जाती है। आज हिंदी का क्षेत्र अत्यंत व्यापक हो गया है। यह मीडिया, पत्रकारिता, सिनेमा व कंप्यूटर की भाषा भी बन गई है। स्वतंत्रता के बाद हिंदी ने अनेक क्षेत्रों में प्रगति की है और वह उस शिखर पर पहुँच चुकी है, जिससे हर भारतवासी गौरवान्वित महसूस हो सके।

प्रस्तावना:

भाषा वह साधन है, जो किसी समाज व देश की संस्कृति, रीति-रिवाज एवं नैतिक व सामाजिक मूल्यों से परिचय कराती है। मानव ही नहीं, अपित पशु-पक्षियों की भी भाषा होती है, जिससे वे अपने भाव आपस में साझा करते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि भाषा ही वह माध्यम है, जिससे हम परस्पर भावों को समझते हैं।

हिंदी हमारे देश की अस्मिता की भाषा है और संवैधानिक रूप से हमारी राजभाषा भी है। हिंदी सरल व सुगम होने के साथ-साथ वैज्ञानिक भाषा भी है। यह केवल भारत में ही नहीं, विदेशों में भी बोली और समझी जाती है, जो हमारे देश से दूसरे देशों के संबंधों को मजबूत करती है। हिंदी संघ की राजभाषा होने के साथ-साथ राज्यों की राजभाषा व तीन संघ शासित प्रदेशों की प्रमुख राजभाषा है। संविधान की आठवीं अनुसूची में भी हिंदी का प्रमुख स्थान है। संविधान सभा की संस्तुति पर 14 सितंबर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी जानेवाली हिंदी को संविधान में राजभाषा का दर्जा दिया गया।

संविधान के भाग 17 में संबंधित महत्वपूर्ण प्रावधान किये गये। इसी ऐतिहासिक महत्व के कारण 1953 से राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा प्रतिवर्ष 14 सतंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। 2001 की जनगणना के अनुसार लगभग 25.79 करोड़ भारतीय हिंदी का उपयोग मातृभाषा के रूप में करते हैं, जबकि लगभग 42.20 करोड़ लोग इसकी 50 से अधिक बोलियों में से किसी न किसी बोली का प्रयोग करते हैं। हिंदी की प्रमुख बोलियों में अवधी, ब्रज, भोजपुरी, छत्तीसगढ़ी, हरियाणवी, कुमाऊँनी, मगधी व राजस्थानी आदि शामिल हैं। संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 में राजभाषा से संबंधित नियम हैं। 343(1) के अनुसार भारत संघ की राजभाषा हिंदी व लिपि देवनागरी है।

1947 में जब भारत अंग्रेजों के शासन से स्वतंत्र हुआ तो सबसे पहले भारत के सामने भाषा को लेकर एक बड़ा सवाल उठा, क्योंकि भारत में सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। ऐसे में किसे राष्ट्रभाषा चुना जाए, यह एक बड़ा प्रश्न था। काफी विचार मंथन के बाद हिंदी को राजभाषा चुना गया और उसकी लिपि देवनागरी चुनी गई। 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने यह घोषणा की कि हिंदी भारत की राजभाषा होगी और उसकी लिपि देवनागरी होगी। 26 जनवरी को 1950 को संविधान लागू होने पर देश की 14 भाषाओं को आठवीं अनुसूची में रखा गया और आज उनकी संख्या बढ़कर 22 हो गई है।

यद्यपि आज की पीढ़ी अंग्रेजी बोलने में अपने को गौरवान्वित महसूस करती है और लोग अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में पढ़ाने हेतु दाखिला करवाते हैं। जबकि होना यह चाहिए कि हम हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग स्वयं करें और दूसरों को भी हिंदी पढ़ने व बोलने हेतु प्रेरित करें। यद्यपि सरकार इस दिशा में प्रयासरत है कि हिंदी के विस्तार हेतु एक उचित वातावरण तैयार किया जाय। फलत: आज हिंदी भाषा ने हर क्षेत्र में अपना वर्चस्व कायम किया है।

हिंदी प्राचीन काल से ही लोगों के पारस्परिक संपर्क का माध्यम रही है। अनेक संत कवियों ने साहित्य रचना हिंदी में की एवं लोगों का मार्गदर्शन किया। उत्तर भारत ही नहीं, दक्षिण भारत में भी वल्लभाचार्य, रामानुज, रामानंद आदि ने भी हिंदी के द्वारा अपने मतों का प्रचार किया है। हिंदी भाषी राज्यों में भक्त संतों जैसे असम के संकदेव, महाराष्ट्र के ज्ञानेश्वर व नामदेव, गुजरात के नरसी मेहता, बंगाल के चैतन्य महाप्रभु ने भी हिंदी को ही अपने धर्म के प्रचार-प्रसार का माध्यम बनाया। 1816 में विलियम केरी ने लिखा कि 'हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं, बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है।'

1826 ईसवी में हिंदी के पहले समाचार पत्र 'उदंत मार्तंड' का कोलकाता से प्रकाशन हुआ, जो बांग्लाभाषी क्षेत्र था। जबकि उसी कोलकाता में बांग्ला समाचार 1829 में राजा राममोहन द्वारा 'बंगदूत' का प्रकाशन किया गया। अर्थात कोलकाता में हिंदी

समाचार पत्र का प्रकाशन पहले और स्थानीय बांग्ला भाषा के समाचार पत्र का प्रकाशन बाद में होना हिंदी की लोकप्रियता का द्योतक है। हिंदी (खड़ीबोली) में साहित्य सृजन की परंपरा भी उसी समय से रही है। 1877 में श्रद्धाराम फुलेरी ने 'भाग्यवती' नामक उपन्यास लिखा। 1878 में कोलकाता से 'भारतमित्र' का प्रकाशन होने लगा। 1893 में काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई और बाद में यह संस्था देश में हिंदी साहित्य की अग्रणी संस्था बनी। 1918 में इंदौर में आठवें हिंदी सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए महात्मा गांधी ने कहा 'मेरा मत है कि हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा बनने का गौरव प्राप्त हो।' 1918 में महात्मा गांधी द्वारा दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना की गई। इन तमाम गतिविधियों एवं घटनाओं का प्रभाव आगे चलकर आजादी मिलने के बाद संविधान सभा की गतिविधियों एवं संविधान में किये गये प्रावधानों में दिखा। फलत: हिंदी राजभाषा बनी।

संवैधानिक प्रावधानों के बाद देश में हिंदी के विकास के लिए कई राजनैतिक और सामाजिक श्रम के साथ-साथ साहित्यिक व भाषाई श्रम किये गये। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली के विकास के लिए शिक्षा मंत्रालय ने सन 1950 में बोर्ड की स्थापना की। 1952 में बोर्ड के तत्वावधान में शब्दावली निर्माण का कार्य प्रारंभ हुआ। तकनीकी व वैज्ञानिक लेखन को बढ़ावा देने के लिए भरपूर प्रयास किये गये। आज भारत सरकार के वैज्ञानिक व तकनीकी आयोग ने अनेक वैज्ञानिक व तकनीकी विषयों, विधि व कानून आदि सहित कई लाख हिंदी शब्दों का निर्माण व उनका मानकीकरण किया है। फिर भी विश्व की बदलती नियोजक परिस्थितियों के कारण अंग्रेजी पढ़ने व जानने वालों को बेहतर अवसर मिलने लगे और हिंदी व अन्य भारतीय भाषाएँ शिक्षा का माध्यम बनने से वंचित होने लगीं और भारतीय जनमानस रोजी-रोटी के लिए अंग्रेजी के मोह-पाश में फँसकर अपनी भाषाओं की उपेक्षा करने लगा।

लेकिन अब तकनीक आगे बढ़कर आज हिंदी के बचाव में खड़ी हो गयी है। अब देवनागरी लिपि से संबंधित अनेक सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं। यूनिकोड के आने के बाद (लगभग 2010 के बाद) हिंदी समाचार पत्रों का इंटरनेट पर आगमन हुआ। 2008 में सीडैक द्वारा हिंदी श्रुतलेखन की शुरुआत की गई। 2010 में गूगल ट्रांसलेशन टूल आया, जो हिंदी सहित अन्य विदेशी भाषाओं में और इसके विपरीत अनुवाद की सुविधा देने लगा। टच स्क्रीन डिवाइस पर देवनागरी नामक ऑनलाइन हिंदी की बोर्ड की शुरुआत से देश के जन-सामान्य को मोबाइल के जरिए एक खिलौना सा मिल गया। इससे हिंदी जानने वाला यूजर अचानक लेखक, शायर, रिपोर्टर की भूमिका में आ गया।

2011 में वैज्ञानिकी तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने हिंदी शब्दावली ऑनलाइन करने की शुरुआत की। इसी क्रम में हिंदी में ई-मेल और ट्वीटर का आगमन हुआ, जिसने संचार की गति को और सोशल मीडिया की धार को बहुत तेज कर दिया। इस प्रकार 2010 के बाद तो इंटरनेट और मोबाइल के संयोग से हिंदी के प्रचार-प्रसार व संवर्धन को पर लग गये। भारत के बड़े बाजार को देख कर बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में रुचि दिखाने लगे। इसमें भारतीय सॉफ्टवेयर इंजीनियरों की बड़ी भूमिका रही। फायर फॉक्स के मोबाइल ब्राउजर और गूगल मैप हिंदी में आने से हिंदी यूजर्स के लिए कुछ और अतिरिक्त सुविधाएँ मिल गईं। गूगल के स्पीच टू टेक्स्ट एवं हिंदी में वॉइस सर्च ने तो अनपढ़ जनता की अपेक्षाओं को पंख दे दिये।

अब तो ग्रामीण महिलाएँ, विकास और चकाचौंध की दुनिया से अनभिज्ञ दूर-दराज रहने वाले लोग भी यू-ट्यूब में अपने इच्छानुसार बोलकर वीडियो प्राप्त कर रहे हैं और साथ ही अपने वीडियो भी अपलोड कर रहे हैं। वर्तमान में अनेक ऐसी वेबसाइट हैं, जिन पर राजभाषा हिंदी से संबंधित जानकारियाँ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। बहुत से ऐसी वेबसाइट भी हैं, जिन पर दुनिया भर के हिंदी प्रेमी, साहित्यकार और विद्वान जुड़कर हिंदी के साहित्यिक व भाषाई विकास का उपक्रम कर रहे हैं। इन वेबसाइटों पर हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे लघु कथाएँ, कविताएँ, व्याकरण संबंधी जानकारियाँ व तकनीकी लेख उपलब्ध हैं। इस प्रकार आज कंप्यूटर के क्षेत्र में भी हिंदी में अनेक उपलब्धियाँ हासिल कर ली गयी हैं और हिंदी भाषा के माध्यम से कंप्यूटर पर कार्य आसानी से किया जा रहा है।

आज हिंदी न केवल पढ़ाई-लिखाई के क्षेत्र में अपितु विज्ञान, कंप्यूटर, तकनीक, सिनेमा, मीडिया आदि में अपना विशिष्ट स्थान रखने लगी है। महात्मा गांधी जी ने भी हिंदी भाषा को स्वराज का हिस्सा माना था। हिंदी हमारे देश की पहचान ही नहीं, अपितु हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति और सस्कारों की संवाहक और परिचायक भी है। हिंदी एक विशाल जनसमूह की भाषा है, जो सीमाओं का बंधन तोड़ कर आज वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना चुकी है। इसलिए हमें स्वयं इसका प्रयोग करना चाहिए और औरों को भी हिंदी के उपयोग के लिए प्रेरित करना चाहिए, ताकि हिंदी को वह स्थान मिल सके, जिसकी वास्तव में वह हकदार है। हमारा भारतीय होने के नाते यह कर्तव्य बनता है कि हम अपनी राष्ट्रभाषा को उसका असली स्थान दिलवाने में अपना भरपूर सहयोग दें।

- शोधार्थिनी
मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय
उदयपुर, राजस्थान
मोबाइल: +91 8890298514

कोकिंग कोयला क्षेत्र में महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

केंद्रीय इस्पात और नागरिक उड्डयन मंत्री श्री ज्योतिरादित्य एम सिंधिया की अध्यक्षता में 08 अगस्त, 2022 को एकीकृत इस्पात संयंत्रों एवं माध्यमिक इस्पात उद्योग के लिए गठित दो सलाहकार समितियों की बैठक संपन्न हुई। इस अवसर पर मंत्री महोदय ने इस्पात क्षेत्र की सफलता के लिए हितधारकों की सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता पर जोर दिया। साथ ही उन्होंने हितधारकों द्वारा अपेक्षित कार्रवाई की संभावित प्रक्रिया सुनिश्चित करने की सलाह दी। बैठक में इस्पात एवं ग्रामीण विकास राज्य मंत्री श्री फग्गन सिंह कुलस्ते भी उपस्थित थे।

इस्पात मंत्रालय की संसदीय सलाहकार समिति की बैठक संपन्न

06 मई, 2022 को शिमला में आयोजित इस्पात मंत्रालय की संसदीय सलाहकार समिति की बैठक में 'परिवर्तन का दौर, हरित इस्पात की ओर' विषय पर विचार-विमर्श किया गया। बैठक में तत्कालीन केंद्रीय इस्पात मंत्री श्री रामचंद्र प्रसाद सिंह ने हितधारकों से हरित इस्पात उत्पादन के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु एक समयबद्ध कार्य योजना के विकास की अपील की। बैठक में लौह उत्पादन में ग्रीन हाइड्रोजन के उपयोग एवं सीसीयूएस प्रौद्योगिकी के उपयोग के माध्यम से कार्बन उत्सर्जन को कम करने की संभावनाओं पर विचार किया गया।

हरित एवं स्वच्छ इस्पात उत्पादन में निजी कंपनियों का योगदान

भारतीय इस्पात उद्योग के हितधारकों के साथ नई दिल्ली में 20 अप्रैल, 2022 को आयोजित बैठक में तत्कालीन केंद्रीय इस्पात मंत्री श्री रामचंद्र प्रसाद सिंह ने अगले 25 वर्ष के अमृत काल के दौरान देश में 500 मिलियन टन हरित एवं स्वच्छ इस्पात उत्पादन क्षमता की प्राप्ति में योगदान देने हेतु निजी इस्पात क्षेत्र की कंपनियों का आह्वान किया। उन्होंने कंपनियों को मूल्यवर्धित इस्पात उत्पादन एवं निर्यात हेतु प्रेरित किया। बैठक में टाटा स्टील, जेएसडब्ल्यू, जेएसपीएल, जेएसएल के प्राधिकारी, इस्पात निर्माता संघों के प्रतिनिधि, इस्पात मंत्रालय के वरिष्ठ प्राधिकारी उपस्थित थे।

केंद्रीय सार्वजनिक उपक्रमों के पूँजीगत परिव्यय की समीक्षा

वर्ष 2022-23 के दौरान पूँजीगत परिव्यय के लक्ष्यों की प्राप्ति के क्रम में इस्पात क्षेत्र के केंद्रीय सार्वजनिक उपक्रमों की योजनाओं की के आकलन हेतु 19 अप्रैल, 2022 को आयोजित बैठक में तत्कालीन केंद्रीय इस्पात मंत्री श्री रामचंद्र प्रसाद सिंह ने इस्पात उत्पादन क्षमता विस्तारण, संयंत्र की इकाइयों के आधुनिकीकरण एवं पर्यावरण मैत्री प्रौद्योगिकी के अनुसरण हेतु पूँजीगत व्यय के समय पर उपयोग की सलाह दी। कार्यक्रम में इस्पात मंत्रालय के साथ-साथ सेल, आर आई एन एल, एन एम डी सी, के आई ओ सी एल, मॉयल, मेकॉन के वरिष्ठ प्राधिकारी उपस्थित थे।

संगठन की 40वीं वार्षिक आम बैठक आयोजित

संगठन की 40वीं वार्षिक आम बैठक 28 सितंबर को आयोजित की गयी। इस्पात मंत्रालय के अवर सचिव श्री एस नारायणस्वामी ने नई दिल्ली से वीडियो कान्फरेंसिंग के माध्यम से बैठक में भाग लिया। अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री अतुल भट्ट ने सूचित किया कि कंपनी ने वर्ष 2021-22 के दौरान पिछले वर्ष की तुलना में 57% वृद्धि के साथ 28,215 करोड़ रुपये का अब तक का सर्वोच्च कारोबार किया। उन्होंने बताया कि कंपनी द्वारा वर्ष के दौरान इस्पात उद्योग में ही सर्वोच्च 5.77 मिलियन टन तप्त धातु का उत्पादन किया गया। बैठक में निदेशक गण, स्वतंत्र निदेशक गण, सनदी लेखाकार, सांविधिक लेखाकार उपस्थित थे।

आर आई एन एल में स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन

संगठन द्वारा 15 अगस्त को उक्कुनगरम में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री अतुल भट्ट ने समारोह में उपस्थित सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा कि 'आजादी का अमृत महोत्सव' एक जन आंदोलन है, जिससे स्थानीय स्तर पर छोटे-छोटे बदलावों से उल्लेखनीय प्रगति हासिल की जा सकती है। समारोह में सभी गणमान्य अतिथियों, श्रमिक संघों, स्टील एक्जेक्यूटिव असोसिएशन कार्यालय सहायकों एवं अन्य संघों के प्रतिनिधियों ने गुब्बारे छोड़े। कार्यक्रम में विस्टील महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती नूपुर भट्ट, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के कमांडेंट उपस्थित थे।

कंपनी ने एस टी पी आई के साथ समझौता ज्ञापन किया

आर आई एन एल, एस टी पी आई, एस टी पी आई नेक्स्ट ने इंडस्ट्री 4.0 (कल्पतरु) सेंटर फॉर एक्सेलेंस के माध्यम से कंपनी एवं परित: क्षेत्रों में स्थित अन्य उद्योगों के नवाचार एवं स्टार्टप कार्यों को बढ़ावा देने हेतु 18 जुलाई को समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया। अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री अतुल भट्ट ने कहा कि सेंटर फॉर एक्सेलेंस की स्थापना से भारत सरकार के 'आत्मनिर्भर भारत' के कार्यान्वयन में सहयोग मिलेगा। सी आई आई एवं आई टी ए ए पी जैसे प्रमुख संस्थान सेंटर फॉर एक्सेलेंस के सदस्य होंगे, जो स्टार्टप्स के विकास हेतु अपेक्षित सहयोग प्रदान करेंगे।

आर आई एन एल स्टार परफार्मेंस अवॉर्ड से सम्मानित

संगठन के विपणन विभाग के अंतरराष्ट्रीय व्यापार प्रभाग वर्ष 2018-19 के दौरान व्यापार उत्कृष्टता के लिए स्टार परफार्मेंस अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार 29 जुलाई को बेंगलुरु में आयोजित कार्यक्रम में कर्नाटक के माननीय मुख्यमंत्री श्री बसवराज बोम्मई ने प्रदान किया। यह पुरस्कार अंतरराष्ट्रीय व्यापार में उत्कृष्ट निष्पादन दर्ज करनेवाले संगठन को दिया जाता है। इस उपलब्धि हेतु अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री अतुल भट्ट एवं निदेशक (वाणिज्य) श्री डी के मोहंती ने विपणन समूह एवं आर आई एन एल समूह को वधाई दी।

उद्योग-4 कल्पतरु के उद्यमिता केंद्र का शुभारंभ

20 सितंबर को संगठन के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री अतुल भट्ट, सॉफ्टवेअर टेक्नॉलॉजी पार्क ऑफ इंडिया के महानिदेशक एवं एस टी पी आई नेक्स्ट के अध्यक्ष श्री अरविंद कुमार ने उद्योग 4.0 - कल्पतरु के प्रतिष्ठित उद्यमिता केंद्र का शुभारंभ किया। श्री अतुल भट्ट ने कहा कि आर आई एन एल आत्मनिर्भर भारत के तहत स्टार्टप्स को बढ़ावा देने हेतु प्रतिबद्ध है। उन्होंने एन टी पी सी, एच पी सी एल, बी ए आर सी, एच एस वाई, पत्तन न्यास, बी एच ई एल संगठनों से विभिन्न कार्यालयीन समस्याओं के समाधान हेतु कल्पतरु की सेवाओं का उपयोग करने की सलाह दी।

विप्स स्थापना दिवस आयोजित

आर आई एन एल में 09 अगस्त को विप्स स्थापना दिवस की रजत जयंती समारोह मनाया गया। अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री अतुल भट्ट ने इस अवसर पर महिला कर्मचारियों को बधाई दी। गीतम इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज एंड रिसर्च की प्रो-वाइस चांसलर डॉ गीतांजलि बैटमैनबाने कार्यक्रम की सम्मान्य अतिथि थीं। कार्यक्रम में संगठन के निदेशक गण, मुख्य सतर्कता अधिकारी, विस्टील महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती नूपुर भट्ट, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के कमांडेंट, वरिष्ठ प्राधिकारी, श्रमिक संघों, स्टील एक्जेक्यूटिव असोसिएशन, अनुसूचित जाति व जनजाति संघ के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

तंबाकू से होनेवाले नुक्सान के प्रति जागरूकता कार्यक्रम

'आजादी के अमृत महोत्सव' के तहत आर आई एन एल के विशाखा स्टील जनरल अस्पताल द्वारा होमी भाभा कैंसर हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के सहयोग से तंबाकू से होनेवाले नुक्सान के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाने हेतु 13 जुलाई को उक्कु क्लब में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री अतुल भट्ट ने इसका उद्घाटन किया। कार्यक्रम में निदेशक (एचबीसीएच व आरसी) डॉ महंतशेट्टी, संगठन के निदेशक गण, मुख्य सतर्कता अधिकारी, वी एम एस की अध्यक्षा श्रीमती नूपुर भट्ट, निवारक ऑंकालॉजी विभाग के सहायक आचार्य डॉ डोलोरेसा फेर्नांडज, श्रमिक संघों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

आर आई एन एल ने कर पूर्व लाभ हासिल किया

09 अप्रैल को उक्कु क्लब में आयोजित कार्यक्रम में अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री अतुल भट्ट ने वरिष्ठ प्राधिकारियों एवं विभिन्न श्रमिक संघों के नेताओं को संबोधित किया और कहा कि 'वर्ष 2021-22 टर्नएराउंड वर्ष रहा और 6 वर्ष के अंतराल पश्चात 835 करोड़ रुपये का कर पूर्व लाभ हासिल किया गया। श्री भट्ट ने इसके लिए संकर्म समूह को बधाई दी। कार्यक्रम में निदेशक गण, मुख्य सतर्कता अधिकारी, वरिष्ठ प्राधिकारी, विप्स, स्टील एक्जेक्यूटिव असोसिएशन, श्रमिक संघों, अनुसूचित जाति व जनजाति, अन्य पिछड़े वर्ग के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा जयपुर कार्यालय का निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा 24 अगस्त को संगठन के जयपुर स्थित शाखा बिक्री कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन का निरीक्षण किया गया। इससे पहले इस्पात मंत्रालय के राजभाषा प्राधिकारियों द्वारा मंत्रालय के अधीनस्थ सभी कार्यालयों के प्रतिनिधियों के साथ एक समीक्षा बैठक आयोजित की गयी। तत्पश्चात संसदीय राजभाषा समिति के माननीय सदस्यों ने सभी कार्यालयों के निष्पादन की अलग से समीक्षा की और राजभाषा के बेहतर कार्यान्वयन हेतु अपेक्षित मार्गदर्शन एवं सुझाव दिये। समिति के माननीय सदस्यों द्वारा जयपुर शाखा कार्यालय में राजभाषा प्रयोग के प्रति संतुष्टि व्यक्त की।

'काव्य संध्या' आयोजित

आर आई एन एल एवं नराकास (उपक्रम), विशाखपट्टणम के संयुक्त तत्वावधान में 30 अप्रैल को उक्कुनगरम में 'काव्य संध्या' आयोजित की गई। अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री अतुल भट्ट ने औद्योगिक जीवन शैली में मनोरंजन कार्यक्रमों की आवश्यकता का उल्लेख किया। इस्पात मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति के माननीय सदस्य श्री गोपाल कृषन फरलिया, श्री शंकरलाल पुरोहित, श्री देशपाल सिंह राठौर, डॉ रिंकू कुमारी कार्यक्रम के विशेष अतिथि थे। इसमें प्रतिष्ठित कवि कोटा से श्री कुँवर जावेद, पीलीभीत से डॉ प्रणव शर्मा शास्त्री, बरेली से डॉ संजय पांडेय 'गौहर' एवं डॉ रंजन वर्मा 'विशद', अल्मोड़ा से डॉ दीपा गुप्ता पधारे थे।

इस्पात मंत्रालय द्वारा संगठन में राजभाषा प्रयोग की समीक्षा

इस्पात मंत्रालय के मुख्य लेखा नियंत्रक एवं राजभाषा प्रभारी श्री साकेश प्रसाद सिंह, उप निदेशक (राजभाषा) श्रीमती आस्था जैन एवं वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी श्री सौरभ आर्या द्वारा 06 जून को संगठन में राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा की गयी। संगठन के निदेशक (वाणिज्य) व निदेशक (कार्मिक)-अतिरिक्त प्रभार श्री देव कल्याण मोहंती ने समीक्षा प्राधिकारियों का स्वागत किया एवं संगठन में राजभाषा के बेहतर कार्यान्वयन हेतु उनसे प्राप्त सहयोग के प्रति आभार व्यक्त किया। संगठन के विभिन्न विभागों के हिंदी समन्वयकों ने अपने-अपने कार्य में राजभाषा प्रयोग का विवरण प्रस्तुत किया।

इस्पात मंत्रालय द्वारा पटना शाखा कार्यालय का निरीक्षण

06 जुलाई को इस्पात मंत्रालय के मुख्य लेखा नियंत्रक एवं राजभाषा प्रभारी श्री साकेश प्रसाद सिंह एवं सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री रजनीश कुमार द्वारा पटना स्थित शाखा बिक्री कार्यालय में राजभाषा प्रयोग का निरीक्षण किया गया। श्री साकेश प्रसाद सिंह ने इस अवसर पर प्रतिभागियों को राजभाषा प्रयोग की आवश्यकता का उल्लेख किया। वरिष्ठ शाखा प्रबंधक श्री कुसुम कांत टोपनो एवं कार्यालय के अन्य सभी सदस्यों ने निरीक्षण प्राधिकारियों को अपने-अपने कार्यक्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग का विवरण प्रस्तुत किया। निरीक्षण प्राधिकारी कार्यालय के निष्पादन के प्रति संतुष्टि व्यक्त की।

गतिविधियाँ

संगठन में हिंदी माह समारोह आयोजित

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड में इस वर्ष हिंदी माह मनाया गया, जिसके दौरान पूरे माह में कर्मचारियों और उक्कुनगरम एवं परित: जिला परिषद हाई स्कूलों के बच्चों के लिए विविध गतिविधियाँ आयोजित की गयीं। इस्पात गलनशाला, यंत्रीकरण, सिंटर संयंत्र और कोक ओवेन विभागों में हिंदी कार्यान्वयन दिवस आयोजित किया गया। विभागों के कर्मियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति और ई-ऑफीस में हिंदी के प्रयोग की जानकारी दी गयी।

07 सितंबर को क्षेत्रीय, संपर्क व शाखा बिक्री कार्यालयों के कर्मियों के लिए ऑनलाइन में हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें वित्तीय वर्ष की प्रथम तिमाही में कार्यालयों के निष्पादन की समीक्षा की गई। अनुवाद का महत्व, वेबसाइट व राजभाषा पोर्टल, ई-ऑफीस, ई-अनुवाद के माध्यम से हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन पर प्रस्तुतीकरण दिये गये। उक्कुनगरम स्थित स्कूलों एवं समीप के जिला परिषद स्कूलों के बच्चों से हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता के लिए प्रविष्टियाँ प्राप्त की गयीं। 9वीं से 12वीं कक्षाओं के छात्रों के लिए 'आजादी के 75 वर्ष : शिक्षा क्षेत्र की चुनौतियाँ' और 6वीं से 8वीं कक्षाओं के छात्रों के लिए 'शिक्षा माध्यमों में भाषाओं का महत्व' विषय दिये गये। 12 सितंबर को उक्कुनगरम के स्कूलों में 9वीं से 12वीं कक्षाओं तथा 6वीं से 8वीं कक्षाओं के छात्रों के लिए सीनियर और जूनियर दो श्रेणियों में हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

14 सितंबर को सूरत के पंडित दीनदयाल इंडोर स्टेडियम में आयोजित राष्ट्रीय हिंदी दिवस समारोह 2022 में संगठन को 'ग' क्षेत्र के अंतर्गत राजभाषा कार्यान्वयन एवं गृहपत्रिका 'सुगन्ध' के लिए प्रथम पुरस्कार प्रदान किये गये। अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक एवं सभी निदेशकगण ने आर आई एन एल की पूरी टीम को हार्दिक बधाई दी। उसी दिन मुख्यालय में निदेशक (परियोजना) श्री के के घोष द्वारा अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक के संदेश का विमोचन किया गया और हिंदी दिवस के अवसर पर सभी क्षेत्रीय, संपर्क व शाखा बिक्री कार्यालयों में 'राजभाषा प्रश्नोत्तरी' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 19 सितंबर को जिला परिषद हाई स्कूलों के छात्र-छात्राओं के लिए 'कविता पाठ प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया।

21 सितंबर को मुख्यालय के कर्मचारियों के लिए टिप्पण व प्रारूप लेखन व अनुवाद एवं 26 सितंबर को अंताक्षरी प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिनमें 50 कर्मचारियों ने भाग लिया। 30 सितंबर को समापन समारोह आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री अतुल भट्ट, विशिष्ट अतिथि के रूप में मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन)-निगमित सेवा श्री जी गाँधी और मान्य अतिथि के रूप में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की हिंदी शिक्षण योजना के सहायक निदेशक मुहम्मद एस एम बाषा जी उपस्थित हुए। विविध प्रतियोगिताओं के सभी विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया।

क्षेत्रीय, संपर्क एवं शाखा कार्यालयों में हिंदी दिवस आयोजित

देश भर में राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के 4 क्षेत्रीय, 4 संपर्क कार्यालय एवं 22 शाखा बिक्री कार्यालय व्याप्त हैं, जहाँ 14 सितंबर को राष्ट्रीय हिंदी दिवस के अवसर पर 'हिंदी दिवस' मनाया गया। इस अवसर पर सभी कार्यालयाध्यक्षों ने कर्मचारियों को संबोधित किया। 'हिंदी दिवस' के अवसर पर अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक के संदेश का पठन किया गया। कार्यालयों के प्रमुखों ने कर्मचारियों को अपने दैनिक कामकाज में हिंदी के अधिकधिक प्रयोग को सुनिश्चित करते हुए राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के शतप्रतिशत अनुपालन, हिंदी में प्राप्त पत्रों एवं ई-मेल के उत्तर हिंदी में दिये जाने की आवश्यकता का उल्लेख किया।

कर्मचारियों को वर्तमान में राजभाषा के प्रयोग के लिए उपलब्ध विभिन्न ई-टूल्स, ई-ऑफीस में हिंदी टिप्पणियों के प्रयोग की जानकारी दी गयी। राजभाषा संबंधी लक्ष्यों की प्राप्ति में सहयोगी ई-अनुवाद, गूगल अनुवाद, माइक्रोसॉफ्ट अनुवाद जैसे मशीनी अनुवाद टूल्स के उपयोग का विवरण दिया गया।

तत्पश्चात सभी कार्यालयों के कर्मचारियों के लिए राजभाषा अधिनियम एवं नियम के विभिन्न प्रावधानों से संबंधित प्रश्नों को शामिल करते हुए 'राजभाषा प्रश्नोत्तरी' प्रतियोगिता आयोजित की गयी, जिसमें कर्मचारियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

नई दिल्ली स्थित क्षेत्रीय कार्यालय (उत्तर) के क्षेत्रीय प्रबंधक व महाप्रबंधक (विपणन) श्री संजय गर्ग ने कार्यालय के सभी कर्मचारियों को संबोधित किया और वर्ष 2021-22 के लिए संगठन को राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु प्रतिष्ठित 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' (प्रथम पुरस्कार) की प्राप्ति के उपलक्ष्य में क्षेत्रीय कार्यालय के साथ-साथ समूचे संगठन के कर्मचारियों को बधाई दी। उन्होंने संगठन की गृह-पत्रिका 'सुगन्ध' पत्रिका को 2021-22 के लिए 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' (प्रथम पुरस्कार) की प्राप्ति के उपलक्ष्य में कर्मचारियों को बधाई दी और कर्मचारियों एवं उनके आश्रित परिवार के सदस्यों को अपनी सृजनात्मक लेखनी के माध्यम से पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास हेतु अभिप्रेरित किया।

कोलकाता स्थित क्षेत्रीय कार्यालय (पूर्व) के क्षेत्रीय प्रबंधक श्रीमती वंदना मित्रा ने कर्मचारियों को राजभाषा के बेहतर कार्यान्वयन में संसदीय राजभाषा समिति, हिंदी सलाहकार समिति के माननीय सदस्यों, गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग एवं इस्पात मंत्रालय के प्राधिकारियों से प्राप्त मार्गदर्शन एवं बहुमूल्य योगदान का उल्लेख किया। नागपुर शाखा बिक्री कार्यालय के वरिष्ठ शाखा प्रबंधक श्री ए वी एस एस शर्मा एवं अहमदाबाद शाखा बिक्री कार्यालय के वरिष्ठ शाखा प्रबंधक श्री अमित गुप्ता ने इस अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं में कर्मचारियों को बढ़चढ़ कर भाग लेने हेतु कर्मचारियों को अभिप्रेरित किया।

संगीत सरिता

(की बोर्ड सीखने की प्रविधि)

'सुगन्ध' के इस अंक में 'जवानी दिवानी' फिल्म से 'सुभानल्लाह... जो हो रहा है' गाने का नोटेशन नीचे प्रस्तुत है, जो राग 'केदार' पर आधारित है। यह कल्याण थॉट का राग है। यह राग बरसात के मौसम में गाया जाता है। 'हमीर', 'शान कल्याण' इसके समान राग हैं। 'दर्शन दो घनश्याम... नाथ मोरी अखियाँ प्यासी रे' इसी राग पर आधारित गीत है।

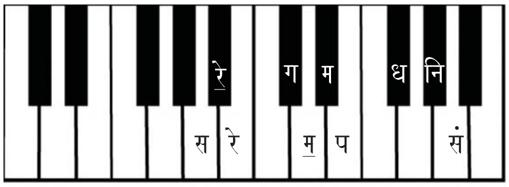

इस राग में तीव्र मध्यम, मं रे सा, मं प म रे सा का प्रयोग होता है।

यह गाना 'A Major' में बजता है।

आरोह: सा म ग प ध नी सां अवरोह: सां नि ध प म प म रे सा

पकड़ : सा म ग प मं रे सा

इस गाने का नोटेशन सुश्री वी अमिता ने दिया है और राग व स्वरों की जानकारी सी आर जी (रीफ्रैक्टरी) के उप महाप्रबंधक श्री आर एस गोने जी ने दी है।

सा रे ग गा म गा सा रे ग गा म गा रे रे रे रे रे रे ग रे स नि धा पा ध स रे गा
एक दिन कभी जो खुद को तराशे मेरी नजर से तू जरा हाय रे
सा रे ग गा म गा सा रे ग गा म गा रे रे रे रे रे रे ग रे स नि धा पा पा ध स रे ग मा
आँखों से तेरी क्या क्या छिपा है तुझको दिखाऊँ मैं जरा हाय रे
मा मा म प ध धा पा म पा पा म पा रे ग म गा मा मा म प ध धा ध सं नि पा
इक अनकही सी दास्ताँ दास्ताँ कहने लगेगा आईना
प पा पा सां नी धा पा प ध पा पा ग रे स रे गा प ध पा पा ग रे स रे गा पा प धा नी पा रे रे ग रे स सा
सुभानल्लाह जो हो रहा है पहली दफा है वल्लाह ऐसा हुआ
प पा पा सां नी धा पा प ध पा पा ग रे स रे गा प ध पा पा ग रे स रे गा पा प धा नी पा रे रे ग रे स सा
सुभानल्लाह जो हो रहा है पहली दफा है वल्लाह ऐसा हुआ
सा सां सां नि सं रें सं नि धा पा...
आ......
गा... ग रे रे ग प मा गा रे स नी नी स ग रे ग गा रे रे सा ग रे रे ग प मा गा रे स नी नी स ग रे ग गा रे रे सा
हो... मेरी खामोशी से बातें चुन लेना उनकी डोरी से तारीफें बुन लेना
धा प म प धा सां रेंगां मं गं रें धा प म प धा सां रें गां मं गं रें
कल नहीं थी जो आज लगती हूँ
रे रे ग रे ग रे स नि धा रे रे ग रे ग मा गा रे रे रे ग रे ग रे स नि धा रे रे स गा मा
तारीफ मेरी है ख्वामख्वाह तोहफा है तेरा मेरी अदा
सा रे ग गा म गा सा रे ग गा म गा रे रे रे रे रे रे ग रे स नि धा पा ध स रे गा
एक दिन कभी जो खुद को तराशे मेरी नजर से तू जरा हाय रे
सा रे ग गा म गा सा रे ग गा म गा रे रे रे रे रे रे ग रे स नि धा पा पा ध स रे ग मा
आँखों से तेरी क्या क्या छिपा है तुझको दिखाऊँ मैं जरा हाय रे
मा मा म प ध धा पा म पा पा म पा रे ग म गा मा मा म प ध धा ध सं नि पा
इक अनकही सी दास्ताँ दास्ताँ कहने लगेगा आईना
प पा पा सां नी धा पा प ध पा पा ग रे स रे गा प ध पा पा ग रे स रे गा पा प धा नी पा रे रे ग रे स सा
सुभानल्लाह जो हो रहा है पहली दफा है वल्लाह ऐसा हुआ
प पा पा सां नी धा पा प ध पा पा ग रे स रे गा प ध पा पा ग रे स रे गा पा प धा नी पा रे रे ग रे स सा
सुभानल्लाह जो हो रहा है पहली दफा है वल्लाह ऐसा हुआ
प गा म ग रें रें गं मा गं रें सा रें
हा...

एक मैसेज

- सुश्री पूजा भारद्वाज -

शाम को चाय के वक्त जैसे ही युविका ने फोन हाथ में लिया, स्क्रीन पर एक मैसेज नजर आया। 'चुलबुली... कैसी हो?' मैसेज देखते ही शरीर में खून का दौरा बढ़ गया। यह तो उसके स्कूल के दिनों का नाम था, दोस्तों द्वारा दिया गया। उसने तुरंत मैसेज पर क्लिक किया। रेणु यादव का मैसेज था। रेणु यादव... नाम पढ़ते ही एक छवि आँखों की गैलरी पर उतर आई। फेसबुक पर प्रोफाइल चेक की, तो वही थी जिसका होना था। रेणु, उसके स्कूल के दिनों की बहुत अच्छी दोस्त थी।

'ओ... रियली?'

वह विस्मय और प्रसन्नता के मिश्रित भाव से फेसबुक प्रोफाइल पर मौजूद रेणु की फोटोज को बार-बार ऊपर नीचे कर उनमें अपनी रेणु तलाश रही थी। पहचानना थोड़ा मुश्किल हो रहा था। क्योंकि उम्र और वक्त के साथ सीरतें ही नहीं, सूरतें भी बहुत कुछ बदल जाती हैं। उसने देखा, फ्रेंड रिक्वेस्ट भी आई हुई थी। तुरंत एक्सेप्ट की और बातों का सिलसिला आगे बढ़ाया।

युविका - 'मैं ठीक हूँ रेणु! तुम कैसी हो?'

सामने वाली भी शायद इंतजार में ही थी। तुरंत रिप्लाई आया - 'एकदम बढ़िया। तुम तो भूल ही गई थी। है ना?'

युविका - 'अरे नहीं।'

रेणु - 'नहीं, क्या?'

'इतने सालों तक कोई खोज खबर नहीं? नंबर भी नहीं लगता तेरा।'

युविका - 'सॉरी यार।'

'वह मैंने नंबर बदल लिया था शादी के बाद और फिर सोचा सबको बताऊँगी नये नंबर के बारे में। लेकिन शादी ने ऐसा व्यस्त किया कि कुछ याद न रहा', उसने अपनी सफाई दी।

रेणु - 'हम्म, मुझे भी यही लगा था। इसलिए बड़ी कोशिश के बाद फेसबुक पर खोजा तुझे।'

युविका - 'अच्छा सुन, यह मेरा फोन नंबर है, सेव कर ले और अपना बता दे। कॉल करती हूँ। अभी इतने सालों की बातचीत चैटिंग से नहीं होगी यार, मुझसे। ओके।'

रेणु - 'ओके।'

युविका - 'आई कॉल यू नाउ।' उसने तुरंत रेणु के नंबर सेव कर डायल कर दिया। 'हैलो...'

रेणु - 'हैलो। तेरी आवाज कितनी बदल गई है यार!'

युविका - 'तेरी भी। (एक लंबी सांस लेकर) सब कुछ ही तो बदल गया है।'

रेणु - 'हाँ, ये तो है।'

युविका - 'क्या करती है आजकल?'

रेणु - 'क्लर्क हूँ बैंक में और तू?'

युविका - 'मैं पढ़ाती हूँ बी.एड. कॉलेज में।'

रेणु - 'गुड..., और बता तेरे पति, बच्चे कैसे हैं।'

युविका - 'सब अच्छे हैं और तेरे?'

रेणु - 'वे सब भी बढ़िया हैं। ...और सुना कुछ।'

युविका - 'क्या सुनाऊँ? तू बता ना कुछ। कुछ है ही नहीं सुनाने को। बस एक नॉर्मल सी लाइफ और वही रोज सा रोटीन।'

रेणु - 'सबका यही हाल है, यार! (कुछ मिनट की खामोशी ठहर गई दोनों के बीच) हैलो?... क्या हुआ? आवाज आ रही है?'

युविका - 'हम्म... कुछ नहीं बस सोचने लगी थी।'

रेणु - 'क्या?'

युविका - 'यही कि जब सामने थे तो इतनी बातें थीं कि दिन के छः घंटे भी कम लगते थे और आज जब पूरे ग्यारह सालों बाद बात हो रही है तो हम शब्द ढूँढ़ रहे हैं बात करने को। क्योंकि कुछ है ही नहीं बताने के लिए।'

रेणु - 'होता है यार। जिंदगी की बढ़ती जरूरतें अक्सर बातों की लंबाई कम कर देती हैं।'

युविका - 'अरे वाह! बड़ी समझदार हो गई तू तो।' (और दोनों साथ हँसती हैं)

रेणु - 'अच्छा ये बता तू फिलहाल स्कूल की किसी भी दोस्त के साथ संपर्क में नहीं है क्या?'

युविका - 'कॉलेज के शुरुआती सालों में रही थी तुम लोगों के ही साथ। फिर धीरे-धीरे यह साथ बिनचाहे, बिनकहे ही दरकने लगे... और तू?'

रेणु - 'मेरा भी ज्यादा किसी से संपर्क नहीं रहा, शादी के बाद। हाँ, लेकिन अब कभी-कभार कोई याद आ जाती है तो ढूँढ़ लेती हूँ सोशल मीडिया पर। मिल जाती है तो अच्छा लगता है और नहीं मिलती तो सब्र रखती हूँ।'

युविका - 'वाह! तेरा यह तरीका अच्छा है। ये बता माया, मोनिका, नीरजा और मानवी वो सब कैसी हैं? तुम लोगों के तो घर आसपास ही थे, मिलती तो होगी कभी एक दूसरे से?'

रेणु - 'माया और नीरजा की शादी हो गई। माया टीचर है और नीरजा होममेकर। मोनिका का परिवार कॉलेज के दिनों में

ही दिल्ली शिफ्ट हो गया था। उसके बाद कुछ खास संपर्क नहीं रहा। अभी कुछ दिन पहले फेसबुक पर ढूंढ़ कर बात की थी। कोरोना ने उससे उसके पति व बेटी को छीन लिया। जिंदगी फिर से पटरी पर बैठाने की कोशिश में है वह।'

युविका - 'ओ माय गॉड। इतना सब कुछ हो चुका यार मोनिका के साथ और मुझे पता ही नहीं।'

रेणु - 'हाँ! हमें कितना कुछ पता होकर भी बहुत कुछ पता ही नहीं होता यार!'

युविका - 'हाँ यार और मानवी? वह कहाँ रहती है?'

रेणु - (गहरी साँस लेकर) 'उसका पता बदल गया है आजकल। इस दुनिया में नहीं रहती वो अब।'

युविका - 'मतलब?'

रेणु - 'शी इज नो मोर, युविका।'

युविका - 'क्या...?'

रेणु - 'हाँ।'

युविका - 'कब? कैसे... हुआ ये सब?'

रेणु - '5 साल पहले एक कार एक्सीडेंट में। ड्यूटी से घर आ रही थी, पीछे से ट्रक ने टक्कर मार दी और मौके पर ही...(कुछ देर की चुप्पी के बाद) हमेशा मौकों से चूकने वाली मौके पर ही चल बसी।'

मानो कुछ शब्द युविका के गले में अटक गए और आँसू आँखों की दहलीज पर ही सिमट कर बैठ गए। कुछ मिनट शब्दों की वीरानी के बाद उसने काँपते लहजे में कहा 'रेणु, मैं कल बात करती हूँ। अभी मन नहीं है। ओके।'

रेणु उसकी मन:स्थिति समझ गई। उसने भी फोन रखना ही मुनासिब समझा। 'ओके, रखती हूँ। बाय...।'

युविका - 'बाय।'

फोन रखने के पंद्रह मिनट तक वह लगभग शून्य भावस्थिति में ही रही। सास की चाय के लिए आवाज पर उसे लगा जैसे वह एक लंबी थकान भरी नींद के बीच में से जागी हो। वह अनमने भाव से उठी और चाय बनाने लगी। चाय बनाते समय भी उसका मन यादों के उपवन में टहल रहा था। वे छ: सहेलियाँ - मोनिका, नीरजा, मानवी, रेणु, माया और वह। खूब बातूनी और पढ़ने में अच्छी सभी। क्या दिन थे वे? जीवन के सुनहरे दिन।

चाय गैस पर उबाल खा रही थी और विचार उसके दिमाग में। सब कुछ कैसे बदल जाता है हमारी प्राथमिकताएँ, स्वभाव, रुचियाँ, आदतें कभी एक जैसी नहीं रहतीं। जैसे हर मौसम में हवा अपना मिजाज बदलती है, ऐसे ही जिंदगी भी है।

कुछ भी तो स्थाई नहीं है सिवाय जरूरतों के। जहाँ हमारी जरूरतें होती हैं, हम वहीं होते हैं। इसके अलावा सब जीने के बहाने भर हैं।

एक वक्त हमें लगता है कि इस इंसान या चीज के बिना हम कभी नहीं रह पायेंगे। मगर सालों बाद उस इंसान या चीज का होना या न होना एक तरह से महत्वहीन हो जाता है। अगर है तो बस है, नहीं है, तो क्या फर्क सिवाय यादों के बाग में एक पौधा और रोप दिये जाने के?

जीवन को लेकर दार्शनिक होते उसके विचारों पर विराम तब लगा, जब गैस पर रखी चाय पतीले से बाहर आ उसके पैरों पर आ गिरी।

हल्की सी चीख के साथ वह संभली। गैस बंद कर चाय छान कर सास को दे, अपने कमरे में बेड पर आकर पसर गई। मानवी जो इतने सालों से कहीं नहीं थी उसकी दुनिया में, इस समय उसके चारों ओर जैसे बस गई थी। उसने आँखें बंद कीं तो मानवी का प्यारा भोला चेहरा, दो लंबी चोटियाँ, आँखों के आगे आ गईं।

अब पलकों की दहलीज पर सिमटे बैठे आँसुओं के लिए आँखों में ठहरने की जगह नहीं बची। वो चुपचाप बाहर आ लुढ़के और लुढ़कते रहे।

जब तक भीतर की ग्लानि पिघल न गई, वह रोती रही। जब मन का आंगन पीड़ा के नीर से धो-पोंछकर साफ हो गया तो वह उठी और बालकनी की ओर चल पड़ी अपना फोन लेने।

फोन हाथ में लेकर उसने फेसबुक ओपन की और सर्च करने लगी - माया... नीरजा... मोनिका...।

- द्वारा श्री देवप्रकाश शर्मा
187 - ककराला
महेंद्रगढ़, हरियाणा-123027
मोबाइल: +91 9729266239

आजादी के बाद हिंदी के विकास में अनुवाद की उपयोगिता

- डॉ राजश्री पी मोरे -

लेख

आजादी के बाद भारत में विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में प्रगति के कारण अनुवाद कार्य कुछ आसान और अधिक व्यवहारिक हो गया है। हिंदी के विशेषज्ञों ने भी अकादमिक स्तर पर अनुवाद के सिद्धांतों एवं उसके व्यवहारिक प्रयोग को अध्ययन का विषय बनाने की आवश्यकता 21वीं सदी के उत्तरार्ध से ही महसूस की थी। परिणामस्वरूप आधुनिक हिंदी साहित्य में अनुवाद एक नई विधा के रूप में विकसित हुआ, जिसकी महत्ता व उपयोगिता को हिंदी व हिंदीतर दोनों क्षेत्रों में स्वीकार किया जाने लगा। अनुवाद शब्द प्राचीन फ्रांसीसी शब्द 'ट्रांसलेशन' से व्युत्पन्न माना जाता है, जिसका अर्थ संस्कृत में 'पुन: कथन' होता था। जो अनुवाद 'स्वांत: सुखाय' के लिए प्रयुक्त होता था, वह आज बहुमुखी, बहुआयामी एवं संगठित व्यवसाय का मुख्य आधार वन गया है।

इस संदर्भ में प्रो जी गोपी नाथन कहते हैं - 'अनुवाद आज व्यक्ति की सामाजिक आवश्यकता वन गया है। आज के सिमटते हुए संसार में संप्रेषण माध्यम के रूप में अनुवाद भी अपना निश्चित योगदान दे रहा है।' अतएव देशों के बीच भौगोलिक और भाषायी दीवार को तोड़कर विश्वबंधुत्व की भावना के विकास में अनुवाद की उपादेयता एवं उपयोगिता और भी प्रासंगिक हो जाती है।

आज के वैज्ञानिक युग में अनुवाद का कार्य बहुत तेजी से बढ़ रहा है। विश्व के कई देश विभिन्न वैचारिक धरातलों पर अनुवाद के माध्यम से विकास का परचम लहरा चुके हैं। सामाजिक, आर्थिक, औद्योगिक स्तरों पर पारस्परिक भाषिक विनिमय से अनुवाद का कार्य बढ़ा है। यदि हमें दुनिया के साथ चलना है तो हिंदी में अनुवाद की परिधि को बढ़ाना ही है। क्योंकि अनुवाद के माध्यम से ही हमें ज्ञान-विज्ञान, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में प्रगति की सूचना मिलती है।

हिंदी अनुवाद राष्ट्रीय एकता का सूचक

भारत एक विशाल भूखंड है, जिसमें विभिन्न भाषा-भाषी, विश्वास एवं संप्रदाय के लोग रहते हैं। इतनी भिन्नताओं के बावजूद हम राष्ट्रीय एकता में बंधे हुए हैं। हजारों वर्षों से आज तक के ऐतिहासिक चिंतन-मनन ने इस धारणा को पुष्ट किया है कि मध्यकाल से आज तक के भारतीय साहित्य की दिशा एक रही है, जो अनुवाद से ही संभव हो पाया है।

जिस समय तुलसीदास राम के चरित्र पर महाकाव्य लिख रहे थे, हिंदी के समानांतर ओड़िया में बलराम, बंगला में कृतिवास, तेलुगु में पोतना, तमिल में कंबन तथा हरियाणवी में अहमदबख्श अपने-अपने साहित्य में राम के चरित्र को नया रूप दे रहे थे। स्वत्रंतता आंदोलन में जिस साम्राज्यवाद और सामंतवाद के विरोध की चिनगारी सुलगी थी, उसका उत्कर्ष छायावादी दौर की विभिन्न भारतीय भाषाओं की कविताओं में मिलता है।

हिंदी के क्षेत्र में शोधकर्ताओं ने कई भाषाओं के साहित्य को लेकर तुलनात्मक अध्ययन किया है, जो अनुवाद से ही संभव हो सका है। हिंदी के कई उपन्यासों, कहानियों, नाटकों, कविताओं, निबंधों, आलोचनाओं, कई साहित्यिक विधाओं का अनुवाद कई भाषाओं में किया गया है, जिससे विभिन्न भाषा- भाषियों को हिंदी की विभिन्न साहित्यिक विधाओं की जानकारी मिलती है।

हिंदी साहित्यिक समृद्धि में अनुवाद

अनुवाद का महत्त्व हिंदी साहित्य के अध्ययन में बहुत ही व्यापक है। साहित्य यदि समाज का प्रतिबिंब है तो विभिन्न भाषाओं के सामूहिक साहित्यिक अध्ययन से उस भाषाई समाज, देश अथवा विश्व की चिंतन-धारा एवं संस्कृति की जानकारी मिलती है। अनुवाद भारतीय साहित्य के अध्ययन, अंतरराष्ट्रीय साहित्य के अध्ययन, तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में सहायक सिद्ध हुआ है।

भारतीय साहित्य में विभिन्न साहित्यिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनैतिक आंदोलनों में हिंदी एवं हिंदीतर भाषा के साहित्यकारों की विचारशीलता प्राय: एक जैसी ही प्रतीत होती है। चाहे वह भक्ति आंदोलन रहा हो या राष्ट्रीय चेतना का स्वर, मार्क्सवादी चिंतन हो अथवा समकालीन विमर्शों का आंदोलन, प्राय: सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य में एक ही स्वर, एक ही विचार अभिव्यक्त हुआ है।

सूफियों के दार्शनिक सिद्धांतों के प्रचलन के साथ ही भारत में अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक अनुवाद की नींव पड़ चुकी थी। विश्व भर के साहित्य में ज्ञान का भंडार छिपा हुआ था, जो आधुनिक युग में पल्लवित व पुष्पित हुआ। शेक्सपिअर, डी एच लॉरेंस, मोपासा तथा सार्त्र जैसे चिंतकों की रचनाओं के अनुवाद से एक ओर जहाँ भारतीय जनमानस का साक्षात्कार हुआ, वहीं दूसरी ओर कालिदास, रवींद्रनाथ टैगोर एवं प्रेमचंद की रचनाओं से विश्व प्रभावित हुआ।

तुलनात्मक साहित्यिक अनुवाद की सहायता से दुनिया की विभिन्न भाषाओं एवं उनके साहित्यिक अध्ययन में सहयोग मिलता है। तुलनात्मक साहित्य द्वारा किसी देश, काल और समय की भिन्नता के बावजूद उन भाषाओं के रचनाकारों के साहित्य में साम्य-वैषम्य की जानकारी मिलती है। प्रेमचंद और गोर्की, निराला और इलियट तथा राजकमल चौधरी एवं मोपासा के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन अनुवाद के माध्यम से ही सफल हो पाया है।

व्यवसाय और हिंदी अनुवाद

समकालीन युग में अनुवाद ज्ञान-विज्ञान की एक सशक्त शाखा के रूप में विकसित हुआ है। कृषि, उद्योग, चिकित्सा, अभियांत्रिकी और व्यापार हर क्षेत्र में काफी बदलाव हुए हैं, जिनके अनुवाद के लिए पारिभाषिक शब्दावली का विकास भी किया गया। इससे उन विषयों की जानकारी मिलती है। हिंदी हमारी राजभाषा है। केंद्र सरकार के कार्यालयों, सार्वजनिक उपक्रमों, संस्थानों और प्रतिष्ठानों में इसका प्रयोग अनिवार्य है, जिसमें अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

जनसंचार माध्यम और हिंदी अनुवाद

जनसंचार के बढ़ते विकास ने पूरे विश्व का ढांचा बदल दिया है। आज विश्व के हर क्षेत्र में अनुसंधान कार्य हो रहा है। नई खोज और नई तकनीक के विकास से पूरे विश्व में औद्योगिक क्रांति मची हुई है। इस विकास को विभिन्न भाषा-भाषी राज्यों तक पहुँचाने में भाषा एवं अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। संचार माध्यमों में गतिशीलता बढ़ाने का कार्य अनुवाद द्वारा ही संभव है। गाँव से लेकर शहरों, महानगरों तक सूचनाएँ पहुँचाने का कार्य अनुवाद के कारण ही संभव हो पाया है।

विज्ञान, व्यवसाय, खेलकूद आदि क्षेत्रों में विज्ञापन की अपनी भाषा और अपनी शब्दावली होती है। संचार माध्यमों में, चाहे मुद्रित हो अथवा इलेक्ट्रॉनिक, विज्ञापनों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। विज्ञापन का संबंध भाषा से होता है। अत: इस क्षेत्र में अनुवाद की उपयोगिता को नजरंदाज नहीं किया जा सकता।

अनुवादक के लिए स्रोत एवं लक्ष्य दोनों भाषाओं का ज्ञान अनिवार्य है। उसे पाठक की आवश्यकताओं के अनुरूप ही अपना अनुवाद प्रस्तुत करना चाहिए। अनुवाद की प्रकृति विषय पर भी निर्भर करती है। शिक्षा, व्यवसाय, विज्ञान, साहित्य, अध्यात्म, राजनीति जैसे विषयों के अनुरूप अनुवाद की अपनी शैली होती है। इसीलिए कहा जा सकता है कि अनुवाद विज्ञान भी है तथा कला भी। जे डब्ल्यू गेटे का कथन है कि 'अनुवाद की अपूर्णता के संबंध में कोई चाहे जो भी कहे, परंतु अनुवाद विश्व के सभी कार्यों से अधिक महत्वपूर्ण और महानतम कार्य है।'

वर्तमान में सभी विश्वविद्यालय अनुवाद को पाठ्यक्रम के अंतर्गत शामिल कर रहे हैं। इससे निश्चय ही अनुवाद के स्तर में वृद्धि होगी। आज प्रौद्योगिकी एवं तकनीक के विकास ने अनुवाद को बहुत महत्वपूर्ण बना दिया है। इसके दृष्टिगत अनुवाद के कार्यक्षेत्र का भी बहुत विकास हुआ है। वैश्वीकरण एवं भूमंडलीकरण ने पूरे विश्व को एक गाँव में समेट दिया है, जहाँ लोगों के बीच आपसी विचार-विनिमय हेतु किसी ऐसी भाषा का प्रयोग अनिवार्य है, जो सभी की समझ में आसानी से आ सके। इस दिशा में बहुत प्रयास किये जा रहे हैं। लेकिन विकास के दौर में आगे बढ़ने के लिए सूचनाओं के आदान-प्रदान हेतु अनुवाद की आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता।

आजकल मशीनी अनुवाद पर भी बहुत कार्य हो रहा है, जो इसकी बढ़ती आवश्यकता के प्रमाण हैं। अनुवाद के इसी महत्त्व को स्वीकारते हुए डॉ बालेंदु शेखर तिवारी कहते हैं कि 'संसार भर में प्रयुक्त पांच हजार से अधिक भाषाओं और बोलियों के बीच वैचारिक, सृजनात्मक और कार्यात्मक तालमेल स्थापित करने के लिए अनुवाद ही सर्वाधिक लोकप्रिय एवं उपयोगी माध्यम बन गया है।' अत: अनुवाद ही ऐसा माध्यम है, जिसके सहारे विकास के पथ पर आगे बढ़ना संभव है।

- हिंदी विभागाध्यक्ष
तेलंगाना महिला विश्वविद्यालय
कोठी, हैदराबाद

बीड़ी वाले का लड़का

- मोहम्मद शफीक अशरफ -

दोस्ती कहानियों की उन ख्यालों की तरह है, जिसके एक-एक पैराग्राफ एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं। एक भी पैराग्राफ छूटा तो आगे की कहानी समझना बहुत मुश्किल है और उसमें से कुछ दोस्त पैराग्राफ के उन बीज शब्दों की तरह होते हैं, जिन्हें याद रखना मुश्किल होता है। हालाँकि कभी-कभी जिंदगी में हम इतने मशगूल हो जाते हैं कि उनकी यादें धुँधली होती चली जाती हैं। फिर कभी कहीं किसी रोज उसका जिक्र आ जाने से या किसी के द्वारा उसकी बातें छेड़े जाने से उसकी यादें उन बीज शब्दों की तरह ताजा हो जाती हैं।

ऐसा ही एक दोस्त था। साधारण सा दुबला पतला, अक्सर हाफ पैंट वाला, उसके लंबे-घने बाल, जिसमें सरसों का तेल लगा रहता और चिपकू सा अपने बालों को चिपका कर रखता था वह। घर वाले उसे पढ़ने में होशियार समझकर गाँव से शहर लाये थे कि अच्छी पढ़ाई मिलेगी तो शायद कुछ कर ले।

वह एकदम से गुमसुम और खामोश रहता था। मानो उसका कहीं कुछ छूट या खो सा गया हो। गाँव से शहर आने की वजह से उसे बगैर किसी काम के घर से बाहर निकलने की इजाजत भी नहीं थी। पर धीरे-धीरे उसका बाहर निकलना शुरु हुआ। कभी मस्जिद में नमाज पढ़ने तो कभी कुछ राशन लाने या फिर दूकान पर बीड़ी पहुँचाने के बहाने से। कुछ दिनों बाद वह हाफ पैंट छोड़ लुंगी पहनने लगा, जिसे देख मुहल्ले के हमउम्र लड़के उसका मजाक उड़ाते थे। कम उम्र में लुंगी पहनने के कारण मुहल्ले के सभी लोग उसे पहचानने लगे थे। इस लुंगी की वजह से मस्जिद में उसके हमउम्र बच्चे उसे परेशान भी करते थे। बच्चे उसे देहाती कह कर चिढ़ाते थे। मस्जिदों में बच्चों की शफ में नमाज कम, शैतानियाँ ज्यादा होती हैं। इसी वजह से वह बड़ों की शफ में खड़ा होने लगा।

इन्हीं वजहों से मुहल्ले में उसकी ना किसी से कोई बात होती और ना ही दोस्ती हो पाई, सिवाय मेरे। मैं उसे अपना दोस्त मानता तो था, पर शायद वह नहीं। वजह आज तक मेरी समझ से परे है। शायद उसका स्वभाव ही ऐसा था कि वह जल्दी किसी से घुल-मिल नहीं सकता था। मुझसे दोस्ती होना भी एक इत्तफाक था। क्योंकि उसका दाखिला मेरे ही स्कूल में हुआ था। उसे स्कूल ले जाने और लाने की जिम्मेदारी मुझे दी गई थी। शायद शहर में नया होने की वजह से खो जाने का डर था और जरूरत इसलिए कि मेरा उसके घर आना-जाना था, उसके भैया से अपने मैथ्स के सवालात हल करवाने। उसके भैया और मेरे भैया दोस्त थे। साथ में ही पढ़ते थे उसी स्कूल में, जिसमें हम दोनों पढ़ रहे थे। मेरे भाई पढ़ाई की वजह से इस शहर से दूसरे शहर चले गये और उसके भाई तो गाँव से शहर आये थे। फिर वे और कौन से शहर जाते? इसलिए वे यहीं पढ़ाई के साथ-साथ अपनी दूकान भी संभालने लगे।

बड़े भाई के दूसरे शहर जाने के बाद मेरे वालिद ने मुझे सख्त हिदायत दे दी कि मैं उसके घर न जाऊँ, क्योंकि उन्हें उसके घर का माहौल बिल्कुल पसंद नहीं था। पर मैथ्स की वजह से मुझे वहाँ जाने का बहाना मिल ही जाया करता था। मैं उससे बातें करना चाहता था। मैं ने कभी गाँव नहीं देखा, इसलिए मैं उसकी नजरों से गाँव घूमना चाहता था। गाँव के दोस्तों के बारे में जानना चाहता था। पर वह कभी मुझसे खुल कर बात ही नहीं करता था।

उसके यहाँ करीब बीस लोग हमेशा रहते थे, जैसे कारखानों में रहते थे। उसी तरह खानाबदोश जिंदगी, दस-पंद्रह तो बीड़ी के कारीगर हुआ करते थे, जो उसकी दूकान के लिए बीड़ी बनाया करते थे। दिन भर उनका गाना-बजाना, उल्टी-पुल्टी बातें करना, बेतरतीब बीड़ी पीना, खैनी खाना आदि चलता रहता था। इन्हीं वजहों से मेरे अब्बू खफा होते थे। उन्हें लगता था कि मुझे भी लत लग जाएगी। हालाँकि मेरे अब्बू खुद सिगरेट पीते थे जो कि उसी की दूकान से आता था। मुहल्ले में सिर्फ उसके घर में ही चापाकल था। अगर कभी किसी दिन नगर निगम की सप्लाई वाली पानी नहीं आता तो लोग उसके ही घर से पानी लाते थे।

मुझे अब भी इसलिए याद है कि हम दोनों की जिंदगी एक जैसी थी, लेकिन मेरे अब्बू मुझे मुहल्ले के बच्चों से अलग रखना चाहते थे। मेरी भी किसी से कोई बातचीत या दोस्ती न थी, क्योंकि अब्बू की नजर में मुहल्ले में कोई भी हम लोगों के लायक नहीं था। सब अनपढ़, जाहिल या कम पढ़े-लिखे थे। बीड़ी वाले के लड़के की एक और समस्या थी, उसके साथ मुहल्ले के बच्चे दोस्ती नहीं करना चाहते थे। क्योंकि वह बीड़ी वाले का लड़का और देहाती था। हम दोनों ही अपनी-अपनी वजहों से अकेले थे और इसलिए मुझे उससे दोस्ती करने का मन था।

हम स्कूल के लिए निकलते तो उसके साथ स्कूल बैग के अलावा बीड़ियों का एक बैग होता था, जिन्हें उसे दूकानों पर देना होता था। दूकान वालों से उसके साथ-साथ मुझे भी कुछ चॉक्लेट्स मिल जाते थे। वह रास्ते भर कोई न कोई कविता गुनगुनाता रहता था। उसके कविता गुनगुनाने और दिन भर काम करते रहने के कारण मैंने उसका नाम 'कामधारी सिंह' दिनकर रख दिया था।

वक्त के साथ हमारी दसवीं मुकम्मल हो गई और फिर वहाँ से आगे का सफर जैसे वह गाँव से पढ़ने शहर आया था, वैसे ही मेरा आगे की पढ़ाई के लिए बड़े शहर जाना तय हुआ। दसवीं के इम्तिहान के बाद वह बहुत खुश था, क्योंकि वह रॉकेट की रफ्तार से शहर से गाँव लौटना चाहता था। उसने मन ही मन तय

कर लिया था कि अब शहर नहीं आएगा। मैंने पूछा भी 'क्यों' वह हमेशा की तरह मुख्तसर सा जवाब देता 'ऐसे ही'। उसके 'ऐसे ही' में लाखों राज छुपे होते थे।

दसवीं के नतीजे आ गये, पर वह नहीं आया और मुझे मेरे भाई के पास भेजने की तैयारी जोरों पर थी। जाने से पहले मैं उससे एक बार मिलना चाहता था, जो कि बिलकुल भी मुमकिन नहीं था। तब लोगों से राब्ता कायम करने का एक ही जरिया था, खत। मैंने उसके भाई से पूछा 'कब आएगा वह?' जवाब में उन्होंने कितनी लानतें भेजी थीं, उस पर 'बेवकूफ', 'बदकिस्मत' और ना जाने क्या-क्या...। काफी खफा थे, गुस्से में ना जाने क्या क्या कह गये। वे अपनी सिल देने लगे थे कि वह आगे पढ़ना चाहते थे, पर अब्बा की ख्वाहिश की वजह से दूकान संभालना पड़ा और एक वह है जिसे सभी यहाँ शहर में पढ़ाना चाहते हैं, पर वह गाँव में ही रह कर पढ़ना चाहता है।

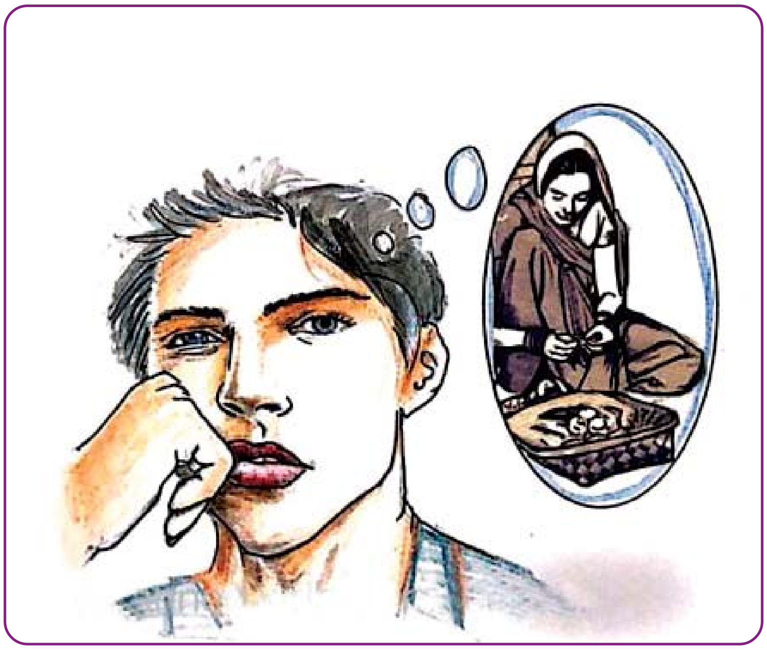

उसके भाई के जवाब के बाद मैं बदकिस्मत की परिभाषा ढूँढ़ने लगा कि आखिर बदकिस्मत कहते किसे हैं? मेरा मानना था कि अगर किसी की कोई दिली तमन्ना गाँव में रहने की है और वह पूरी हो जाए, तो वह बदकिस्मत कैसे होगा? मेरी नजर में तो वह खुशकिस्मत था। बदकिस्मत तो मैं था, न चाहते हुए भी दूसरे शहर जाकर पढ़ाई करने वाला था। पर यह बात मैं अपने घर में फुसफुसाहट में भी नहीं कह सकता। अगर बात अब्बू तक पहुँच गई, तो वे मेरा कीमा बना देंगे। यहीं पर मुझे लगा कि हम दोनों की जिंदगी एक सी नहीं है। क्योंकि मैं खुद से फैसला नहीं ले सकता था।

वह शहर क्यों नहीं आना चाहता था, यह सिर्फ मैं जानता था। वह भी उसने इम्तिहान के आखिरी दिन बाशर्त बताया था कि 'मैं किसी को नहीं बताऊँ।' उस दिन उसने दिल खोलकर मुझसे बातें की थीं। घरवालों के फैसले पर जब वह शहर पढ़ने आया था तो उसकी खुद की एक खामोश वजह थी और वह वजह थी, बिजली एवं टेलीविजन की। यहाँ शहर में रात को बिजली की चकाचौंध उसे बहुत भाती थी। और किसी ना किसी के घर में टेलीविजन देखने को तो मिल ही जाता, जहाँ वह फिल्में और शक्तिमान देख पाता। गाँव की लालटेन की धीमी रोशनी कुछ हद तक ही रोशन कर पाती थी। एक हद के बाद आस-पास अंधेरा ही रहता था और अंधेरा उसके लिए डरावना लगता था। रात में जब कभी उसे लघुशंका जाना होता, तो वह अपनी अम्मी को साथ ले जाता था। गाँव में वह अपनी अम्मी के साथ सुबह के दो बजे ही जग जाया करता था। पर डर के मारे रोशनी होने तक वह बिस्तर में ही दुबका रहता था और जब लालटेन जल जाती तो उसकी रोशनी में कहानियाँ पढ़ता था और जो कहानी अच्छी लगती उसे अम्मी को भी सुनाता।

उसकी माँ भोर में उठकर लालटेन पर चश्मा लगाकर बीड़ी बनाने के लिए पत्ते काटती और जब फज्र के नमाज का वक्त हो जाता, तो कटे हुए पत्तों को जमने के लिए जूट के बोरे में बाँधकर नमाज पढ़ने चली जाती। मैंने पूछा कि 'यह जमना क्या होता है?' उसने बताया 'जमना का मतलब मुलायम होना, ताकि पत्तों को बीड़ी जैसे लपेटने में आसानी हो।' मैं उसकी बात को नहीं समझ पाया। फिर उसने समझाया 'इसे ऐसे समझो कि पत्ते को काटने के बाद उसे नरम होने के लिए जूट की बोरी में रखा जाता है, बीड़ी कारोबार से जुड़े लोग इसे ही पत्ते का जमना कहते हैं। जूट की बोरी को एक खास तरीके से बस्ता बना कर उसे पानी से हल्का भिंगो कर बाँधा जाता है। पानी भी एक जरूरत के हिसाब से ही देना होता है। कम देने से पत्ते रुखे रह जाते हैं और ज्यादा देने से पत्तों में चित्ती मतलब फफूँदी लग जाती है और पत्ता सड़ जाता है।' उसने पूरी प्रक्रिया अपने भाई के मैथ्स पढ़ने के अंदाज में बता दिया।

लेकिन यह सब कहते-कहते वह उदास हो गया, मानों अब रो ही देगा। मैंने उसकी ओर आश्चर्य से देखा, तो वह टूट गया और कहा 'दोस्त... जिन वजहों से मैं यहाँ आया था, वे लगभग पूरी हो गईं। पर...।' मैंने 'पर क्या...?' सवाल दाग दिया। 'पर मेरी अम्मी छूट गई। मेरी कहानियाँ सुनने वाला यहाँ कोई नहीं है।' वह अपने आँसुओं को छुपाने की कोशिश करते हुए बोला, 'पता है मेरी नींद अब भी दो बजे खुल जाती है। पर कमरे के बाहर नहीं निकलता, क्योंकि यहाँ की चकाचौंध रोशनी के रहते हुए भी मुझे डर लगता है। मेरे अंदर डर अब भी है। पर यहाँ मैं रात में लघुशंका के लिए किसी को जगा नहीं सकता। अब तो किसी को साथ चलने के लिए कहने में मुझे खुद भी शर्म आती है। क्योंकि उनकी नजर में मैं बहुत बड़ा हो गया हूँ... पर अम्मी की

नजर में...' कहते-कहते वह खमोश हो गया।

उसका मन बहलाने और किसी बहाने शहर में रहने के लिए मैंने कहा, 'पर यहाँ टेलीविजन देखने को तो मिलता है ना?' 'वह तो तुम्हारे यहाँ ही देखता हूँ।' इससे ज्यादा उसने कुछ नहीं कहा। बाकी बातें मैं खुद समझ गया, क्योंकि मेरे अब्बू को उसका मेरे यहाँ आना बिल्कुल भी पसंद न था। 'तुम्हें पता है, मुझे यहाँ हर काम पूछ कर करना पड़ता है। तुम्हारे यहाँ तेलीविजन देखने के लिए भी कितनी डाँटें सुननी पडती हैं, तब जाकर इजाजत मिलती है, और तुम्हें वहाँ मेरे लिए दरवाजा खोलने की वजह से डाँटें सुननी पडती हैं।' उसने अपने मन की बात कह दी।

उसकी बात से मैं चौंक पड़ा था कि इसे तो सब पता है। उसने कहना जारी रखा, 'ऐसा नहीं कि मेरे गाँव में टेलीविजन नहीं है। पर वहाँ पर बंदिशें कम हैं। किसी ने यदि दरवाजा बंद भी कर लिया तो हम दीवार भी फांद कर उसके घर चले जाते हैं। वहाँ सबको देखने दिया जाता है। हमारे यहाँ जब बिजली नहीं होती, बैटरी पर देखते हैं। बैटरी को पहले से चार्ज कराकर रखते हैं या भाड़े पर लाते हैं।'

मैं उसकी बातों से शर्मिंदा हो रहा था। कई बार मेरे अब्बू ने उसे देख कर दरवाजा बंद कर लिया था, जो मुझे भी बुरा लगता था पर अब्बू का खिलाफत करूँ कैसे? थोड़ी देर सन्नाटा पसरा रहा... फिर उसने आगे कहना शुरु किया... 'वहाँ तो मुझे कभी हँसने और रोने के लिए सोचना नहीं पड़ता था। झूठ-मूठ रो कर भी अपनी जिद मनवा लेता था और जिद पूरी होने पर हँस देता था। यहाँ तो हर बात के लिए वजहें ढूँढ़नी पड़ती हैं। तुम्हें पता है तुम्हारे साथ जाकर मैं जितनी बार दवाइयाँ भी लाया, उसे खाया नहीं।' मैं हैरान... झट पूछ बैठा 'क्यों?' उसने चहकते हुए जवाब दिया, 'क्योंकि मुझे कभी पेट या सर दर्द हुआ ही नहीं। जब मुझे अम्मी की याद आ जाती, तो मैं रो पड़ता। फिर आँसू की वजह बताने के लिए इन्हीं दो दर्दों का सहारा लेता, क्योंकि इनके लिए सबूत की जरूरत नहीं होती।'

मैं खामोश हो गया। शायद रोने की बारी अब मेरी थी। एक गाँव-गँवार के बच्चे के भीतर कितना कुछ भरा था। ऐसा लगा मानो यहाँ आकर वह मर रहा था। उसने आगे कहना जारी रखा 'मैंने तो अब सोच लिया है कि बीड़ी की दुनिया से मुझे बाहर निकलना है। खास कर अम्मी को तो बिल्कुल भी नहीं बनाने दूँगा?' 'क्यों?' मैंने प्रश्न दागा। 'बहुत सी बातें हैं, तुम्हें कैसे बताऊँ?' मैंने मजाकिया लहजे में कहा 'बता भी दो, आज पहली बार तुमने मुझे दोस्त जो कहा है।'

'इतनी मेहनत है इस काम में, पर उसके एवज में मिलता कुछ भी नहीं। बीड़ी जिसे तुम देशी सिगरेट कहते हो, उसको बनाने से पहले उसकी बहुत सी मरहलें हैं। आसान नहीं है बीड़ी बनाना और उसे आम लोगों तक पहुँचाना। इसमें हस्तकला की हर कदम पर जरूरत पड़ती है। मानो कोई दुल्हन सजाई जा रही हो। इतनी मेहनत के बाद अगर पूरे दिन में एक हजार बीड़ी बना भी लें तो बमुश्किल **40-50** रुपए मिलते हैं। लेडीज हाथ की बीड़ी के लिए तो और भी कम मजदूरी है।' उसने बीड़ी बनाने की प्रक्रिया को पूरी तफसील से समझाया था, मानों उसने बीड़ी बनाने की कला में पीएचडी कर रखी हो।

'लेडीज हाथ की बीड़ी की मजदूरी कम क्यों?' मैंने पूछा और बस मेरे इसी एक सवाल का जवाब उसके पास नहीं था। और इसका जवाब शायद आज भी किसी के पास नहीं है। पर इस भेदभाव की वजह से उसके अंदर गुस्सा बहुत था। 'पता नहीं यार! और सबसे ताज्जुब वाली बात तो यह है कि दूकानदार यानि मेरे अब्बा दोनों बीड़ी को एक ही दाम पर बेचते हैं। ग्राहक से लेडीज हाथ की बीड़ी बता कर कम पैसे नहीं लिए जाते। पता नहीं यह भेदभाव क्यों? मेरी अम्मी या कोई औरत अलग या किसी आसान तरीके से बीड़ी थोड़े न बनाती हैं, मेहनत तो दोनों में बराबर ही लगती है।'

वह भावनाओं के बहाव में था और आगे कहना जारी रखा 'घर संभालना औरतों के हाथ में है... बच्चे पैदा करना उसकी परवरिश करना भी उन्हीं के हाथ में है... अच्छा खाना बनाना उन्हीं के हाथ में है... पर उनके हाथ की बीड़ी बनाने के लिए मजदूरी कम दी जाती है।' कितनी सच्चाई थी उसकी बातों में। कुछ देर के लिए तो मुझे ऐसा लगा कि हमारे स्कूल के गुप्ता सर महिला सशक्तीकरण पर भाषण दे रहे हैं। हम वक्त और अब्बू के डाँटने का हवाला देकर अपने-अपने घर चले गये थे।

संभवत: वह शाम हमारे बचपन की दोस्ती की आखिरी दिन था, जिसने हमारे कई सपनों, कल्पनाओं और भावनाओं को हमसे छीन लिया था। मैंने कभी नहीं सोचा था कि इसके बाद मैं उससे कभी मिल पाऊँगा। वक्त के साथ उसका चेहरा भी मेरे जेहन में धुँधला गया है, पर उसके तीर जैसे शब्द और दार्शनिक जैसी खामोशी मेरे जेहन में हमेशा रौशन रही। उसकी आखिरी बातें मुझे जिंदगी के हर कदम पर आगाह करती हैं। उसने कहा था कि 'अपना घर छोड़ते ही अपनी पहचान में फर्क आ जाता है। अपनी पहचान खो जाती है। अच्छा-खासा नाम रहते हुए भी तुम्हें उस नाम से कोई नहीं बुलायेगा।'

कितनी हकीकत थी उसकी इस बात में। यह बात तब समझ में आई, जब मैं आगे की पढ़ाई के लिए घर छोड़ा। घर छोड़ने के बाद मेरी पहचान बंटी का भाई, जूनियर, सीनियर, फ्रेशर, एक्सपीरियन्स्ड, दैट इंडियन गॉय... कुछ ऐसा ही होता चला गया। ठीक उसी तरह जिस तरह उसका भी एक नाम था, पर यहाँ इस शहर में उसका एक नाम पड़ा 'बीड़ी वाले का लड़का।'

- डिफेंस एस्टेट ऑफिस
प्लाट नंबर **163**, प्राची एंक्लेव,
पोस्ट चंद्रशेखरपुर,
भुवनेश्वर-**751016**

राजभाषा प्रशिक्षण की चुनौतियाँ : एक अनुभव

- डॉ टी हैमावती -

भूमिका :

जीवन के लिए कर्म जैसे ही भाषा भी महत्वपूर्ण होती है। जिस प्रकार मनुष्य जीविकोपार्जन हेतु कोई न कोई काम करता है, वैसे ही सामाजिक व्यवहारों के लिए अपनी संचार शैली (भाषा) को भी परिमार्जित करता है, क्योंकि उसकी सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति उसी से होती है। इस संदर्भ में राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के पूर्व सहायक महाप्रबंधक (हिंदी) डॉ एस कृष्णबाबु जी का कथन उल्लेखनीय है, 'भाषा मनुष्य के विचारों के आदान-प्रदान का सशक्त साधन है और मनुष्य एक सामाजिक प्राणी भी है। यदि मनुष्य के पास भाषा नहीं होती और वह अपने विचारों का भाषा के माध्यम से आदान-प्रदान नहीं कर पाता तो वह समाज के दूसरे सदस्यों के साथ संबंध कैसे बनाता।' तात्पर्य यह है कि भाषा मनुष्य के लिए संबंध बनाने का सर्वप्रथम और उत्कृष्ट आधार है। मनुष्य अपनी बातों, अनुभूतियों, संवेदनाओं, प्रतिक्रियाओं और भावनाओं को प्रस्तुत करते हुए समाज के विविध लोगों के साथ अपना नाता जोड़ता है।'[1]

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण, व्यवसाय-कारोबार में भाषाओं के ज्ञान पर जोर दिया जाता है व लोगों को प्रशिक्षित किया जाता है। सरकारी प्रावधानों के कारण हमारे कार्यालयों में कार्यालयीन कार्यों एवं विचाराभिव्यक्ति के लिए हिंदी का प्रशिक्षण व प्रयोग किया जाता है, जो एक सतत एवं चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया है। मैंने इस प्रक्रिया और चुनौतीपूर्ण अनुभवों को जिया है, जिसे निम्नवत साझा करना चाहती हूँ -

राजभाषा प्रशिक्षण :

कार्यालयीन कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु भारत सरकार ने राजभाषा नीति और नियम बनाए हैं। इन नियमों के अनुपालन हेतु कर्मचारियों को हिंदी का प्रशिक्षण दिया जाता है। इस कार्य में तेजी लाने हेतु भारत सरकार द्वारा गृह मंत्रालय के अधीन राजभाषा विभाग का गठन करके उसके अंतर्गत हिंदी शिक्षण योजना नामक संस्था स्थापित की गई। इस संस्था की शाखाएँ देश के प्रमुख शहरों में विद्यमान हैं, जो सरकारी संगठनों में हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान न रखनेवाले कर्मचारियों को प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत पाठ्यक्रमों के तहत प्रशिक्षण देने का काम करती हैं। हिंदी प्रशिक्षण को आकर्षक बनाने हेतु परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने पर आर्थिक प्रोत्साहन देने का प्रावधान किया गया।

उल्लेखनीय है कि सरकारी नियमों के अनुसार कर्मचारियों को यह प्रशिक्षण कार्यालयीन अवधि में दिया जाना चाहिए। किंतु विविध संगठनों के लिए प्रशिक्षण की यह प्रणाली सुविधाजनक नहीं थी। अक्सर औद्योगिक एवं उत्पादनपरक संगठन शहर से बाहर होते हैं और संगठन के लक्ष्यों की आवश्यकताओं के मद्देनजर कर्मचारियों को कार्यालयीन अवधि में हिंदी का नियमित प्रशिक्षण देना नामुमकिन था।

अतः विशाखपट्टणम के राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड में कर्मचारियों हेतु कार्यालयीन अवधि के बाद प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ की कक्षाएँ शुरु की गई। साथ ही कक्षाओं में उपस्थित होने के लिए उन्हें अलग से उपस्थिति प्रोत्साहन भी दिया जाने लगा, जो कि परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर सरकारी नियमों के अनुसार मिलनेवाले प्रोत्साहन के अतिरिक्त है। इन प्रोत्साहन योजनाओं में समय-समय पर सशोधन भी किया जाता है।

प्रारंभ के करीब 18 वर्षों तक ये प्रशिक्षण कक्षाएँ कुछ प्रशिक्षित कर्मचारियों के सहयोग से चलाई गई। तत्पश्चात हिंदी शिक्षण योजना के नियमित प्राध्यापकों की सहायता से चलाई जाने लगीं। अब लगभग 15 साल से हिंदी शिक्षण योजना के प्राध्यापक द्वारा कंपनी परिसर में कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

यह भी उल्लेखनीय है कि कंपनी में आयोजित इन कक्षाओं में समीपस्थ संगठनों जैसे सी आई एस एफ, पॉवरग्रिड कार्पोरेशन, बी डी एल के कर्मचारी भी प्रशिक्षण पा रहे हैं। परिसर में प्रशिक्षणार्थियों की संख्या जब बढ़ी तो राजभाषा विभाग ने यहीं पर परीक्षा केंद्र भी खोल दिया। इन प्रयासों के फलस्वरूप इन कक्षाओं में अब तक करीबन 5500 हजार कर्मचारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान के संबंध में राजभाषा विभाग ने कुछ परिभाषाएँ प्रस्तुत की हैं। जैसे कि दसवीं कक्षा में हिंदी को एक विषय के रूप में लेकर उत्तीर्ण अथवा कोई समकक्ष परीक्षा अथवा प्राज्ञ उत्तीर्ण अथवा कार्यसाधक ज्ञान होने की स्व-घोषणा-पत्र प्रस्तुत करने पर कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त माना जाएगा। किंतु यह मननीय है कि हिंदी को एक विषय के रूप में लेकर दसवीं अथवा समकक्ष परीक्षा में उत्तीर्ण कर्मचारी वास्तव में हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान नहीं रखते। दसवीं अथवा समकक्ष परीक्षा में हिंदी की कुछ कविताओं और लेखों को पढ़-लिख लेने से कोई कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त नहीं हो जाता। ऐसे व्यक्ति को हिंदी में कार्यसाधक प्राप्त

मानकर उनसे हिंदी में कार्य की अपेक्षा करना उचित प्रतीत नहीं होता। अत: राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड में हिंदीतर भाषी सभी कर्मचारियों को इन पूर्वोक्त कक्षाओं में प्रशिक्षण देने का निर्णय लिया गया, भले ही उसे नियमों के अनुसार हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त हो। देश में शायद ही कोई संगठन होगा, जो राजभाषा प्रशिक्षण हेतु इतनी सुविधाएँ देता होगा और अपने कर्मचारियों को हिंदी के प्रति अभिप्रेरित करता होगा।

हिंदी टंकण व आशुलिपि में प्रशिक्षण :

भारत सरकार के निदेशों के अनुसार टंकण और आशुलिपि का कार्य करनेवाले सभी कर्मचारियों को हिंदी टंकण व आशुलिपि का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। इस आदेश के अनुपालन में राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड में पहले **6** हिंदी टंकण मशीनें खरीदकर टंकण प्रशिक्षण शुरु किया गया। सुबह एक घंटे और शाम को एक घंटे का प्रशिक्षण देकर प्रति सत्र में **12** कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जाने लगा।

तत्पश्चात हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण देने के लिए एक हिंदी आशुलिपिक की भर्ती की गयी, ताकि हिंदी टंकण और आशुलिपि का प्रशिक्षण सुचारू रूप से दिया जा सके। ध्यान देने योग्य बात यह है कि हिंदी टंकण का प्रशिक्षण जहाँ **6** महीनों में दिया जाता था, वहीं आशुलिपि में प्रशिक्षण एक वर्ष की अवधि का होता था।

एक बार जब संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण हुआ और उसमें सभी को शीघ्र प्रशिक्षित करने का आश्वासन लिया गया तो कंपनी ने टंकण का प्रशिक्षण वृहद स्तर पर देने की योजना बनायी। प्रशिक्षण केंद्र में **25** टंकण मशीनें खरीदकर रखी गयीं और एक प्रशिक्षक नियुक्त किया गया। इस प्रशिक्षण में **25** कर्मचारी सुबह और **25** शाम को प्रशिक्षित होने लगे।

हिंदी टंकण के प्रशिक्षण में कोई दिक्कत नहीं थी। किंतु हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण देते समय बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ा। पहली समस्या प्रशिक्षक की थी। उसका चयन तो ठीक ही हुआ था, लेकिन नौकरी में स्थाई होने के बाद उसकी प्रवृत्ति बदल गई और कार्यालयीन काम से अधिक व्यक्तिगत जरूरतों पर ध्यान देने लगा।

आशुलिपि प्रशिक्षण की दूसरी समस्या कर्मचारियों के हिंदी ज्ञान से संबंधित थी। हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षणार्थी को हिंदी के व्याकरण और उच्चारण का ज्ञान होना आवश्यक है, जबकि हिंदीतर कर्मचारियों में मूलत: इसका अभाव था। इसके अतिरिक्त ज्यादातर जो दसवीं तक हिंदी पढ़े थे, वे प्राय: भूल भी गये थे। क्योंकि दसवीं कक्षा के बाद उन्हें हिंदी सीखने की या उसका अभ्यास करने की जरूरत नहीं होती थी।

यही नहीं, आशुलिपि सीखते समय कर्मचारियों की मानसिकता भी बदलने लगी थी। मिसाल के तौर पर उन प्रशिक्षणार्थियों के कुछ उद्‍गार देखिए। 'इस उम्र में अब इतना अभ्यास नहीं होता...', 'आशुलिपि सीखकर क्या करेंगे?...', 'आशुलिपि सीखने पर मुझे क्या मिलनेवाला है?...', आदि। उन्हें प्रेरित करने हेतु हिंदी आशुलिपि परीक्षा उत्तीर्ण होने पर एक स्थाई वेतनवृद्धि देने हेतु प्रबंधन ने सहमति दी। इस प्रकार कुल **450** लोगों को हिंदी टंकण तथा **56** को हिंदी आशुलिपि में प्रशिक्षित किया। लेकिन कंप्यूटरों के आने के बाद सब अनुपयोगी हो गया और ये पद भी समाप्त हो गये।

कंप्यूटर अनुप्रयोग के साफ्टवेयर और उसका प्रभाव:

कार्यालयों में कंप्यूटरों का प्रयोग जब धीरे धीरे बढ़ने लगा, तब कंप्यूटर में Wordstar और D-base जैसे Dos based प्रोग्रामों का प्रयोग होता था। सबसे पहले कंप्यूटर में 'अक्षर' पैकेज लोड करके Wordstar में हिंदी में काम करने की कोशिश की गयी। लेकिन इसमें सफलता नहीं मिली। उसके बाद Akruti for Windows पैकेज खरीदा गया और उसका प्रयोग शुरु किया गया। शुरु-शुरु में इसमें काम करना मुश्किल लगा। क्योंकि टाइपराइटर पर काम करते समय जिस की-बोर्ड का प्रयोग किया जाता था, वह किसी भी साफ्टवेयर में उपलब्ध नहीं था। धीरे धीरे 'आकृति' का प्रयोग संभव हुआ। लेकिन यह स्थिति भी बहुत दिनों तक नहीं चल सकी। क्योंकि यह Floppy में होता था। Floppy के खराब होने पर साफ्टवेयर बेकार हो जाता था। उसके बाद सी-डैक कंपनी द्वारा निर्मित Leap Office पैकेज बाजार में आया। हमारे कार्यालय में फिर इसे खरीदा गया। इसका की-बोर्ड 'आकृति' पैकेज के की-बोर्ड से अलग था। फिर नये सिरे से इस की-बोर्ड पर अभ्यास करना पड़ा। धीरे धीरे Leap Office में काम करना कठिन होता गया। क्योंकि इसमें काम करते समय कंप्यूटर में CD लगाना पड़ता है। आर आई एन एल में कंप्यूटरों की संख्या अत्यधिक होने के कारण सबके लिए CD खरीदकर देना महंगा पड़ता था। इसलिए इसका प्रयोग बंद हो गया।

तत्पश्चात् 'श्रीलिपि' पैकेज लगाया गया। इस पैकेज की विशेषता थी कि इसके फांट्स सभी आधुनिक सॉफ्टवेयरों जैसे MS Office, Adobe Pagemaker & Photoshop में प्रयोग में लाए जा सकते हैं। इसका की-बोर्ड अलग था। फिर भी श्रीलिपि की बड़ी सुविधा यह थी कि बाजार में उसे सभी प्रकाशक

उपयोग में लाते थे। इसमें यदि कोई सामग्री फीड करके दी जाती थी तो प्रिंटर के यहाँ वह आसानी से खुल जाती थी। इसलिए जो भी संदर्भ साहित्य, विशेषांक व पत्रिकाएं आदि प्रकाशित होती थीं, उसकी सामग्री श्रीलिपि में फीड करके प्रिंटर को दी जाती थी। इससे प्रूफ रीडिंग आसान हो जाती थी।

धीरे-धीरे इस सॉफ्टवेयर का प्रयोग भी कठिन होता गया। यह साफ्टवेयर CD में उपलब्ध होता था और इसका एक Lock होता था, जिसे कंप्यूटर में स्थाई रूप से लगाया जाता था। हर कंप्यूटर के लिए अलग Lock की जरूरत होती थी और फिर हर Lock का दाम **3-4** हजार रुपये तक होता था। साथ ही यदि Windows का version upgrade होता है तो उसके साथ फिर से 'श्रीलिपि' सॉफ्टवेयर को पैसा देकर upgrade करना पड़ता था। बार-बार सॉफ्टवेयर को upgrade करना मुश्किल था। इसके अतिरिक्त कंपनी में कंप्यूटरों की संख्या हजारों तक बढ़ती गई। इन सभी कंप्यूटरों के लिए अलग से सॉफ्टवेयर खरीदना या उनके लिए Corporate Licence लेना भी असंभव था। उस समय यानी वर्ष **1999-2000** तक कंपनी की वित्तीय हालत बहुत ही खराब थी। कंपनी को Disinvest या Privatize करने या इसे BIFR के लिए रिफर करने की बात चलती थी। ऐसी स्थिति में Corporate Licence पर व्यय करना मुश्किल था।

इसी बीच कंपनी के एक अधिकारी ने 'शुषा फांट्स' से परिचय कराया, जो Phonetic की-बोर्ड आधारित था और मुफ्त में मिला था। फांट तो मिला, लेकिन इसका कहीं की-बोर्ड नहीं मिला। इसका अभ्यास करके की-बोर्ड की रूपरेखा बनाई गई। कंपनी में धीरे-धीरे शुषा फांट्स प्रचलित हो गया। चूंकि ये केवल फांट्स थे, इनका साइज भी सिर्फ **50-55** KB होता था, इसे किसी भी कंप्यूटर में आसानी से लगाया जा सकता था। वैसे तो इसमें Punctuation Marks आदि टाइप करना मुश्किल होता था, फिर भी यह प्रयास सफल रहा। करीब **400** कर्मचारियों को शुषा फांट्स में प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण-सुविधा हेतु अभ्यास पुस्तिका भी प्रकाशित की गयी। यही नहीं, आई टी विभाग की सहायता से कंप्यूटर के इंट्रानेट के Downloads में शुषा फांट्स लगा दिये गये, जिससे कोई भी कर्मचारी चाहे वह मुख्यालय में काम करता हो या कंपनी के किसी शाखा कार्यालय में, इन फांट्स को डाउनलोड करके कंप्यूटर में लगा सकता है और हिंदी में काम कर सकता है।

इसके बाद वर्ष **2000** के बाद भारत सरकार के राजभाषा विभाग से निदेश प्राप्त हुए कि समरूपता हेतु सभी को यूनिकोड का ही प्रयोग करना होगा। यूनिकोड क्या है? इसे कंप्यूटर में कैसे लोड किया जा सकता है? इसपर कितना व्यय होगा? किस सॉफ्टवेयर में इसका प्रयोग हो सकता है? क्या यह किसी कंपनी के Server में लगाया जा सकता है? यदि लगाया जाएगा तो काम करेगा कि नहीं? आदि कई सवाल सामने आए। परंतु राजभाषा विभाग के बार-बार यूनिकोड के प्रयोग पर जोर देने के कारण आर आई एन एल से विभागाध्यक्ष (राजभाषा) और आई टी विभाग के प्राधिकारी नई दिल्ली गये और राजभाषा विभाग से संपर्क करके यूनिकोड के बारे में जानकारी प्राप्त की। तदुपरांत कर्मचारियों को पुन: यूनिकोड के माध्यम से कंप्यूटर पर हिंदी टाइपिंग का प्रशिक्षण शुरु किया गया। कंपनी में अब तक **1350** कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया। आज यूनिकोड के माध्यम से हिंदी टंकण का कार्य इतना सुगम हो गया कि पूरे संगठन में कर्मचारी आसानी से कंप्यूटर पर हिंदी टाइपिंग कर सकते हैं। आजकल तो वॉयस मैसेज या स्पीच टू टेक्स्ट के माध्यम से कोई भी व्यक्ति किसी भी भाषा में सामग्री कंप्यूटर में फीड कर सकता है।

निष्कर्ष :

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि राजभाषा प्रशिक्षण का कार्य बहुत ही वृहद एवं व्यापक है। लेकिन सूचना प्रौद्योगिकी ने इसे खूब सुगम बना दिया है। हालाँकि राजभाषा हिंदी के प्रशिक्षण के लिए अभी बहुत कुछ किया जाना है। लेकिन राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड जैसे भीमकाय संगठन में कर्मचारियों की संख्या भी अधिक होती है। वहाँ राजभाषा प्रशिक्षण देना बहुत बड़ा चुनौतीपूर्ण कार्य है। इन चुनौतियों का सामना करते हुए जितनी प्रतिबद्धता के साथ राजभाषा प्रशिक्षण का अभियान चलाया गया था और अभी भी चलाया जा रहा है, वह वास्तव में सराहनीय और प्रबंधन का सहयोग अभिनंदनीय है। जब कोई व्यक्ति कर्तव्यनिष्ठा और प्रतिबद्धता के साथ कार्य करता है और समसामयिक प्रौद्योगिकी का प्रयोग करता है, अर्थात समय के साथ स्वयं मे बदलाव लाते हुए आगे बढ़ता है तो सफलता अवश्य मिलेगी, इसमें कोई संदेह नहीं है।

- सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र
विशाखपट्टणम
मोबाइल नं.**9866187114**

संदर्भ :

1. साहित्यिक अवधारणाएँ : सामयिक संदर्भ, डॉ एस कृष्णबाबु, अमन प्रकाशन, कानपुर, पृष्ठ सं.**37**

आर आई एन एल का जयपुर स्टॉकयार्ड : एक आदर्श स्टॉकयार्ड

आंध्र प्रदेश के विशाखपट्टणम में स्थापित राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (आर आई एन एल) एक समग्र एकीकृत इस्पात संयंत्र है। यह भारत सरकार के इस्पात मंत्रालय के प्रशासन के अधीन समुद्र तट पर स्थापित देश का पहला इस्पात संयंत्र है। इस राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड को भारत सरकार ने नवरत्न कंपनी की उपाधि से नवाजा है। मुख्यत: विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र (वी एस पी) के नाम से प्रख्यात इस कंपनी ने अपने गुणवत्तापूर्ण उत्पादों के कारण घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजार में अपना विशेष स्थान बनाया है और निरंतर अपनी पैठ को मजबूत करने का प्रयास करती रहती है। देश के औद्योगिक और मूलसंरचनात्मक विकास में अहम योगदान देते हुए यह संयंत्र आई एस ओ **9001:2008**, आई एस ओ **14001:2004**, ओ एच एस ए एस **18001:2007** और आई एस ओ/आई ई सी **27001:2013** मानक प्राप्त देश का पहला इस्पात संयंत्र है। साथ ही ऊर्जा प्रबंधन प्रणाली में आई एस ओ **50001:2001** प्रमाणन के साथ सॉफ्टवेयर के विकास में सी एम एम आई स्तर **3** प्रमाणन प्राप्त भारत का प्रथम सार्वजनिक उद्यम है।

आर आई एन एल - वी एस पी के प्रमुख उत्पादों में कच्चा लोह, वॉयर राड क्वॉयल्स, सरिया, राउंड्स, एंगिल्स, बीम्स, चैनल्स, फ्लैट्स जैसे स्ट्रक्चरल्स, ब्लूम्स एवं बिल्लेट्स जैसे स्क्वेयर और सेमीस शामिल हैं। साथ ही, आर आई एन एल अपने कई उप-उत्पादों जैसे कोयला रसायन, अम्मोनियम सल्फेट और ग्रैन्युलेटेड स्लैग आदि का विपणन भी करता है

7.3 मिमियन टन द्रव इस्पात की वर्तमान क्षमता से सुसज्जित आर आई एन एल के पास पूरे देश में विस्तृत व आधुनिक विपणन तंत्र उपलब्ध हैं। पूरे भारत में आर आई एन एल के **5** क्षेत्रीय और **21** शाखा विक्री कार्यालय हैं। देश में जहाँ कंपनी का शाखा विक्री कार्यालय नहीं है, वहाँ के ग्राहकों को अपने गुणवत्तापूर्ण उत्पाद मुहैया कराने के लिए कंपनी ने अनेक परेषण अभिकर्ताओं और परेषण विक्री अभिकर्ताओं की भी नियुक्ति की है। साथ ही भारत के गाँवों को भी विकास में समान रूप से भागीदार बनाने के लिए

कंपनी ग्रामीण विक्रेताओं के माध्यम से अपने इस्पात उत्पादों को उपलब्ध कराती है।

राजस्थान राज्य की राजधानी जयपुर स्थित आर आई एन एल के स्टॉकयार्ड का रखरखाव परेषण अभिकरण मेसर्स मेटल इंजीनियरिंग एण्ड फोर्जिंग कंपनी, जयपुर द्वारा किया जाता है। रेल और सड़क मार्ग के समीप स्थित यह स्टॉकयार्ड आर आई एन एल के सभी स्टॉकयार्डो की तुलना में एकदम उत्कृष्ट है। स्टॉकयार्ड के मुख्य द्वार पर प्रदर्शित राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के साइन बोर्ड से लेकर पाँच एकड़ में फैले सुव्यवस्थित यह स्टॉकयार्ड एक आदर्श स्टॉकयार्ड की श्रेणी में आता है। वाहनों के परिचालन के लिए अत्यंत उपयुक्त तथा आधुनिक सुविधाएँ मौजूद हैं, जिसके कारण इस स्टॉकयार्ड से इस्पात उत्पाद का प्रहस्तन आसानी से किया जाता है। इस स्टॉकयार्ड में इस्पात की विविध श्रेणी के उत्पादों के उचित भंडारण के लिए अलग-अलग स्थान चिन्हित किये गये हैं। प्रत्येक स्थान पर सामग्री की उनके आकार और श्रेणी की जानकारी देने हेतु डिस्प्ले बोर्ड लगाए गये हैं। दो स्टॉकों के बीच इतना अंतर रखा गया है और ऐसी विभाजक व्यवस्था की गई है कि दो श्रेणियों के इस्पात किसी भी हालत में मिश्रित नहीं हो सकेंगे।

इस्पात उत्पाद की श्रेणियाँ ऐसी भी होती हैं, जो हवा और पानी के संपर्क में आने पर उनमें जंग लग जाती है और वे विकृत

व पुराने से लगने लगते हैं, और कोई भी ग्राहक उसे लेना नहीं चाहता। हालाँकि उसकी गुणवत्ता ज्यों की त्यों ही होती है और फिर ऐसे उत्पादों को मजबूरन कम दाम में बेचना पड़ता है। ऐसी स्थिति से बचाव के लिए यहाँ बड़े-से-बड़े स्टॉक को भी तारपोलिन से ढकने की सुविधा उपलब्ध है। स्टॉक के आकार को बनाये रखने और खासकर क्वॉयल को सुव्यवस्थित तरीके से रखने के क्रम में नियत दूरी पर रेल को बैठाते हुए इसे कंक्रीट पेवरब्लॉक के साथ लगाये गये हैं।

इससे इस्पात उत्पादों और कंक्रीट की सतह के बीच एक नियत दूरी बनी रहती है और उत्पाद सीधे जल-जमाव के शिकार नहीं हो पाते और इस प्रकार फर्श पर यदि जल-जमाव हो भी जाए तो भी उत्पाद उसके संपर्क में नहीं आयेंगे और हमारा इस्पात उत्पाद अधिक सुरक्षित बना रहता है।

इस स्टॉकयार्ड में कई मूलसंरचनात्मक सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यहाँ 4 कमरों का वातानुकूलित कार्यालय अवस्थित है, जिसमें स्टॉकयार्ड प्रभारी, परेषण अभिकर्ता, कंप्यूटर केंद्र, ग्राहक/आगंतुक कमरे के साथ-साथ अत्याधुनिक प्रसाधन सुविधाएँ उपलब्ध हैं। यार्ड में 100 मिलियन टन क्षमता के इलेक्ट्रानिक वे-ब्रिज स्थापित है और डिजिटल डिस्प्ले के कारण यह ग्राहकों के लिए दूर से ही दृष्टिगोचर है। इससे ग्राहक और कंपनी के बीच ईमानदार संबंध स्थापित होता है।

यहाँ पर चार स्ट्रेटनिंग मशीनें लगाई गई हैं, जिनकी सहायता से संविदा के अनुसार क्वॉयल को आसानी से डी-क्वॉयल किया जा सकता है और ग्राहकों की आवश्यकता के अनुसार कम से कम समय में उपयुक्त आकार के उत्पादों की आपूर्ति की जाती है। इस यार्ड में 9 मोबाइल हाइड्रो क्रेन मौजूद हैं, जिनकी मदद से इस्पात उत्पादों को रेलवे के वैगनों से उतारा और ट्रकों में लादा जाता है। इसके अलावा, परेषण अभिकर्ता द्वारा पर्याप्त संख्या में कुशल कार्मिकों और श्रमिकों की नियुक्ति की गयी है, जिससे स्टॉकयार्ड के सफल प्रचालन संभव हो पाता है।

विद्युत की आपूर्ति के व्यवधान के समय प्रचालन को जारी रखने के लिए उपयुक्त विद्युत जनरेटर की सुविधा का होना एक विशेष पहल है। साथ ही, देर शाम और रात में सामग्री के प्रहस्तन को सुचारू रूप से जारी रखने के लिए जगह-जगह पर हाइमास्क, डबुल लेन्स, एल ई डी सहित समुचित रोशनी की व्यवस्था की गयी है। ग्राहकों की सुविधा अनुसार एल एस जी पी, वेमेंट स्लिप्स और बीजक जाँच प्रमाणपत्र आदि जारी करने के लिए सही जगह पर अलग-अलग काउंटरों की व्यवस्था की गयी हैं, जिसके कारण न्यूनतम समय में कागजी कार्रवाई संभव हो पाती है।

बहुत कम स्टॉकयार्डों में यह देखा गया है कि श्रमिकों के लिए आवास, कैंटीन, विश्राम आदि की सुविधा हो, लेकिन इस आदर्श स्टॉकयार्ड में श्रमिकों और अन्य कार्मिकों के लिए इन सुविधाओं पर ध्यान दिया गया है। कैंटीन के साथ जगह-जगह पर स्वच्छ पेय जल की व्यवस्था के लिए आर ओ संयंत्र लगाये गये हैं। इस स्टॉकयार्ड के और एक विशेष पहल के अंतर्गत जल संरक्षण प्रणाली आती है।

पूरे स्टॉकयार्ड के वर्षाजल को वहाँ से निकालने, नियत स्थान पर संग्रहण करने और फिर उसे यार्ड से बाहर के प्राकृतिक तालाब में पहुँचाने के लिए सभी सुविधाएँ लगायी गयी हैं। इससे यार्ड को जलभराव से मुक्त किया जाता है और संरक्षित करते हुए जल को बर्बाद होने से बचाया जाता है। यार्ड के चारों ओर वृक्षारोपण और आर आई एन एल के लोगो सा निर्मित पार्क इस बात को प्रमाणित करता है कि आर आई एन एल के लिए न सिर्फ यह एक आदर्श यार्ड है, बल्कि कंपनी की विविध श्रेणियों के गुणवत्तापूर्ण उत्पादों की बिक्री के साथ-साथ कंपनी-ग्राहक संबंध स्थापित करने में विशेष भूमिका निभाता है।

संतोष

जीवन को सुखी रखने और मन की चंचलता को नियंत्रित करने के लिए महापुरुषों, शास्त्रों एवं लोकोक्तियों आदि में संतोष रखने की बात कही जाती है। कई बार किसी की कुछ आर्थिक व भौतिक सहायता करके भी हम संतोष धन प्राप्त करने का उपक्रम करते हैं, जो संभवत: बहुत ही अल्पायु और तुच्छ होता है। केवल ऐसी सहायता से हमें संसार के दु:खों से छुटकारा नहीं मिल सकता। जब तक मनुष्य के स्वाभाव में परिवर्तन नहीं होता, उसे संतोष सुख की प्रप्ति नहीं हो सकती। क्योंकि मानव की शारीरिक आवश्यकताएँ तो अनंत हैं और सदा बनी रहेंगी और जहाँ आवश्यकताएँ अनंत हों, वहाँ संतोष का होना तो दूर, क्षणिक भी मुश्किल है।

संतोष प्राप्ति का एक ही उपाय है कि मनुष्य अपने आप को संपूर्णत: पवित्र कर ले। जब मनुष्य अपने आप को संपूर्णत: पवित्र कर लेता है, तभी वह संसार के दु:ख और संताप से मुक्त होकर संतोष को प्राप्त कर सकेगा। वैसे तो कहा यह भी जाता है कि हमारे समस्त दु:खों का कारण हमारा अज्ञान है, जो हमेशा हमें द्वंद्व में रखता है और क्लेश व दु:ख को बढ़ाता है। यह बात बिल्कुल ही सही है कि अज्ञान ही हमारे दु:खों का कारण है।

भगवान बुद्ध ने भी इसी बात का समर्थन किया है, यथा 'संसार में दु:ख है। दु:ख का कारण है। दु:ख का निवारण भी है। बुद्ध का इशारा मनुष्य की आवश्यकताओं की ओर है। वे मानते हैं कि आवश्यकताएँ ही दुखों की जननी हैं। जब-जब मनुष्य की इच्छाएँ और आवश्यकताएँ बढ़ेंगी, मनुष्य दु:खी ही होगा। उसे संतोष धन की प्राप्ति नहीं हो सकती। अत: उन्होंने आत्मिक और बौद्धिक शुद्धता पर बल दिया।

संतोष भी एक मनोभाव है, जो मस्तिष्क के द्वारा अपनी इच्छाओं के अनुरूप ही हमारे शरीर को चलाता है। लेकिन यह ठीक उसी प्रकार से है, जैसा कि कोई मशीन, जो अपनी स्थिति के अनुरूप शोर-शराबा करती है और आउटपुट कम देती है या शांति से काम करते हुए आउटपुट अधिक देती है। अर्थात यदि मस्तिष्क में चंचलता अधिक रहेगी तो संतोष का मिलना कम होगा और यदि मस्तिष्क में चंचलता कम होगी तो संतोष की ओर जल्दी बढ़ा जा सकता है।

संतोष ईश्वरीय अथवा प्राकृतिक विधान का अनुसरण करता है। जैसे संसार के अन्य प्राणी अपने कल की चिंता किये बगैर संतोष के साथ वर्तमान में जीवित रहते हैं, वैसे संतोषी व्यक्ति भौतिक सुखों की तलाश से दूर रहकर कम खाकर और गम खाकर सुखी रहता है, जो बहुत मुश्किल और त्यागपूर्ण है।

कई बार ऐसा देखने के लिए मिलता है कि कोई अमीर, जो सारी सुख-सुविधाओं से लैस होने के बावजूद भी चैन की नींद सो नहीं पाता और एक मजदूर भरपूर काम करके थक जाता है और किसी तरह पेट भरके अपनी बाहों का तकिया बनाकर खर्राटें लेकर सो लेता है। क्योंकि मजदूर को कल की चिंता अपनी रोटी तक है, जबकि अमीर की चिंता और कई कोठी तक की। फिर तो कुछ पाने के लिए कुछ तो खोना ही पड़ेगा।

गीता में भी कर्म करते रहने और फल की इच्छा नहीं रखने का जो संदेश दिया गया है। उसमें भी इशारा संतोष प्राप्त करने की है। क्योंकि इच्छाओं का जब विस्तार होगा तो उसका प्रतिफल पाने की ललक बढ़ेगी और जब ललक बढ़ेगी तो दु:ख का आविर्भाव होगा।

ऐसा भी नहीं है कि संतोष अचानक किसी को प्राप्त हो जाए और वह बिल्कुल चित्तशुद्ध होकर बैठ जाए। संतोष प्राप्ति का भवन शनै: शनै: हमारी दया, करुणा, ममता, स्नेह, प्रेम और विश्वास आदि की नींव पर खड़ा होता है। उसमें त्याग और बलिदान का रंग-रोगन करना पड़ता है। संतोष प्राप्ति के बाद मनुष्य लगभग स्थितप्रज्ञ सा हो जाता है। वह मानवेतर चिंतन से पूर्ण हो जाता है और पूर्णत: प्रकृतिस्थ हो जाता है। इसके लिए उसे किसी जंगल, पहाड़ अथवा पीर, दरगाह और मंदिर धाम आदि जाने की कोई जरूरत नहीं होती।

पाश्चात्य विद्वानों ने भी संतोष को अपने-अपने तरीके से व्याख्यायित किया है। जॉन स्टुअर्ट ने कहा है कि 'मैं अपनी इच्छाओं को विस्तार देकर सुखी होने के बजाय अपनी जरूरतों को सीमित करके सुख की तलाश करूँगा।' इब्रानियो में भी कुछ इसी तरह की बात कही गई है, यथा: 'अपने जीवन को धन के लोभ से मुक्त रखो और जो कुछ तुम्हारे पास है, उसी में संतोष करो। क्योंकि परमात्मा ने कहा है कि मैं तुम्हें ऐसे ही नहीं छोड़ूँगा, मैं तुझे कभी नहीं त्यागूँगा।'

लेकिन संतोष का एक अलग सामाजिक व सांसारिक पहलू भी है, जिसमें संतोष से कारोबारी दुनिया और वैज्ञानिक अनुसंधान कार्य नहीं हो सकेंगे। अत: यह माना जाना चाहिए कि संतोष सामूहिक नहीं, बल्कि व्यक्तिगत स्तर पर प्राप्त करने की मनोवृत्ति है, जो मात्र मनुष्य के भीतर के अंतर्द्वंद्व को समाप्त करता है और उसके लिए शांतचित्त जीने का रास्ता प्रदान करता है। इसी लिए कहा गया है कि 'संतोषम् परमम् सुखम्'। अर्थात संतोष एक महान सुख है। इन्हीं बातों से प्रेरित होकर रहीम ने भी लिखा है कि

'गो धन, गज धन, बाज धन और रतन धन खान।
जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान।।'

श्री सुधीर निगम की कविताएँ

कविता

सलाह (1)

एक स्वनामधन्य कवि
हमें अपना कवि मित्र मानते थे
मोहल्ले के नाते
हम भी उन्हें जानते थे।
एक दिन चाय के वक्त
वे हमारे घर पधारे
आते ही परोस दिये
अपने गिले शिकवे सारे।
रोये कि न तो मुझे कोई
कवि सम्मेलन में बुलाता है
और न ही मेरे घर पर
गोष्ठी के लिए आता है
संपादकों ने तो मेरे विरुद्ध
साजिश ही रच डाली है
प्रकाशनार्थ भेजने से
कोई रचना नहीं बची है
पर किसी पत्र या पत्रिका को
मेरी कविताएँ नहीं भाती हैं
संपादक का खेद अर्जित कर
मेरे खर्चे पर लौट आती हैं।
मोहल्लेदार और मित्र जब कभी
मेरे घर चाय पर आते हैं
वे मेरी कविता की
गंध पाते ही भाग जाते हैं
फिर भी रचनाओं का सृजन
दिन रात बढ़ रहा है
देवी सरस्वती का कर्ज
मेरे ऊपर चढ़ रहा है
कविताएं सृजन के बाद
एक तो मेरी डायरी में आबाद हैं
और श्रोताओं को सुनाने हेतु
सभी मुझे याद हैं।
अब भाई साब आप ही बताएँ
मैं कहाँ जाऊँ
श्रोताओं को कहाँ से लाऊँ
उनकी व्यथा से द्रवित हो
मैंने सोचा पहले चाय मंगाऊँ।
तभी ध्यान आया
कि कोई कवि जब किसी को
चाय पिलाता है
तो पीने वाला सदा उसका
गलत अर्थ लगाता है यही सोचता है
कि एक कप चाय पिलाएगा
और कम से कम
तीन चार कविताएँ झिलाएगा
अत: मेरी मति ठिकाने आई
और मैं बोला, कवि भाई
आप बेकार सुनने वालों के
अकाल का रोना रोते हैं
कमरे में अकेले बैठकर कविताएँ बाँचें
क्योंकि दीवारों के भी कान होते हैं।

सलाह (2)

उन्होंने हमारी बात सुनी
मन ही मन गुनी
घर पहुँच कमरे में
उन्होंने दीवारों को कविताएँ सुनाई
दीवारों ने सुनीं, पर न हूट किया
न तालियाँ बजाई।
इससे दुखी हो उन्होंने एक कांड कर दिया
पड़ोसी से खबर पाकर
पुलिस ने उन्हें धर लिया
चार्जशीट लगा पुलिस द्वारा
उन्हें अदालत में लाया गया
उन पर लगा आरोप
मजिस्ट्रेट द्वारा बताया गया
तुमने दस लोगों को फुसलाकर
कमरे में बंद कर लिया
उन्हें बलात् अपनी कविताएँ
सुनाने का अपराध किया
कविताएँ सुनर्तेसुनते दसों ने
अपने सिर के बाल नोच डाले
फिर ताजे गंजे हुए सिर
नाखूनों से खँरोंच डाले
तुम असंपृक्त हो, कविताएँ बाँचते रहे
लहूलुहान सिर आत्महत्या के
मौके जाँचते रहे
अत: इस अपराध के लिए
अदालत तुमको...
ठहरिए हुजूर, कवि बोला,
एक मौका तो दीजिए हमको
मैं कठघरे से ही अपनी सफाई में
आपको एर्कदो कविताएँ सुनाऊँगा
और अदालत में कार्व्यपाठ का
नया कीर्तिमान बनाऊँगा
मजिस्ट्रेट ने अनसुनी करते झट से कहा
तो अदालत का फैसला यही रहा
तुम्हें बाइज्जत बरी किया जाता है
ध्यान रहे, निर्दोष कवि सिर्फ फरमाइश
पर ही कविताएँ सुनाता है।

जरा संभल के

पति पत्नी की कलह चल रही थी
सुलह की घड़ी बार-बार टल रही थी
जब पत्नी के सारे तर्क खत्म हो गये
उसे लगा उसके विचार सो गये
तो उसने चीखकर कहा
अब और नहीं जाता सहा
किसी दिन 'मैं जान दे दूँगी'
तब तुम्हें 'आटा दाल का भाव'
पता चलेगा।
हिंदी के समीक्षक पति ने ये सोचा,
लगता है कि बिना कोई, टिप्पणी लिए
यह प्रसंग भी नहीं टलेगा।
अत: बोले - किसी दिन मैं जान दे दूँगा
तब आटा दाल का भाव पता चलेगा
यही तुम्हारा कथ्य है
चुनावी मेनीफेस्टों की तरह
इसमें भला क्या तथ्य है
किसी दिन कहकर वाक्य को
संदेश से न भरो पहली बात यह
कि जान देने की तिथि तय करो।
'जान दे दूँगी' वाक्यांश
धमकी की छाया से
आच्छादित एक वादा है
लगता है इसे भी
चुनावी आश्वासनों की तरह
पूरा न करने का इरादा है।

और जो 'आटा दाल के भाव' वाला
मुहावरा तुमने अपने वाक्य में जड़ा है
लगता है आम विद्यार्थी की तरह
तुमने भी इसका शाब्दिक अर्थ ही पढ़ा है।
यूँ भी इसका प्रयोग
यहाँ पर ठीक नहीं है
क्योंकि यह मेरे ऊपर सटीक नहीं है
तुम्हारे तथाकथित जाने के बाद
होटल में जा पेट भरूँगा
या कभी दोस्तों के यहाँ चरूँगा
लेकिन फिर शादी नहीं करूँगा
अत: आटा दाल
लाने की जरूरत किसे रहेगी
तुम्हारे बाद भला
लाने को कौन कहेगी।
पत्नी बोली बस, बस
ज्यादा लेक्चर मत पेलिए
जितना मैं हजम कर सकूँ
उतना ही बुद्धि में ठेलिए।
आपके कथन से साफ है
कि मेरे जाने के वाद
आप दूसरी शादी नहीं करेंगे
हाय राम, आप हमें इतना चाहते हैं
तो चलिए हम भी नहीं मरेंगे।

कवि बनाम उल्लू

जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि
इस उक्ति का हम
पारंपरिक अर्थ लेते थे
इसी कारण कवियों को
खूब सम्मान देते थे।
गणित के अध्यापक
हमारे मित्र एक दिन घर आए
उक्ति से जुड़ी हमारी
आस्था देख बड़े चकराये
बोले,
रवि की तुलना में कवि की ऊँची पहुँच
न्यूनातिन्यून भी न थी,
न है, न होगी भाई
यह उक्ति आत्मश्लाघा में
स्वयं कवियों ने है गाई।
कवि और रवि की उक्ति का
निहितार्थ तुम्हें बतलाता हूँ
गणित के तर्क से समझाता हूँ
रवि पहुँचे न जहाँ अंधेरा होता है वहाँ
माना कि जहाँ होता है अंधेरा
उल्लू डालते हैं आराम से वहाँ डेरा
चूँकि, कवि भी वहाँ पहुँच जाता है
जहाँ रवि नहीं पहुँच पाता है
अत:, सिद्ध होता है कि कवि और उल्लू
पहुँचे हुए समानधर्मा हैं
आगे भी, इस अर्थ में दोनों समान कर्मा हैं कि
कवि मंच पर कविताई करते करते
रात में जागता दिन में सोता है
इसलिए, उल्लू सा हो जाता है
और उल्लू ढोते ढोते सवारी अपने को सदैव
लक्ष्मी से वंचित कवि-सा पाता है।

लालची राजा

माईडास नामक इक राजा
फ्रिगिया पर शासन करता था
खून चूस कर जनता का
निज राजकोष को भरता था।
उसे सुधारने को वर देने
ईश्वर उसके स्वप्न में आये
पर राजा ने यह वर माँगा
जिसे छुए सोना हो जाए।
राजा को इच्छित वर देकर
ईश्वर तो निज धाम गये
प्रात: उठकर माईडास को
कुछ अनुभव हुए नितांत नये।
शय्या, वस्त्र, पुत्री, पत्नी और
भोजन पानी जिसे छुआ
ईश्वर के वर के प्रताप से
वह सब का सब स्वर्ण हुआ।
राजा के सिर नई मुसीबत
किससे बोले और क्या खाये
रोये किससे अपना दुखड़ा
कोई उसके पास न आए।
फिर बहुत पुकारा ईश्वर को
पर उसने भी न कान धरा
राजा का इतिहास रह गया
लालच में बेमौत मरा।
यही सीख इस कविता की है
मुफ्त के धन पे हाथ न धरना
मिले परिश्रम से जो बच्चों
उसे सदा सौभाग्य समझना।

बादल

इक नन्हें भोले बादल ने
जिद की तारों से मिलने की।
था चारों ओर उजियारा छाया
तारे सारे छिपे हुए थे
आसमान में एक अकेले
सूरज दादा तपे हुए थे।
बादल बोला, दादा, दादा
पता सितारों का बतला दो
हमें खेलना उनसे जी भर
या खुद उनको जाकर ला दो।
सूरज बोला बादल मैंने
कभी न देखा तारों को
कभी-कभी ही चंदा मामा
मिल पाते उन प्यारों को।
पृथ्वी के घूमने से लगता
मैं निशि दिन जाता आता हूँ
पर स्थिर होकर निज प्रकाश में
उन्हें देख न पाता हूँ।
सुना है मेरे सोते ही
तारे सारे आ जाते हैं
टिमक टिमक टिम टिम करके
आसमान पे छा जाते हैं
उसी समय तुम बादल भैया
उनका पूछ ठिकाना लेना
और खेलना जमकर उनसे
सुबह मुझे भी बतला देना
मुझे कभी न दर्द गान देंगे
आदत है सबको छलने की।

- 104 ए/315, रामवाग
कानपुर-208012
मोवाइल: +91 9839164507

डॉ एम शिवप्रसाद राव की कविताएँ

आजादी का अमृत

असुर विदेशी पालन से विमुक्ति पाने के लिए
स्वतंत्रता संग्राम के सागर मंथन से
उपलब्ध आजादी का अमृत पानेवाले
आजादी का अमृत महोत्सव मनानेवाले
जरा याद कर लें!

आज कृतज्ञ भारतीय सहृदय से याद करें पहले
समुद्र मंथन से निकले हालाहल का पान कर
जगत रक्षक गरल कंठ जगदीश्वर की भांति निकले
त्यागशील वीर जवानों की अनुपम कुरबानी
जरा याद कर लें!

स्फूर्ति प्रदाता कर्मवीर देशभक्तों का बलिदान
आजादी की बुनियाद बने सत्याग्रहियों का बलिदान
वीर नारी झाँसी लक्ष्मी की आजादी का दृढ़ संकल्प
अल्लूरि सीतारामराजु के जैसे वीरों का आत्मार्पण
जरा याद कर लें!

बंकिमचंद्र चटर्जी का स्फूर्तिप्रद वंदेमातरम
जयहिंद का नारा अमर नेताजी का त्याग
लाल बाल पाल की जनजागृति का संकल्प
स्वतंत्र भारत के प्रदाता पूज्य बापू जी की आत्माहुति
जरा याद कर लें!

संविधान निर्माता अंबेड्कर की विशिष्ट विज्ञता
राजेंद्रप्रसाद का लोकतंत्र पालन
धीर पटेल के राज्यों का एकता लक्ष्य
स्नेहशील चाचा नेहरू का शाँतिप्रद पंचशील
इंदिरा की 'गरीबी हटाओ' की भव्य प्रेरणा
लाल बहादुर की स्फूर्ति 'जय जवान जय किसान'
जरा याद कर लें!

रामराज्य को साकार करनेवाले मन मोहन
अंतर्राष्ट्रीय यशस्वी वाजपेयी का सुशासन
वतन इबादत में जान निछावर करनेवाले राजीव
ये सब हैं आदर्श प्रगति प्रदाता हमारे भारत के
जरा याद कर लें!

ये सब हैं नवभारत आजादी की बुनियाद
ये सब हैं वसुदैव कुटुंबकम सच बनानेवाले
विश्वकल्याणकारी सत्य अहिंसा का सुंदर भवन
निर्माण करने की है हर भारतीय की जिम्मेदारी
जरा याद कर लें!

आज आजादी का अमृत पीते, पिलाते
'जियो और जीने दो' का नारा लगाते
'सब का विश्वास सब का विकास' कहते
'बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ' का लक्ष्य सफल करने
महिला साधिकारिता समता सच बनाते
जरा याद कर लें!

सब भारतीय कृतज्ञता जताकर
मुक्त कंठ से स्वर में स्वर मिलाकर
कहें 'सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्तान हमारा
सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्तान हमारा'
जरा याद कर लें!

शहीदों की याद

शहीदों को याद करने का जश्न
मनाया जाता है बड़ी खुशी से, मेरे यार
आजादी का नूर हर सूँ
फैलाया जाता है बड़ी खुशी से, मेरे यार

पर गम की बात है कि मेरे साथी
चंद जवानों के कंधों पर ही
आँसू बहाये जाते हैं
तिरंगे झंडे के सामने सर झुकाये जाते हैं

नफरत की जहर से इन्सानियत पर
दाग न लगायें शहीदों का जश्न, मेरे यार
जिगर के प्यार की पहचान बने और
अलगायी दीवारों को तोड़ शहीदों का जश्न, मेरे यार

प्यारा मुल्क तो आजाद हुआ हमारा
पर जेहन गुलाम रहा गुरबत का हमारा
जिस्म की एकता नहीं हमारी
नेक दिलों की एकता है हमारी

गुलदस्ते के रंग बिरंगे गुल हैं
हम सब प्यारे हिंदुस्तान के
गुल खिलायें प्यार के
वतन की माटी सोना बनाये सब हिंदुस्तान के

भाई चारे के धागे में गूँथकर हम सब
मादरे हिंद के गले के हार बने हम सब
धर्म की इमारत में बजी
खुदगर्ज की घंटियाँ न सुनें हम सब

इन्सान के जिगर में छिपी
गरम आहों की आवाज सुनें हम सब
भँवर में फँसी कश्ती को देख
कभी हिम्मत न हारें हम सब।

हम समझें कि गम की दवा शराब नहीं है
मान लें कि गम की दवा प्यार ही प्यार है
गमगीनों के जिया के घाव भर देंगे हम
टूटे दिलों को जोड़ते जायेंगे हम

हिम्मत हारने वालों को ढाढ़स बंधायेंगे हम
गम खुशी में हमेशा साथी रहेंगे हम
मगर साथ न कभी किसी का छोड़ेंगे हम
अपने वतन की भलाई में जाँ निसार करेंगे हम

शहीदों की है यह आवाज गूँजते हैं कब्र से
सुन सको तो सुन शहीदों को याद करनेवालों
वे दिखावे की खुशबूदार माला कभी नहीं चाहते
अपनी याद से सोनेवालों को जगाना हैं चाहते

जागो हे मेरे वतन के प्यारे
यह गीत गाता चल मेरे प्यारे
हम सब हैं भाई भाई हिंदुस्तान के
हम सब हैं रखवाले हिंदुस्तान के।

कोरोनासुर की चेतावनी

हे चैन के आशिक!
देखकर सुरलोक
ईर्ष्यालु की आँख
काँटा बना रे आशिक

पंचशील शाँति कपोत के
पंख मरोड़कर मित्र द्रोही बने
दुराक्रमण उनका आशय बना
नर संहार उनका आनंद बना

भाई भाई कहनेवाले
धोखा देकर कृतघ्न बने
दुश्मन बनकर तुम्हारे
कोरोना सैनिक निकले

निठुर असुर शक्ति मेरी
निर्मम संक्रामक बनी
मैं लाचार होकर आयी
सत्यानाश साथ लायी
हे चैन के आशिक!

कंधे से कंधा मिलाकर
संकल्प अटल बनाकर
यशस्वी चक्रधारी
नरेंद्र मोदी को सारथी बनाकर
धीर वीर किरीट बनकर

गाँडीव धारण कर
योगास्त्र संधान कर
कोरोनासुर का गला दबाओ
पैरों तले कुचल डालो

अलसता न करना
झट उमड़े नवचेतना
अपना गड्ढा खुद न खोदना
श्रमेव जयते समझना

बुढ़ापे की लाठी चिता बन रही है
माताओं की गोद सूनी हो रही है
बहन की राखी बिखर रही है
हरी प्रकृति पतझड़ बन रही है

अकेले चना भाड़ नहीं फोड़ सकता
मिल्लत में ताकत का नारा सच बनाना
अनुशासन से कोरोना सुर का अंत करना
आप का भला जग का भला समझना

तुम्हारे साथ है वैध प्राणरक्षक
स्वास्थ्य प्रदान अनेक कर्मवीर
विपत्तियों में बचानेवाले अंगरक्षक
स्फूर्ति प्रदाता सेवा निरत सरकार।

- सागरिका लेआउट
प्लॉट नंबर 144, नेरेल्लवलसा
विशाखपट्टणम-531163
मोबाइल: +91 9989817215

भारत की अस्मिता है हिंदी

- सुश्री आकृति इशिका -

'हिंदी देश की भाषा है,
हर भारतवासी की अभिलाषा है।'

भारत एक विशाल राष्ट्र है। इसमें रहन-सहन, वेशभूषा, क्षेत्रीयता व भाषा संबंधी विविधता अनिवार्य है। फिर भी भारत एक अखंड देश है और इसकी अखंडता में एकता के सूत्र अंतर्निहित हैं। इस एकता को बनाए रखने में धर्म, इतिहास, सामाजिक मेल-जोल, राजनीति, संस्कृति, भौगोलिक सीमाओं आदि के साथ-साथ हिंदी भाषा भी बहुत सहायक है। भौगोलिक दूरियाँ भले ही हममें बहुत हैं, फिर भी हम भाषाई और भावनात्मक तौर पर परस्पर बंधे हुए हैं।

स्वतंत्रता अंदोलन के दौरान ही गांधीजी ने हिंदी की ताकत को भाँप लिया था, तभी तो स्वराज्य आंदोलन के लिए हिंदी का सहारा लिया और आजादी मिलने के बाद कहा कि 'दुनिया से कह दो गांधी अंग्रेजी भूल गया।' 14 सितंबर 1949 को भारतीय संविधान में हिंदी को राजभाषा बनाया गया और अलग-अलग प्रांतों की अपनी राजभाषाएँ रखने की छूट दी गई। लेकिन समझने वाली बात है कि हिंदी केवल राजभाषा ही नहीं, बल्कि अन्य भाषाओं व बोलियों को जोड़ने वाला धागा भी है। हिंदी में राष्ट्रभाषा होने के समस्त गुण विद्यमान हैं।

भारतेंदु जी के मतानुसार 'राष्ट्र की उन्नति में राष्ट्रभाषा सर्वोपरि है।' राष्ट्रभाषा के अभाव में देश की सभ्यता व संस्कृति कुंद हो जाएगी और देश ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में आत्मनिर्भर नहीं हो सकेगा, क्योंकि व्यक्ति स्वतंत्र बौद्धिक चिंतन एवं अन्वेषण नहीं कर पायेगा। विदेशी भाषा की बैसाखियों के सहारे हम प्रगतिशील राष्ट्रों के साथ नहीं दौड़ पायेंगे। अत: राष्ट्रभाषा का महत्व सर्वोपरि है।

विदेशी भाषा के जाल में हम इतना जकड़े हुए हैं कि हिंदी में बात करने से भी कतराते हैं, जबकि हिंदी हमारी पहचान है और हमें इस पर गर्व करना चाहिए, जैसाकि अन्य स्वाभिमानी देश के नागरिक करते हैं। हिंदी की उपेक्षा करना राष्ट्र व संविधान की उपेक्षा करने जैसा है। फिर भी राज्य व केंद्र सरकारों के परस्पर पत्र-व्यवहार का माध्यम अंग्रेजी है। दुर्भाग्य की बात यह है कि हमारा मनसा, वाचा, कर्मणा हिंदी के प्रति जो ममत्व होना चाहिए, वह क्षीण सा हो रहा है।

शिक्षा का माध्यम जिस तेजी से अंग्रेजी बन रही है, वह बहुत ही चिंतनीय है। हमें यह जरूर देखना चाहिए कि विदेशी राष्ट्राध्यक्ष जब भारत आते हैं तो अपनी भाषा में बात करते हैं और हम अंग्रेजी में बात करने में गर्व महसूस करते हैं। हमें समझना चाहिए कि हमारे लिए अंग्रेजी तो बस भाषा है, पर हिंदी तो राष्ट्रभाषा है।

अत: हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि हिंदी का विकास कैसे हो और इसके लिए पूरे देश में कैसे जनमत तैयार किया जाए? इस उद्देश्य से हमें अपने कार्यक्रम व प्रणालियों को विकसित करना चाहिए। देश के सभी राज्यों एवं केंद्र शासित राज्यों में हिंदी की पढ़ाई को प्राथमिकता देना चाहिए। जिन राज्यों में परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं हों, वहाँ एक न्यूनतम साझा कार्यक्रम के तहत प्रचार-प्रसार, प्रोत्साहन एवं अभिप्रेरणा के काम को आगे बढ़ाना चाहिए। जहाँ परिस्थितियाँ अनुकूल हों, वहाँ स्थिति को और बेहतर बनाने के लिए हिंदी को महाविद्यालय स्तर तक की शिक्षा में एक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाना चाहिए, जिससे भारत के कोने-कोने में लोग इसका उपयोग गर्व के साथ कर सकें। उन्हें यह एहसास होना चाहिए कि हम भारतीय हैं और भारत की अस्मिता हिंदी है। हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार का सर्वोत्कृष्ट माध्यम समाचार पत्र और दूरदर्शन चैनल हैं। इनकी उन्नति हिंदी की उन्नति है।

हिंदी के साथ हमारे देश का भविष्य एवं अस्मिता की पहचान का मुद्दा जुड़ा हुआ है और आगे भविष्य में यह जुड़ा रहेगा। हिंदी के साथ-साथ प्रांतीय भाषाओं को भी उचित सम्मान मिलना चाहिए। हिंदी को समृद्धिशाली एवं संपन्न बनाने के लिए हमारा यह कर्तव्य है कि हम नया दृष्टिकोण अपनाकर व्याकरण के नियमों को सुगम बनायें। तद्भव शब्दों को तत्सम शब्दों में परिवर्तन कर देने के कारण भाषा में कृत्रिमता आ गई है। उसे दूर करें, अन्यथा भाषा की जटिलता बढ़ती जाएगी।

बाबू गुलाबराय ने कहा है - 'पारिभाषिक शब्दावली का सारे देश के लिए प्रगामीकरण आवश्यक हो, क्योंकि जब तक हमारी शब्दावली सारे देश में न समझी जाएगी, तब तक न तो वैज्ञानिक क्षेत्रों में सहभागिता संभव हो सकेगी और न विद्यार्थी लाभान्वित हो सकेंगे। अत: आशा है कि राष्ट्रभाषा हिंदी समस्त देश को एक सूत्र में आबद्ध करके नवराष्ट्र के निर्माण में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान कर सकेगी। अंत में बस इतना कहना चाहूँगी कि -

'मन की भाषा, प्रेम की भाषा।
हिंदी है भारत जन की भाषा।।'

- कक्षा: दसवीं
डी ए वी सेंटेनरी पब्लिक स्कूल
उक्कुनगरम, विशाखपट्टणम

हिंदी हैं हम वतन है हिंदोस्ताँ हमारा

- मास्टर वी आरुश -

मुहम्मद इकबाल की रचना 'हिंदी हैं हम वतन है हिंदोस्ताँ हमारा' में दो बातें स्पष्ट होती हैं। पहली हिंदी (भारतीय) होने का गर्व और दूसरी अपनी देशभक्ति का भाव। हिंदी भाषा ने देश के विकास, उसकी एकता व अखंडता, प्राचीन विरासतों और इतिहास से लेकर आधुनिक भारत के विकास तक अपनी भूमिका को स्पष्ट किया है।

हिंदी कभी भी किसी भी भाषा की विरोधी नहीं रही है और आज राष्ट्रभाषा के लिए हिंदी के अलावा कोई दूसरा विकल्प भी नहीं है। यह सच है कि हमारे देश में अनेक समृद्ध भाषाएँ प्रयोग में हैं, फिर भी हम एक राष्ट्रभाषा विहीन देश हैं। कई बार तो अपने ही देश में हिंदी बोलने वालों को गँवार व स्तरहीन समझा जाता है। यह एक विडंबना ही है कि **80** करोड़ से अधिक लोगों के द्वारा बोली जाने वाली भाषा अपने देश की राष्ट्रभाषा भी नहीं है। कभी-कभी मन में प्रश्न उठता है, 'क्या हम इस विरासत की रक्षा कर पायेंगे? हिंदी को उसकी सही पहचान दिला पायेंगे? क्या शुभकामनाएँ देने, कुछ प्रतियोगिताएँ आयोजित कर देने मात्र से हिंदी को उचित सम्मान मिल जाएगा?

किसी भी आयोजन में लोग अंग्रेजी में बोलना पसंद करते हैं, चाहे उन्हें अंग्रेजी आए या न आए। संभ्रांत बनने के चक्कर में लोग अपनी भाषाई पहचान को मिटा रहे हैं। यह समस्या हिंदी भाषी राज्यों में अधिक है। नई पीढ़ी के ज्यादातर बच्चे अंग्रेजी बोलना और लिखना अधिक पसंद करते हैं। क्योंकि उनके अभिभावक और अध्यापक अंग्रेजी के माध्यम की पढ़ाई-लिखाई पर ही जोर देते हैं। इस प्रकार हम कहीं न कहीं भाषा का अनादर भी कर रहे हैं।

'राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है।'

- महात्मा गांधी

गांधी जी के उपरोक्त कथन का सार यही है कि हिंदी हमारे राष्ट्रीय व्यवहार के काम में उपयोग की जाए और पूरा देश एक भाषाई सूत्र में बंध जाए। गांधीजी और उनके साथ-साथ देश की भावनाओं का ध्यान रखते हुए भारत के संविधान में 'हिंदी' को राजभाषा का दर्जा दिया गया। राजभाषा चुने जाने से पहले हिंदी के विशेष गुणों का आकलन किया गया और पाया गया कि हिंदी देश में सर्वाधिक बोली व समझी जानेवाली भाषा है और कई अन्य भाषाओं के काफी समान गुणधर्म वाली है। इसमें ज्ञान-विज्ञान से लेकर सामाजिक विकास की सभी अवधारणाओं को धरातल पर उतारने की क्षमता है, जिससे भाषाई तौर पर एक विशाल भारत का निर्माण हो सकता है।

आज हिंदी को पूरी दुनिया में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। अब तो विश्व की बड़ी कंपनियाँ जैसे गूगल, फेसबुक भी हिंदी के विकास में सहयोगात्मक रवैया अपनाने लगी हैं। आज हिंदी बोलते व सुनते एक गर्व की अनुभूति होती है। यह गर्व कुछ यूँ ही नहीं पनपा है, बल्कि इस देश के अनेकों हिंदी प्रेमियों, साहित्यकारों, विद्वानों, शिक्षकों एवं राजनेताओं आदि के सहयोग से यह संभव हो सका है। आज हिंदी दुनिया के लगभग **35** से अधिक देशों में पढ़ाई जाती है। भारत बहुभाषी देश है और हमें जरूरत है कि हम अपनी सभी भाषाओं का यथोचित सम्मान करें। हमारे स्कूलों में किसी अंतरराष्ट्रीय भाषा की तरह ही किसी भारतीय भाषा को सिखाने के लिए बच्चों के समक्ष विकल्प होना चाहिए। इससे हमारी भाषाई एकता मजबूत होगी और हिंदी के लिए एक सुखद माहौल बनाया जा सकेगा।

शिक्षा प्रणाली में संशोधन की जिम्मेदारी राज्य और केंद्र सरकारों की है। इस प्रकार शिक्षा में हिंदी पूर्णत: समाहित हो, यह जिम्मेदारी उन्हीं की है। जनता तो मात्र सरकारी प्रावधानों का अनुसरण करती है और सुझाव दे सकती है। बहुत से देश हैं, जहाँ सभी राष्ट्रीय आयोजन उनकी अपनी भाषा में होते हैं, जबकि हमारे देश में सभी राष्ट्रीय आयोजन मुख्यत: अंग्रेजी में तथा यदा-कदा हिंदी में होते हैं। सभी राष्ट्रीय समारोह हिंदी में होने चाहिए और आवश्यक हो तो उसका अंग्रेजी अथवा प्रांतीय भाषा में अनुवाद साथ चला देना चाहिए। हमें भी हमेशा और हर जगह अपनी बात-चीत, कार्य-व्यवहार में हिंदी भाषा का प्रयोग करना चाहिए, ताकि भारत की भाषाई अस्मिता सुनिश्चित हो सके और नई पीढ़ी एवं तथाकथित भारत के अंग्रेजी प्रेमी लोगों को पता चले कि भारत भाषाई व सांस्कृतिक रूप से बहुत संपन्न देश है। हमें अपनी झिझक जो कभी-कभी हिंदी न जानने वाले लोगों को होती है, उससे बाहर आना चाहिए। जैसे भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी जी यदि इस झिझक के साथ संयुक्त राष्ट्र संघ की बैठक में जाते कि 'वहाँ हिंदी कोई नहीं जानता है तो फिर मैं हिंदी में कैसे भाषण दूँ' तो क्या वे अपना प्रथम भाषण हिंदी में दे पाते? शायद कभी नहीं। लेकिन वाजपेयी जी ने अपनी झिझक को तोड़ा और आज उनका भाषण इतिहास बन गया है। अत: झिझक छोड़ हमें हिंदी के विकास मार्ग को प्रशस्त करना चाहिए।

- कक्षा: सातवीं
डी ए वी सेंटेनरी पब्लिक स्कूल
उक्कुनगरम, विशाखपट्टणम

अनाम रिश्ता

- डॉ रश्मि शील -

'दीदी, समझ में नहीं आ रहा, कैसे कहूँ, अब तुम ही माँ को संभालो।' लक्ष्य की बातों में तल्खी थी। 'क्या हुआ उन्हें? अभी कल ही तो मेरी बात हुई है उनसे, तब तो ठीक थीं,' मैंने पूछा। 'अरे, उन्हें कुछ नहीं हुआ, उन्होंने तो हम लोगों का जीना हराम कर दिया है, मम्मी की इश्क-मिजाजी से तंग आ गया हूँ', लक्ष्य ने कहा तो मैं चीख उठी, 'लकी..., जबान संभाल कर... क्या बक रहे हो?'

'हाँ जी! सही कह रहा हूँ, आजकल कोई देवास नाम के सज्जन हैं, मम्मी उन्हीं के साथ घूम रही हैं, हर दिन सैर-सपाटे के लिए सुबह ही चली जाती हैं और शाम तक वापसी होती है।' 'चुप रहो', मैंने क्रोध में कहा तो वह बोला 'मुझे तो चुप कर दोगी, मगर मोहल्ले में जो कानाफूसी हो रही है, उसका क्या करोगी? मैं मानसिक रूप से कितना परेशान हूँ, यह तुम दिल्ली में बैठकर महसूस नहीं कर सकती।' इतना कहकर उसने फोन काट दिया। सुनकर मैं बेचैन हो उठी, यह लक्ष्य क्या कह रहा है? माँ ने कितनी मुसीबतों से हमें पाला है। वह सब भूल गया, पापा के जाने के बाद माँ ने किस तरह हम दोनों भाई-बहनों की अकेले ही परवरिश की। उन्होंने कितने कष्ट सहे, वह सब मुझे एक-एक कर याद आने लगे...।

जब पापा की सड़क दुर्घटना में मृत्यु हुई थी, उस वक्त मैं कक्षा नौ में पढ़ रही थी और लक्ष्य सातवीं का छात्र था। ताऊ जी ने पूरा बिजनेस हड़प कर मम्मी को यह कह कर अलग कर दिया कि 'बिजनेस रोज कुँआ खोद कर पानी निकालने जैसा होता है। इसमें कोई तय आमदनी नहीं होती कि बँटवारा किया जाए। मैं दिन-रात खटता रहूँ और सब मजे करें, यह मैं नहीं कर सकूँगा।' इस तरह मम्मी को उस बड़े से घर में एक कमरा दे कर ताऊ ने कर्तव्य की इतिश्री कर ली।

मम्मी ने एक प्राइवेट स्कूल में नौकरी कर ली, जिससे हम दोनों की पढ़ाई नि:शुल्क हो गई। मगर राह अभी भी कठिन थी। मम्मी को स्कूल के लिए तैयार होकर निकलने पर ताई जी का कटाक्ष पिटारा खुल जाता। हार कर मम्मी ने घर छोड़ दिया। वक्त चाहे अच्छा हो या बुरा, कभी रुकता नहीं, सो हमारा वक्त भी गुजर गया। मम्मी की सहेली निकिता ने अपने बेटे ईशान के लिए मेरा हाथ माँग लिया और मैं शादी के बाद दिल्ली आ गई।

अब तो लक्ष्य की भी शादी रुचिता से हो चुकी है। सब कुछ सही चल रहा था, मगर आज लक्ष्य ने अपने शब्दों से उथल-पुथल मचा दिया। पूरा दिन इसी उलझन में बीत गया। शाम को जब ईशान ऑफिस से आये तो मुझे उदास देखकर पूछा, 'क्या हुआ?' मैंने कहा, 'कुछ नहीं, मम्मी की तबीयत खराब है।' 'अरे, तो इसमें परेशान होने की क्या बात है? तुम ऐसा करो... दो-चार दिन के लिए लखनऊ हो आओ। युवान और विवान को भी अच्छा लगेगा। मैं शनिवार को आऊँगा तो तुम लोगों को वापस ले आऊँगा।' सुनकर मन कुछ हल्का हुआ और मैंने लखनऊ जाने की तैयारी शुरु कर दी।

ट्रेन जैसे ही चारबाग रेलवे स्टेशन पहुँची, युवान और विवान मामा-मामा कह दरवाजे की ओर दौड़ पड़े। लक्ष्य ने भी हमें देख लिया था। बोगी के भीतर आकर सामान खींचते हुए पूछा, 'दीदी, जीजाजी नहीं आये?' मैंने कहा, 'हाँ, वे अगले शनिवार को आयेंगे और हम सभी इतवार को वापस होंगे, साथ आते तो दो दिन में ही लौटना पड़ता।' 'हाँ, यह तो ठीक है,' कहते हुए हम ट्रेन से बाहर निकलने लगे।

प्लेटफार्म के बाहर आकर कार में बैठते हुए पूछा, 'घर में सब ठीक तो है?' 'हाँ, दीदी सब कुछ सही है, बस, मम्मी को क्या कहूँ...?' से आगे उसने कुछ और कहना चाहा। मैंने युवान और विवान की ओर इशारा कर उसे चुप रहने को कहा। मैं नहीं चाहती थी कि लक्ष्य बच्चों के सामने माँ के लिए अपशब्द बोले, हालाँकि वे दोनों चिप्स खाते हुए खिड़की के बाहर देखने में मस्त थे।

कार की हार्न सुनते ही रुचिता बाहर आई और प्रणाम करते हुए पूछा, 'दीदी! जीजा जी कहाँ हैं?' मैंने फिर से वही उत्तर दोहरा दिया। सुन कर रुचिता ने कहा, 'तब ठीक है। एक हफ्ते तक आप भी लैला-मजनू का लाइव टेलीकास्ट देख लीजिएगा।' सुनकर मैं चुप ही रही। जाहिर था कि मेरे बोलने से बात का बतंगड़ हो जाता और मैं कोई हंगामा नहीं चाहती थी। बच्चे भतीजी चारु के साथ कुछ ही सेकंड में ही धमाचौकड़ी मचाने लगे।

अंदर आकर मम्मी से मिली तो वह कुछ बुझी-बुझी और बीमार सी दिखीं। मैंने चिर-परिचित अंदाज में पूछा, 'क्या बात है? सुपर मॉम, कुछ दुबली हो रही हो?' प्रत्युत्तर में वे हौले से मुस्कुरा दीं। मन चाहता था कि मम्मी से सीधे पूछ लूँ, 'मम्मी, लकी क्या कह रहा है', परंतु एक बेटी माँ से उसके चरित्र के ऊपर प्रत्यक्ष रूप से आरोप लगाये, यह मुझे उचित नहीं लग रहा था। मम्मी ने तो एक चुप्पी सी धारण कर ली थी। उनका अति सहज व्यवहार मुझे भयभीत कर रहा था। खाना खाकर आराम करने के लिए बेड पर लेटी तो मन जैसे चिंता की वल्गाएं थाम कसमसाने लगा। समझ में नहीं आ रहा था कि जिस माँ ने अपनी पूरी जवानी अकेले काट दी, जब कि पापा के देहांत के बाद सुमित अंकल ने शादी का प्रस्ताव रखा था, जिसे माँ ने दृढ़ता से ठुकरा दिया था, वही आज किसी के प्रेम में दीवानी हो, यह कैसे विश्वसनीय हो सकता है?

तभी डोर बेल की आवाज से मेरी सोच थम गई। बगल

के कमरे से रुचिता की आवाज आई, 'आ गए देवदास बाबू अपनी पारो से मिलने।' सुनकर मैं झटके से उठ गई। बाहर आई तो देखा कि माँ एक अधेड़ से दिखने वाले व्यक्ति के साथ ड्राइंग रूम की ओर जा रही थी। ओह, तो ये हैं देवास जी, मैं उठ कर कमरे से बाहर आई, तब तक मम्मी किचन में आकर पानी का गिलास और बिस्किट ट्रे में रखकर चाय का पानी गैस पर चढ़ाने लगी।

मैंने कहा, 'मम्मी, आप चलो, मैं चाय लेकर आती हूँ।' वे विना कुछ कहे ट्रे लेकर चली गईं। चाय लेकर जब मैं ड्राइंग रूम पहुँची तो मम्मी और देवास जी धीमी आवाज में बातें कर रहे थे। मैंने चाय की ट्रे टेवल पर रखते हुए नमस्ते की, तो वे खुश होकर बोले, 'अरे! प्रिया बेटी, जीती रहो! जयंती जी ने तुम्हारे विषय में इतना कुछ बता रखा है कि मैं तुम्हें देखते ही पहचान गया।'

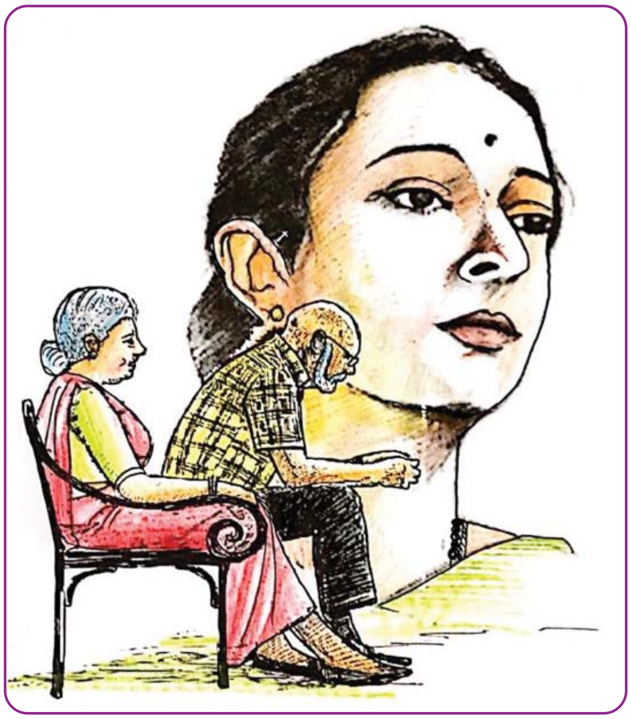

चाय पीते हुए देवास जी ने दिल्ली के मौसम, घर, परिवार, ईशान व बच्चों के विषय में बातें करते रहे, मम्मी को इस बीच मैंने मौन बैठे हुए ही पाया। चलते-चलते देवास जी ने कहा, 'प्रिया बेटी, अभी तो कुछ दिन रुकोगी ना?' 'जी, एक सप्ताह के लिए आई हूँ। अगले रविवार ईशान आयेंगे तो साथ ही जाऊँगी।' मैंने जवाव दिया। 'फिर तो ठीक है, अभी चलता हूँ, फिर मुलाकात होगी', कहते हुए उन्होंने अपना विजिटिंग कार्ड मुझे थमा दिया। प्रत्युत्तर में मैंने नमस्कार किया। उन्हें गेट तक छोड़कर अंदर आई तो देखा माँ चाय के बर्तन धो रही हैं। मैंने फ्राई पैन हाथ में लिया और कहा, 'अरे मम्मी, तुम हटो मैं करती हूँ।'

माँ चुपचाप अपने कमरे में चली गई। रुचिता इस बीच कमरे में ही रही। देवास के जाने के बाद बाहर आई और बोली, 'दीदी! देख लिया, मैं कहती थी न', और फिर हँसती हुई गुनगुनाने लगी, 'हम तो तेरे आशिक हैं सदियों पुराने', मैंने किसी तरह अपने क्रोध पर काबू पा लिया। कमरे में आई तो देखा कि माँ की आँखों में आँसू थे, जिन्हें उन्होंने मुझे आते ही पोंछ लिया।

मैं माँ के पास उनके बेड पर ही गोद में सर लेकर लेट गई, तो वे मेरे बालों में हाथ फिराने लगीं, पर बोली कुछ भी नहीं। 'मम्मी, तुम्हें क्या हो गया है? इतनी चुप क्यों रहने लगी हो?' मैंने पूछा तो बोली, 'प्रिया, घर में सब ठीक तो है ना, इतनी अचानक आई हो, इस समय तो बच्चों के स्कूल होंगे, तुम किसी परेशानी में तो नहीं हो'। माँ की चिंता देख हँसते हुए मैंने कहा, 'कुछ नहीं मम्मी, बस आप याद आ रही थीं इसलिए मिलने चली आ गई और बच्चों का भी बड़ा मन था नानी से मिलने का। सुनकर माँ चुप हो गई, परंतु मुझे लग गया कि उन्हें विश्वास नहीं हुआ है और मुझमें सच कहने की हिम्मत न थी।

अगले दिन सुबह देखा कि माँ टहलने जा रही थीं, तो उनके मना करने के बावजूद मैं उनके साथ चल पड़ी। प्रात: काल प्राय: लखनऊ के पार्क भ्रमण के लिए फ्री रहते हैं। हम साथ टहलते हुए लोहिया पार्क पहुँचे तो देखा कि देवास जी वहाँ पार्क में पहले से मौजूद थे। थोड़ी देर टहलने के बाद मम्मी थककर वेंच पर बैठ गई, जवकि मैं थोड़ी देर देवास जी के साथ इस आशा के साथ चलती रही कि शायद टहलते समय वह मम्मी के विषय में कोई बात करेंगे।

परंतु वे टहलते हुए भ्रमण की बातें करते रहे, अपनी नौकरी के समय के अनुभव बताते रहे और मैं अनचाहे भाव से सुनती रही। माँ को लौटने का उपक्रम करते देख हम भी वापस लौट पड़े। बाहर निकलते वक्त देवास जी ने कहा, 'प्रिया बेटी, दिल्ली जाने से पहले एक बार मेरे घर अवश्य आना। बच्चों को भी लाना।'

'जी अवश्य,' उस दिन बस इतनी ही बातें हुईं। उस शाम हम सब बच्चों को घुमाने के लिए चले गये। मम्मी से साथ चलने के लिए कहा तो उन्होंने मना कर दिया, बोलीं, 'तू जा, मैं आराम करना चाहती हूँ।' मैंने माँ से कहा, 'क्या बात है? माँ, तुम बड़ी जल्दी थक जाती हो।' मम्मी चुप ही रही, परंतु रुचिता ने व्यंग्यात्मक स्वर में कहा, 'अब दीदी बूढ़े शरीर में इतनी दम कहाँ रहती, इश्क का खामियाजा कुछ तो भुगतना ही पड़ेगा।' कहकर एक आँख दबा कर वह हँस पड़ी। मैं क्रोध पीकर रह गई।

अगली सुबह जब मैं जगी, तब तक मम्मी जा चुकी थी, रुचिता मुझे देख गुनगुनाने लगी, 'आज मेरी उनसे मुलाकात होगी, और फिर प्यार-वार की बात होगी...।' मैं अपने पर काबू नहीं कर पाई और रुचिता को डाँट दिया। मेरा बोलना लक्ष्य को अखर गया। बोला, 'दी, रुचिता जो कह रही है, वह तुम भी देख रही हो, हम कुछ गलत नहीं कह रहे हैं। माँ से क्यों नहीं पूछती?'

सुबह को गई मम्मी शाम को लौटीं, 'मम्मा, कहाँ गई थीं? कुछ वताया भी नहीं, बता देतीं तो मैं आपके साथ चलती। कितनी

चिंता हो रही थी।' परंतु मम्मी 'जरूरी काम था' कह कर कमरे में चली गई। वह रात बहुत ही तनाव में बीती। अगली सुबह मैं सबके उठने से पहले उठ गई और घर से बाहर निकल गई। मैंने निश्चय कर लिया था कि देवास जी से मिलकर इस मसले को साफ करके ही रहूँगी।

बाहर कड़ाके की ठंड थी। कोहरे के कारण कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। एक मन हुआ कि लौट चलें, परंतु मन में छाई धुंध को साफ करने से पहले बाहर की धुंध से पार पाना ही होगा, सोचते हुए निश्चय के साथ आगे बढ़ गई। देवास जी के विजिटिंग कार्ड को उस वक्त बिना देखे ही पर्स में डाल लिया था, उसे निकाला, पढ़ा और उनके आवास पर पहुँच गई।

वे प्रातः भ्रमण के लिए निकलने की तैयारी में थे। मुझे देखते ही खिल उठे और अंदर चलने लगे। मैंने सुझाया, 'अंकल चलिए, चलते हुए ही बातें करेंगे'। परंतु उन्होंने कहा, 'नहीं, आज घूमने का कार्यक्रम स्थगित। तुम से जी भर कर बातें करेंगे।' मैं मन ही मन खुश हुई कि जो मैं जानना चाहती हूँ, उसके लिए घर ही सही रहेगा। अंदर ड्राइंग में बैठते हुए उन्होंने आवाज दी, 'जीवन, दो कप कॉफी बना दीजिए।' अंदर से आवाज आई 'जी साहब।'

बैठते हुए कमरे को मैंने ध्यान से देखा। काफी करीने से सजा हुआ, साफ-सुथरा कमरा था। ड्राइंग रूम की हर चीज गृह-स्वामी की परिष्कृत रुचि का बखान कर रही थी। एक बड़े से फ्रेम में दीवार पर एक चित्र टंगा था, जिसमें देवास जी एक स्त्री व दो बच्चों के साथ मुस्कुरा रहे थे। वे बोले, 'मेरी पत्नी माया है, तीन वर्ष पहले उनका देहांत हो गया। मेरे रिटायर होने के ठीक एक महीने पहले। सोचा था, सेवानिवृत्ति के बाद सारा वक्त पत्नी के नाम कर दूँगा। परंतु ईश्वर को मंजूर ना हुआ और..., और माया मेरा साथ छोड़ गई।'

'ओह...! क्या हो गया था उन्हें?' मैंने पूछा। 'कैंसर..., पहले पीलिया हुआ और बाद में लीवर कैंसर। एकदम लास्ट स्टेज में डायग्नॉस हुआ। कुछ नहीं कर पाया।' उन्होंने उदास स्वर में कहा। 'यह तो बड़ा ही दुखद हुआ और बच्चे..., वे कहाँ हैं?' 'एक कनाडा में और दूसरा लंदन में, दोनों ही यहाँ नहीं आना चाहते। उन्हें अब इंडिया डर्टी लगता है। अपनी माँ के मरने पर भी नहीं आये। जब भी उनसे आने की बात करता हूँ, तो वह एक रकम मेरे खाते में डाल देते हैं। यह अर्थ ही तो आजकल संबंधों की आधुनिकतम परिभाषा है।' कहकर देवास जी हँस दिए। 'तो आप यहाँ अकेले ही रहते हैं?'

'हाँ', बस कुछ ऐसा ही समझ लो। बस जीवन जी ही साथ रहते हैं। रविवार को दोस्तों को बुला लेता हूँ। समय बिताना भी एक कला है और बुढ़ापे का समय बिताना किसी ईश्वरीय साधना से कम नहीं।' कहकर वे फिर हँसे। तभी जीवन जी कॉफी, बिस्कुट और स्नैक्स वगैरह एक रिवाल्विंग ट्रे में लेकर हाजिर हुए। जब वे जाने लगे तो देवास जी ने कहा, 'जीवन, बाजार से सामान ले आओ। आज कुछ अच्छा बनाना, प्रिया बेटी हमारे साथ ही खाना खाएगी।' मैंने प्रतिवाद किया, 'नहीं... नहीं, बहुत देर हो जाएगी, बच्चे परेशान हो जायेंगे।'

'परेशान क्यों होंगे? जयंती जी हैं ना। वे देख लेंगी। मैं उन्हें फोन कर देता हूँ' और बिना एक पल गँवाए उन्होंने माँ का नंबर मिला दिया। मुझे लगा कि यही सही अवसर है सच जानने का। मैंने उनसे सीधा सवाल किया, 'अंकल, आप मम्मी को कब से जानते हैं? सुनकर उन्होंने गंभीर होते हुए कहा, 'तो तुम भी वही समझ रही हो, जो लक्ष्य और रुचिता।' मैं एकदम सकपका गई। क्या समझते हैं?'

'बेटी, मैं कोई निरा बुद्धू नहीं हूँ, सब समझता हूँ, पर जयंती जी के लिहाज से चुप रहता हूँ। सभी औलादें एक-सी होती हैं, सपोलों की तरह, जो बड़े होकर डंसना ही जानती हैं। कोई दूर रहकर तो कोई साथ रहकर। जो माँ-बाप रातों को जाग कर अपना खून-पसीना बहा कर बच्चों को पालते-पोसते हैं, उन्हीं की उन्हें जरा सी भी परवाह नहीं होती है।' वे क्रोध से हाँफने लगे थे। मैंने कहा, 'सॉरी अंकल, मेरा मकसद आपका दिल दुखाने का नहीं था।'

उन्होंने कहा, 'बेटा, कोई बात नहीं, मैं ही जरा ज्यादा उत्तेजित हो गया था। हम जिस समाज में रहते हैं, वहाँ एक स्त्री और पुरुष के साथ को सिर्फ एक ही नजरिए से आँका जाता है। एक अवैध तस्वीर खींच कर ऐसे पेश किया जाता है, मानो वे पापी हैं। वे अच्छे दोस्त भी तो हो सकते हैं, उनमें स्वार्थ से परे आत्मीय रिश्ता भी हो सकता है, लेकिन इसे कोई नहीं समझता। खैर! इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं। क्या करूँ, मैंने माया को तड़प-तड़प कर मरते देखा है, अब मैं जयंती जी को उसी स्थिति में नहीं देखना चाहता।'

'क्या कह रहे हैं अंकल', मैं हकलाने लगी थी। उन्होंने कहा... 'बस, कल परसों तक बायोप्सी की रिपोर्ट आ जाएगी। उसके बाद डॉक्टर बतायेंगे कि क्या करना है? पर तुम चिंता ना करो, मैं जयंती जी को बचाने के लिए जो संभव होगा करूँगा, पैसा पानी की तरह बहा दूँगा।' 'परंतु...', उन्हें बीच में रोक कर मैंने कहा, 'आप क्यों करेंगे? मैं ईशान को फोन कर दूँगी और वे सब व्यवस्था करेंगे।'

'मुझे पता है बेटी, तभी तो जयंती अक्सर कहती हैं कि 'प्रिया मेरी बेटी नहीं, मेरा गुरूर है।' उनकी बात सुनकर मैं रो पड़ी। देवास जी ने कहा, 'प्रिया, परेशान न हो, जयंती जी से मेरा रिश्ता क्या है? यह तो मैं परिभाषित नहीं कर पाऊँगा। मगर मैं जयंती के लिए कुछ कर पाऊँगा तो समझूँगा कि माया के लिए कुछ ना कर पाने का बोझ दिल से कुछ कम हो जाएगा।' कह कर उन्होंने अपनी बात समाप्त कर दी। जीवन जी बाजार से लौट आये थे और हमारे लिए खाना बनाने की तैयारी कर रहे थे। मैं स्तब्ध थी कि इस अनाम रिश्ते को क्या नाम दूँ?

- 547 क/245 शीतलापुरम
राजाजीपुरम-1, लखनऊ-226017,
मोबाइल: +91 9235858688

व्यंग्य

मुलाकात रिटायर्ड बॉस से

- श्री हरीश कुमार 'अमित' -

छुट्टी का दिन था। कुछ सौदा-सुल्फ लेने शाम के वक्त बाजार आया हुआ था। तभी अचानक किसी ने मुझे पुकारा। आवाज जानी-पहचानी सी लगी। इधर-उधर देखा तो पाया कि दूसरी तरफ कुमार साहब हाथ हिला रहे थे। साथ ही मुस्कुरा भी रहे थे। 'अरे कुमरू!' एकदम से मेरे दिमाग में कौंधा। हाँ, वही वह नाम था, जिससे हम लोग दफ्तर में अपने बॉस को पीठ पीछे बुलाते थे। करीब एक साल पहले ही वे रिटायर हो चुके थे।

तभी मैंने देखा कि कुमरू, माफ कीजिएगा, कुमार साहब सड़क पार करके लपकते हुए मेरी तरफ आ रहे हैं। उनके चेहरे की मुस्कुराहट और गहरी हो गई थी। कुमार साहब करीब पाँच साल तक मेरे बॉस थे, लेकिन मेरी तरफ देखकर इससे पहले वे कभी नहीं मुस्कराये थे। ऐसा नहीं कि वे मुस्कुराना नहीं जानते थे। वे खूब मुस्कुराते थे, जब उनके ओहदे या प्राइवेट कंपनी का कोई अफसर उनसे मिलने आता था। उनसे मिलने अगर कोई महिला आ जाती, तब तो वे मुस्कुराने के साथ-साथ खिलखिलाते भी थे। जब कभी वे अपने मातहतों से मुखातिब होते तो उनकी मुस्कुराहट न जाने कहाँ उड़न-छू हो जाती थी। अधीनस्थों से तो वे सख्त चेहरे, रोबदार आवाज और तनी हुई भृकुटियों से लैस होकर ही पेश आते थे। अलबत्ता आज वे अपने एक भूतपूर्व अधीनस्थ की ओर देखकर बेतकल्लुफी से मुस्कुरा रहे थे।

मेरे पास आकर उन्होंने गर्मजोशी से हाथ मिलाया और फिर बड़े अपनेपन से कंधे पर हाथ रखते हुए मेरा हाल-चाल पूछने लगे। बातों ही बातों में उन्होंने मेरे बाल-बच्चों के बारे में भी दो-चार सवाल किये। उनका ऐसा व्यवहार देखकर मुझे लगने लगा, जैसे मैं कोई सपना देख रहा हूँ। अपनी नौकरी के दिनों में तो वे मुझसे हमेशा डाँट-फटकार भरी रोबीली आवाज में ही बात करते थे। कुछ पूछने पर आँख या हाथ के इशारे से ही जवाब देते थे।

वे मुझसे आराम से बातें किये जा रहे हैं। परंतु तभी जैसे कोई बम फूटा, जब उन्होंने मुझे 'सर' कह कर संबोधित कर दिया। उनके मुँह से अपने लिए 'सर' का संबोधन...? मेरे तो होश ही उड़ गए। मुझे याद आने लगा कि अपने बॉस होने वाले दिनों में यही बंदा मुझे नाम से पुकारा करता था। कभी 'आप' कह कर तो संबोधित किया ही नहीं था। 'तुम' से ही काम चलाता था और गुस्से में तो 'तू' पर भी उतर आता था। उसी इंसान से 'सर' का संबोधन सुनकर दिमाग में हवाइयाँ उड़ने लगीं।

कुमरू, फिर माफ कीजिएगा, कुमार साहब को मुझसे बातें करते हुए काफी देर हो गई थी। अंधेरा छाने लगा था। मैं सोचने लगा किसी जमाने में ये इतना ज्यादा व्यस्त हुआ करते थे कि इनसे मिनट भर के काम के लिए घंटों इंतजार करना पड़ता था। मुझे याद है, एक बार एक अर्जेंट फाइल पर इनकी मंजूरी लेने के लिए मुझे दफ्तर से पूरे सवा पंद्रह किलोमीटर की यात्रा करके उस सभा-कक्ष तक जाना पड़ा था, जिसमें चल रहे दो-दिवसीय सम्मेलन में ये भाग ले रहे थे। वहाँ पहुँच कर भी मुझे पैंतालीस मिनट इंतजार करना पड़ा। और इनसे मुलाकात तब हो पाई थी, जब सम्मेलन में जलपान के लिए पंद्रह मिनट का अवकाश हुआ था।

एक और मौके पर किसी जरूरी कागज पर इनके हस्ताक्षर की चिड़िया मैंने तब प्राप्त की थी, जब टूर पर जाने के लिए ये श्रीमान हवाई अड्डे को प्रस्थान कर रहे थे। समय के मामले में किसी जमाने में जिस आदमी का जलवा हुआ करता था, वही अब बड़े इत्मीनान से मुझसे बातें करने में मगन था।

तभी मेरी जेब में पड़ा मोबाइल घनघना उठा। दूसरी तरफ से श्रीमती जी डाँटते हुए पूछ रही थीं कि अभी तक घर क्यों नहीं लौटा? जितनी खरीदारी मुझे करनी थी, मैं कर चुका था। अब मुझे घर पहुँचना था। रिटायर्ड बॉस की बातों के प्रवाह में सेंध लगाकर मैंने पूछ लिया, 'आपकी खरीदारी हो गई क्या?' उनका जवाब था 'जो सामान खरीदना रह गया है, उसे लेने कल परसों आ ले लूँगा। बाजार तो आता ही रहता हूँ।'

मैंने किसी तरह उनसे विदा लेकर अपनी कार की तरफ बढ़ गया। आगे लालबत्ती पर जब मेरी कार रुकी तो देखा कुमार साहब ऑटोरिक्शा चालक से मोलभाव कर रहे थे। मेरे मुँह से उसाँस निकल पड़ी। अरे! यही इंसान दफ्तर की गाड़ी के बिना कहीं आता-जाता न था। इनकी गाड़ी का दरवाजा भी चपरासी खोलता और बंद करता था। आज ये हालत है।

लाल बत्ती हरी होने वाली थी। मैंने कनखियों से देखा - सामान का झोला कंधे पर टांगे कुमार साहब एक दूसरे ऑटोरिक्शे की ओर बढ़ रहे थे। दया तो आई, पर तभी बगल वाली सीट पर रखा मोबाइल बजने लगा और स्क्रीन पर श्रीमती जी का नाम चमक रहा था। डर के मारे फैसला बदला और गाड़ी की स्पीड बढ़ा दी।

- 304, एम एस-4
केंद्रीय विहार, सेक्टर-56
गुरुग्राम-122011, हरियाणा
मोबाइल: +91 9899221107

राजभाषा के विकास में संवैधानिक समितियों की भूमिका

- सुश्री रुमन कुमारी -

शोध सार:

किसी भी देश की शिक्षा व्यवस्था उसके समाज की दिशा एवं दशा तय करती है। हम यदि अपने पुराने ताने-बाने को समझें और उसके जो प्रासंगिक हिस्से हैं, उन्हें अपनायें तो दोबारा उसी स्तर पर पहुँच सकते हैं, जहाँ हम पहले थे। आज हम ललचाई नजरों से विकसित देश बनने का सपना देखते हैं। इसकी बड़ी वजह है, आज भी उसी झूठे इतिहास और शिक्षा पद्धति में विश्वास रखना, जो हमें गुलाम बनाये रखने के लिए ईजाद किये गये थे। हिंदी को राजभाषा घोषित हुए 72 वर्ष हो गये, परंतु राजनीतिक या अन्य कारणों से हिंदी को राष्ट्रभाषा नहीं बना पाए। इसका कारण है कि जो सरकारी कर्मचारी हिंदी जानते हैं, वे भी द्विभाषिक रूप में कार्य करने की छूट होने के कारण हिंदी के बजाय अंग्रेजी में काम करना पसंद करते हैं। क्योंकि एक तो वे पहले से अंग्रेजी में काम करने के अभ्यस्त रहे हैं। दूसरे हिंदी में काम करने में भी कुछ हीनता व संकोच का अनुभव करते हैं। इसके अलावा अंग्रेजी का प्रयोग करने के लिए अभी जितने यांत्रिक साधन और सुविधाएँ उपलब्ध हैं, वे हिंदी में सुलभ नहीं हैं। अत: कंप्यूटरों आदि की अपेक्षित सुविधाएँ हिंदी में सुलभ कराने के लिए प्रयास करने की आवश्यकता है।

दूसरी ओर संघीय स्तर पर राजभाषा के रूप में अंग्रेजी का वर्चस्व आज भी कायम है। अंग्रेजी हिंदीतर भाषियों के विरोध के कारण ही नहीं, बल्कि प्रशासकों एवं समाज के अभिजात्य वर्ग के अपने निहित स्वार्थ के कारण राजकाज के स्तर पर और उच्च शिक्षा के स्तर पर छाया हुआ है। जब तक अंग्रेजी के साथ प्रतिष्ठा, सत्ता, नौकरी और पैसा जुड़ा रहेगा, तब तक लोगों से यह अपेक्षा करना कि वे अपने बच्चों को अंग्रेजी की जगह हिंदी पढ़ाएँ, संभव नहीं।

बीज शब्द:

राजभाषा, राजनीति, हिंदी, अंग्रेजी, विकसित, आजाद, संविधान, तकनीकी, शिक्षा, भाषा, राजकाज, देश, उन्नति आदि।

मूल आलेख:

एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है, बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। इसीलिए स्वतंत्रता के पहले भी हमारे राष्ट्रीय नेताओं और देश प्रेमियों के द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार और प्रयोग को लेकर अथक प्रयास किये गये। गांधी जी ने भी स्वभाषा को स्वराज का अभिन्न अंग माना था। दूसरी तरफ संविधान सभा भी इस तथ्य से पूर्णत: परिचित थी। इसीलिए 14 सितंबर 1949 को हिंदी को भारत संघ की राजभाषा घोषित किया गया। उस समय यह अनुभव किया गया कि हिंदी के माध्यम से प्रशासन का कार्य चलाने के लिए कुछ शुरुआती तैयारियों की आवश्यकता पड़ेगी। जैसे -

- प्रशासनिक, वैज्ञानिक, तकनीकी एवं विधि शब्दावली का निर्माण।
- प्रशासनिक एवं विधि साहित्य का हिंदी में अनुवाद।
- हिंदीतर भाषी सरकारी कर्मचारियों का हिंदी प्रशिक्षण।

इस प्रकार उपर्युक्त विंदुओं को ध्यान में रखते हुए राजभाषा नीति बनाई गई। हमारे संविधान ने भाषायी प्रावधान के रूप में अनुच्छेद 120, 210 तथा 343 से 351 लागू किये। 1963 में राजभाषा अधिनियम पारित किया गया। 1976 में राजभाषा हिंदी को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण राजभाषा नियम बनाये गये। राजभाषा नीति के कार्यान्वियन की जिम्मेदारी भारत सरकार के सभी मंत्रालयों एवं विभागों की है। इस नीति के समन्वय का कार्य राजभाषा विभाग करता है। यह विभाग समन्वय के लिए वार्षिक कार्यक्रमों को जारी करने के अलावा कई प्रकार की समितियों का गठन करके यह कार्य कर रहा है। समितियाँ निम्न से प्रकार हैं -

केंद्रीय हिंदी समिति:

हिंदी के विकास और प्रचार-प्रसार तथा सरकारी कामकाज में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के संबंध में भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों द्वारा कार्यान्वित किये जा रहे कार्यक्रमों का समन्वय करने और नीति संबंधी दिशानिर्देश देने वाली यह सर्वोच्च समिति है। इसकी अध्यक्षता प्रधानमंत्री करते हैं।

संसदीय राजभाषा समिति:

यह समिति 1976 में गठित की गई थी। इसकी अध्यक्षता गृहमंत्री करते हैं। यह समिति अपनी सिफारिशों सहित अपनी रिपोर्ट राष्ट्रपति को देती है, जिसे राष्ट्रपति द्वारा संसद के दोनों सदनों एवं राज्य सरकारों को भेजा जाता है। इस समिति का उद्देश्य हिंदी के प्रयोग की प्रगति का पुनरावलोकन करना एवं उपयुक्त सिफारिशों को राष्ट्रपति के सामने प्रस्तुत करना है।

हिंदी सलाहकार समिति:

यह समिति प्रत्येक मंत्रालय में गठित है। संबंधित मंत्रालय एवं विभाग के मंत्री इसके अध्यक्ष होते हैं। यह समिति राजभाषा

विभाग में समन्वयक की भूमिका निभाती है। इस समिति का उद्देश्य केंद्र सरकार के मंत्रालयों एवं विभागों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की प्रगति एवं संबंधित समस्याओं की समीक्षा करना व परामर्श देना है।

केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति:

इस समिति के माध्यम से हिंदी के अभिनव प्रयोगों की जानकारी का आदान-प्रदान किया जाता है। साथ ही मंत्रालयों एवं विभागों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की समीक्षा करने के उपाय सुझाये जाते हैं।

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति:

सभी मंत्रालयों एवं विभागों तथा कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ गठित हैं। इस समिति के द्वारा तिमाही प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा की जाती है तथा साथ में ही वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्य हासिल करने के उपाय किये जाते हैं।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति:

प्रत्येक नगर में केंद्रीय कार्यालयों, केंद्रीय उपक्रमों, राष्ट्रीयकृत बैंकों को मिलाकर इस समिति का गठन किया जाता है। जहाँ ऐसे दस या अधिक कार्यालय हैं, वहाँ ये समितियाँ गठित की जाती हैं।

उपर्युक्त प्रयत्नों के फलस्वरूप भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों में हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने नई दिल्ली में संसदीय राजभाषा समिति की 37वीं बैठक की अध्यक्षता की और राजभाषा के प्रतिवेदन के 11वें खंड को राष्ट्रपति के सामने प्रस्तुत किया। इस बैठक से निम्न बातें निकल कर सामने आई हैं:

- नौवीं कक्षा तक के छात्रों को हिंदी की प्राथमिक जानकारी देने और हिंदी शिक्षण परीक्षाओं पर अधिक ध्यान दिया जाए।
- हिंदी शब्दकोश को नया बनाकर पुन: प्रकाशित किया जाए।
- अन्य स्थानीय भाषाओं से शब्दों को स्वीकार कर हिंदी को लचीला बनाया जाए।
- पूर्वोत्तर के 9 आदिवासी समुदायों ने अपनी बोलियों की लिपियों को देवनागरी में कर लिया है और पूर्वोत्तर के सभी आठों राज्यों ने सहमति से स्कूलों में दसवीं कक्षा तक हिंदी को अनिवार्य कर दिया है।
- पूर्वोत्तर के 8 राज्यों में 22000 हिंदी शिक्षकों की भर्ती हुई है।
- कैबिनेट की कार्यसूची 70% हिंदी में ही तैयार होती है।
- तकनीकी शिक्षा और औषधि शिक्षा का संपूर्ण अभ्यासक्रम राजभाषा में भाषांतरण कराने का काम शुरु किया गया है।
- इसी प्रकार तकनीकी शिक्षा में इंजीनियरिंग की भी सभी विधाओं के अभ्यासक्रम का भाषांतरण किया जाएगा ।
- संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में भी हिंदी व अंग्रेजी को विकल्प के रूप में रखा गया है तथा एन डी ए और सी डी एस की परीक्षाओं में भी प्रश्न पत्रों को हिंदी में तैयार करने का निर्णय लिया गया है।
- 10 जून 2022 हमारी राजभाषा हिंदी के लिए एक ऐतिहासिक दिन सावित हुआ। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने पहली बार हिंदी भाषा से जुड़े भारत के प्रस्ताव को मंजूरी दी है। अब संयुक्त राष्ट्र के सभी जरूरी कामकाज और सूचनाओं को इसकी आधिकारिक भाषाओं के अलावा दूसरी भाषाओं जैसे हिंदी में भी जारी किया जाएगा।
- टोक्यो ओलंपिक में प्रथमत: हिंदी में कमेंट्री की व्यवस्था की गई।
- नई शिक्षा नीति 2020 का त्रिभाषा फार्मूला हिंदी भाषा के महत्व को बढ़ाने वाला है ।

उपर्युक्त विंदु हमारी राजभाषा के लिए बनाई गई समितियों की प्रासंगिकता को और बढ़ा देते हैं। विभिन्न प्रयासों के परिणामस्वरूप हिंदी का प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। भारत सरकार के सभी मंत्रालयों व विभागों, कार्यालयों आदि में वार्षिक कार्यक्रमों को पूरा करने का भरसक प्रयास किया जा रहा है। हिंदी में सर्वाधिक काम करने वाले मंत्रालयों व विभागों को शील्ड देने की व्यवस्था है। इसके अलावा हिंदी में पर्याप्त काम करने वालों को आर्थिक प्रोत्साहन भी दिया जाता है। राजभाषा विभाग अपने विभिन्न प्रकाशनों के माध्यम से राजभाषा नीति, राजभाषा अधिनियम तथा राजभाषा नियमों की जानकारी देने का पूरा प्रयास कर रहा है। हिंदी कार्यशाला के आयोजन से भी कर्मचारियों की झिझक दूर करके उन्हें हिंदी में काम करने का प्रोत्साहन दिया जा रहा है। तात्पर्य यह है कि हिंदी में काम करने का वातावरण बनाने के लिए हर संभव उपाय किये जा रहे हैं।

यदि भारतवर्ष को एक विकसित अर्थव्यवस्था बनना है तो उसे हिंदी को शिक्षा, ज्ञान, कौशल, व्यापार, मीडिया, बाजार और कार्यपद्धति की भाषा बनाना ही होगा। हिंदी भाषा को वैज्ञानिक एवं तकनीकी के साथ-साथ सूचना प्रौद्योगिकी से जोड़ना होगा। ऐसा किये बिना यह देश न तो संपन्न बन सकता है, और न समतामूलक महाशक्ति और न ही विकसित अर्थव्यवस्था। हिंदी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने से पहले उसे जनभाषा बनाना होगा। हमें एक ऐसे वातावरण का निर्माण करना होगा, जिसमें राजभाषा हिंदी का विकास सहज रूप से स्थानीय भाषाओं की शक्ति के रूप में हो।

- रिसर्च फेलो
क्वार्टर नंबर 66, टाइप 3, सी आई एस एफ
ग्रेटर नोयडा-201306
मोबाइल: +91 9968373330

कहानी

हाई स्कूल पास

- डॉ रंजना जायसवाल -

जी हाँ! मैं हाई स्कूल पास हूँ, होने को तो मैं इंटर और बी.ए. भी पास हूँ, पर सबसे खास बात यह है कि मैं हाई स्कूल पास हूँ। जब हमारे प्रदेश में हाई स्कूल का परिणाम सत्रह प्रतिशत गया था, मैं उस समय का हाई स्कूल पास हूँ। हाल ही में एक फिल्म आई थी 'बी ए पास'। फिल्म तो हमने नहीं देखी, पर यकीन है कि फिल्म का निर्देशक ने बी.ए. पास किया होगा और शायद बड़ी मेहनत के साथ। तो बात हो रही थी हमारे हाई स्कूल पास होने की..., भाई हाई स्कूल तो हमारे जमाने में होता था। आजकल के जमाने की तरह थोड़ी कि झोला भर-भर नंबर ला रहे हैं।

इनके नंबर देखकर इत्ती शर्म आती है कि पूछो मत। इत्ते नंबर में तो हम तीनों भाई-बहन निपट जाते थे। ये बच्चे शेयर और केअर पढ़ते जरूर हैं, पर अमल नहीं करते, एक हम थे बचपन से ही हर चीज मिल-बाँट कर करते थे। हमारी मम्मी ने हमको बचपन से समझाया था, 'बचवा हर चीज आपस में मिल-बाँट कर किया करो।' हमने मम्मी की बात गाँठ बाँध ली। कहते हैं कि पहला सावन, पहला प्यार और पहला बोर्ड, उसकी तो फीलिंग ही कुछ अलग होती है। बोर्ड तो इंटर में भी दिये थे, पर कसम से पहले बोर्ड में जितना डर लगा, उतना कभी न लगा। क्योंकि ये अनुभव खुद के कमाये नहीं थे, मुफ्त में पंजीरी की तरह बँटा था।

इस देश में कुछ मिले न मिले, सलाह मुफ्त में मिल जाती है। हम तो उस जमाने के हाई स्कूल पास हैं, जहाँ पास होना भवसागर पार करने जैसा था। पास हो गये, वही बड़ी बात थी, डिविजन और परसेंटेज कौन पूछे। पूरे खानदान का सीना छप्पन इंच का हो जाता, पूरे मोहल्ले में लड्डू बँट जाते थे। माता जी आँखों में आँसू भरे भगवान के हाथ जोड़े शुक्रिया करना नहीं भूलती। हमें तो आज तक हाई स्कूल का रोल नंबर भी याद है। पाँच लाख चौरासी हजार पाँच सौ इकतालीस। सच बतायें, इस चौरासी नंबर ने हमें चौरासी लाख देवी-देवताओं की याद दिला दी थी।

ऊपर से रिश्तेदारों और पड़ोसियों ने अलग खून पी रखा था। कोई भी रिश्तेदार भूले-भटके घर टपक जाए तो वह ऊपर से नीचे तक ऐसे देखने लगता खड़े-खड़े भस्म कर देगा। पैर छूने के बदले में दो या पाँच रुपये मिल ही जाते थे पर जैसे-जैसे बड़े होते गये, वह भी मिलना बंद हो गये। हम सबसे छोटे थे, इसलिए सामान्य ज्ञान का सवाल पूछा जाता। पता नहीं, रिश्तेदारों को हम भाई-बहनों से क्या दुश्मनी थी, देखने में तो हम तब भी शरीफ ही दिखते थे। बड़े भाई साहब से एक तड़कता-भड़कता ट्रांसलेशन तो छोटे भैया से गणित का सवाल दाग दिया जाता। बड़े भैया छत और छोटे भाई न जाने क्यों जमीन की तरफ उन सवालों का जवाब ढूँढ़ने लगते। हमारे हाथ-पाँव बिना सवाल के ही फूलने लगते, कलेजा मुँह को आने लगता, धौंकनी दस फीट दूर से ही सुनी जा सकती थी।

भारत के विदेश मंत्री कौन हैं? अब ये क्या बात हुई, जब हमने प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के नाम याद किये हैं तो वह यह सवाल क्यों पूछ रहे हैं। पिछली बार जब वे आये थे तब तो उन्होंने हम से यही सवाल पूछा था और हमेशा की तरह हम उस दिन भी जवाब नहीं दे पाये थे। पिता जी ने माता जी को कितना कुछ सुनाया था और माता जी ने हम पर अपने शस्त्रों का प्रयोग कर अपना गुस्सा ठंडा किया था। उसी रात हमने आगे-पीछे सारे प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के नाम याद कर लिये। अब ये ऐन मौके पर पलटी क्यों खा गये?

'बेटा! बोर्ड है नवीं तो ऐसे-वैसे सब पास हो जाते हैं, लापरवाही ठीक नहीं।' और हम कबूतर की तरह हर बात पर बस गर्दन हिलाकर रह जाते। बोर्ड के नाम पर तो हमसे ज्यादा तो हमारी माता जी डरी हुई थीं, भई आखिर उन्हें भी तो मोहल्ले में मुँह दिखाना था, वैसे तो वह माता रानी का अवतार थीं। हर काम चुटकियों में निपटा देती थीं। एक दिन गलती से उन्होंने पड़ोस वाली आंटी जी से दही जमाने के जामन मँगवा लिया। उनका घर दो मकान छोड़कर ही था, पर हम तफरीह मारने के इस सुनहरे अवसर को खोना नहीं चाहते थे। हाथ में कटोरी पकड़े निकल पड़े अपने लक्ष्य की ओर। घूमते-घुमाते दुआ सलाम लेते-देते हम जामन लेकर घर पहुँचे। अब हमें क्या पता था कि माता रानी का अवतार माता जी पर स्वयं माता रानी उतर आई हैं, वह दिन था और आज का दिन हमने कभी दही की ओर मुड़कर नहीं देखा।

असल में गलती माता जी की भी नहीं थी, हम थोड़े मासूम और मिलनसार टाइप के जीव थे। हमारे कुछ ऐसे मित्र भी थे, जो पंचवर्षीय योजना पर विश्वास रखते थे। माता जी को हमेशा डर बना रहता था कि उन वीर बांकुरों के साथ हमारा नाम भी न जुड़ जाये, उन्हें दिन-रात एक ही टाइप के सपने आने लगे... हम तो डूबे हैं सनम, तुम्हें भी ले डूबेंगे। वैसे भी इसे पास करना हर किसी की किस्मत में नहीं होता, अब हमें ही देख लो... वे बेचारे देवदास सा चेहरा बनाकर हमारे सामने खड़े हो जाते।

पढ़ाई के साथ पूजा का समय और व्रत-अनुष्ठान की संख्या बढ़ने लगी। नहाने के बाद सूर्य भगवान को जल, पास के मंदिर में भोलेनाथ के चक्कर की संख्या अचानक से बढ़ गई थी। सुना था, भोलेनाथ अपने नाम के अनुरूप बहुत भोले हैं और हम

जैसे मासूम और भोले-भाले बालकों पर अपनी कृपादृष्टि बनाये रखते हैं। हम किसी तरह का कोई रिस्क नहीं लेना चाहते थे, अपनी किस्मत लिखने के लिए हमने सारे टोटके अपना लिये थे। चिड़ियों को दाना, कौवे को रोटी, काले कुत्ते को दूध और गाय को घास खिलाना हमारे रोज की आदत में शुमार हो गया। माता जी हमारी भक्ति देखकर मन ही मन बहुत खुश थी, कभी-कभी तो खुशी से उनकी आँखें भी छलक आतीं।

पर बेइज्जती होनी तो अभी बाकी ही रहती थी। चूहों को भी हमसे न जाने क्या दुश्मनी थी, उनको भी अपने कुनबे के साथ हमारे ही घर में बसना था। उन दिनों माता जी भी कुछ निर्मोही टाइप की हो गई थीं, बताइये भला हम से ही चूहे मारने की दवा मँगवा ली। वैसे तो हम बचपन से ही बहुत सुलझे और समझदार थे और इस बात का हमने कभी घमंड नहीं किया। पर बाल मन कहीं इधर-उधर भटक जाता तो... कौन जिम्मेदारी लेता। बड़े भाई अचानक से दुर्योधन और दु:शासन लगने लगे थे। हमारी मासूम सी मुस्कुराहट देखकर हमें ऐसे घूरते, जैसे हमने बोर्ड का इम्तिहान देकर कोई अपराध कर दिया है कि बोलने- बतियाने का हक भी खो बैठे।

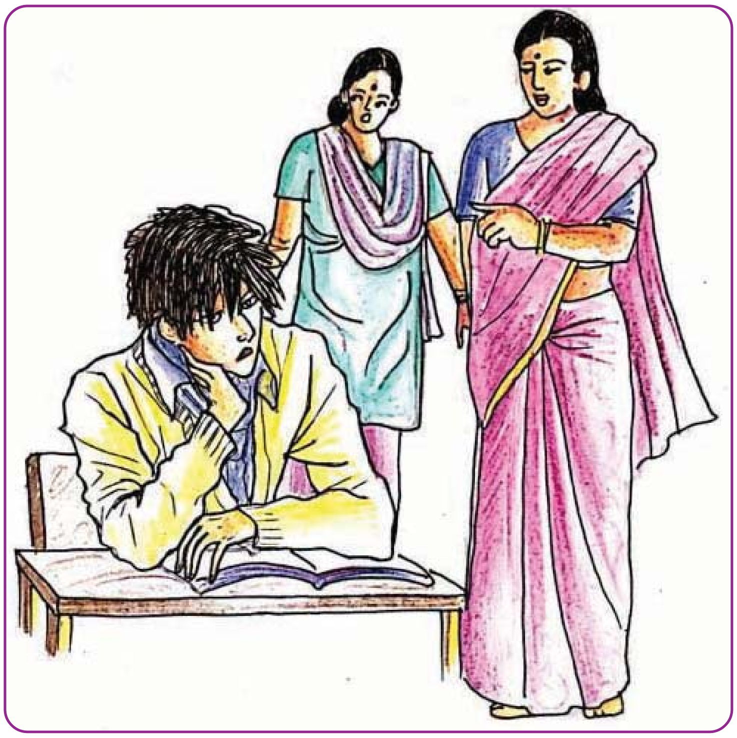

उन दिनों रिजल्ट भी ऐसे समय आता, जब मानसून की पहली फुहार पड़ने लगती, माता जी के लिए कपड़े सुखाना भी एक समस्या हो जाती। उस पर बड़े भाई साहब ने हम पर तिरछी नजर डालते हुए माता जी से कहा, 'माँ! एक नई रस्सी खरीद लो कमरे में बाँध देंगे, कपड़े सूख जायेंगे... वरना किसी के काम तो आ ही जायेंगी। आज हमें पांडवों का दर्द अच्छे से समझ आ रहा था, वो तो माता जी बीच में आ गई थीं, नहीं तो अबकी महाभारत वेदव्यास जी नहीं, हम लिख रहे होते।

और फिर एक दिन रिजल्ट का दिन भी आ गया। ऑनलाइन का जमाना तो था नहीं, सो मोहल्ले के हीरो छाप लड़के, जो पहले से ही अपनी नींव मजबूत किये खड़े थे, अपनी फटफटिया घुर-घुराते हुए हमारे जले पर नमक छिड़कने चले आते। आज तो रिजल्ट आना है न... बाई गॉड की कसम मन करता, काश हमारे अंदर कोई ऐसी शक्ति होती कि उन्हें खड़ा-खड़ा ही भस्म कर देते। एक तो रातों की नींद वैसे ही गायब थी, उस पर घड़ी-घड़ी माता जी का ये पूछना 'पास तो हो जायेगा न?' ने तो भूख भी गायब कर दी थी।

अखबार वाले को एक हफ्ते पहले ही सहेज दिया था। हर आहट पर लगता कि वो आया, इतना इंतजार तो पिता जी ने महीने की तनख्वाह के लिए भी नहीं किया होगा। फाइनली जिसका मुझे नहीं सारे मोहल्ले को था इंतजार वह घड़ी आ ही गई। पूरा का पूरा मुहल्ला उस पर टूट पड़ा। उन दिनों रिजल्ट वाले अखबार को कमर में खोंसकर किसी ऊँची जगह या चबूतरे पर चढ़ जाते। फिर वहीं से नंबर पूछा जाता और रिजल्ट सुनाया जाता... आठ लाख पैंतीस हजार एक सौ इकतालीस... फेल, बयालीस... फेल, सैंतालीस... फेल, छियासी... सप्लीमेंट्री।

जो पास हो जाता, उसे ऊपर जाकर अपना नंबर देखने की अनुमति होती। टॉर्च को घुमा-घुमाकर या हथेली पर पीट-पीटकर उसकी रोशनी बढ़ाने की कोशिश करने के बाद उस अविश्वसनीय शब्द 'पास' शब्द को अपनी आँखों से देखने की ललक को न रोक पाने वाले मन, कपकपाते हाथों से अखबार और प्रवेश-पत्र से मिलाकर नंबर पक्का किया जाता, और फिर 10, 20 या 50 रुपये का पेमेंट कर पिता-पुत्र माउण्ट एवरेस्ट शिखर पर विजय पताका फहरा कर गर्व के साथ नीचे उतरते।

बात यहीं खत्म नहीं होती, जिनका नंबर अखबार में नहीं होता, उनके परिजन अपने बच्चे को कुछ ऐसे ढांढ़स बँधाते... 'अरे, कुंभ का मेला है क्या, जो बारह साल में आएगा और न ही लीप ईयर वाला कैलेंडर, जो सोच-सोचकर आएगा, अगले साल फिर दे देना एग्जाम...।'

पूरे मोहल्ले में रतजगा होता। चाय और पकौड़ियों के दौर के साथ चर्चाएँ चलतीं, अरे... फलाने के लड़के ने तो पहली बार में ही हाई स्कूल पास कर लिया। भगवान जाने ये हमारी पढ़ाई का कमाल था या फिर भोलेनाथ की कृपा। एक ही बार में निकल लिए... और माता जी के माता रानी अवतार से बच गये। सच में, रिजल्ट तो हमारे जमाने में ही आता था।

- लाल बाग कॉलोनी, छोटी बसही
मिर्जापुर - 231001, उत्तर प्रदेश
मोबाइल: +91 9415479796

आओ भाषा सीखें

हिंदी और तेलुगु भाषाओं में कुछ शब्द ऐसे पाये जाते हैं, जो उच्चारण की दृष्टि से एक जैसे लगते हैं, लेकिन अर्थ की दृष्टि से भिन्न होते हैं। 'सुगन्ध' के पिछले कुछ अंकों से दोनों भाषाओं के ऐसे शब्दों की जानकारी देने का प्रयास जारी है। इस अंक में भी इसी प्रकार के शब्दों को निम्नलिखित संवाद के माध्यम से आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। तो आइए, इन शब्दों पर एक नजर डाल लेते हैं।

मास्टर जी : अच्छा रामा! बताओ, हम कहाँ रुके थे?
మాస్టర్ జీ : అచ్ఛా రామా! బతావో, హమ్ కహా్ఁ రుకే థే?
మాస్టర్ జీ : సరే రామా! మనం ఎక్కడ ఆగాము?
मास्टर जी : सरे रामा! मनम् एक्कड आगामु?
Master Ji : Oh Rama! where we were?
रामा : मास्टर जी! हिंदी में 'पट्टा' शब्द की चर्चा कर रहे थे।
రామా : మాస్టర్ జీ! హిందీ మే 'పట్టా' శబ్ద్ కీ చర్చా కర్ రహే థే.
రామా : మాస్టర్ గారు! హిందీలో 'పట్టా' పదం గురించి చర్చిస్తున్నాము.
रामा : मास्टर गारु! हिंदी लो 'पट्टा' पदम् गुरिंचि चर्चिस्तुन्नामु।
Rama : Master Jee! We were discussing about the word 'Patta' in Hindi.
मास्टर जी : जानते हो, तेलुगु में 'पट्टा' शब्द का क्या मतलब है?
మాస్టర్ జీ : జాన్‌తే హో, తెలుగు మేఁ 'పట్టా' శబ్ద్ కా క్యా మత్‌లబ్ హై?
మాస్టర్ జీ : తెలుగులో 'పట్టా' అంటే తెలుసా?
मास्टर जी : तेलुगु लो 'पट्टा' अंटे तेलुसा?
Master Ji : Do you know, what is meant by 'Patta' in Telugu?
रामा : जी, 'पट्टा' मतलब 'प्रमाणपत्र'।
రామా : జీ, 'పట్టా' మత్‌లబ్ 'ప్రమాణ్‌పత్ర్'.
రామా : 'పట్టా' అంటే 'ధృవీకరణ పత్రం'.
रामा : 'पट्टा' अंटे 'धृवीकरण पत्रम्'।
Rama : 'Patta' means 'Certificate'.
मास्टर जी : मतलब...
మాస్టర్ జీ : మత్‌లబ్....
మాస్టర్ జీ : అంటే....
मास्टर गारु : अंटे...
Master Ji : It means....
रामा : जैसे कोई डिग्री की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेता है...
రామా : జైసే కోయీ డిగ్రీ కీ పరీక్షా ఉత్తీర్ణ్ కర్ లేతా హై....
రామా : అంటే ఎవరైనా డిగ్రీ పరీక్ష ఉత్తీర్ణులయి...
रामा : अंटे एवरैना डिग्री परीक्षा उत्तीर्णुलयि...
Rama : It means, if anyone qualifies degree examination ..
मास्टर जी : और उसे प्रमाणपत्र मिल जाता है...
మాస్టర్ జీ : ఔర్ ఉసే ప్రమాణపత్ర్ మిల్ జాతా హై....
మాస్టర్ జీ : ఇంకా అతనికి ధృవీకరణ పత్రం లభిస్తే.....
मास्टर जी : इंका अतनिकि धृवीकरण पत्रम् लभिस्ते...
Master Ji : And also gets Certificate..
रामा : तो तेलुगु में कहा जाता है कि उसे 'पट्टा' मिल गया।
రామా : తో తెలుగు మేఁ కహా్ జాతా హై కి ఉసే 'పట్టా' మిల్ గయా.

రామా	:	అప్పుడు తెలుగు లో వాళ్ళకి 'పట్టా' వచ్చింది, అని అంటారు.
रामा	:	अप्पुडु तेलुगु लो वाल्लकि 'पट्टा' वच्चिंदि, अनि अंटारु।
Rama	:	Then it is said in Telugu that he earned 'Patta'.
मास्टर जी	:	बिल्कुल सही। इसके लिए तेलुगु में एक सुंदर शब्द है 'पट्टभद्रुलय्यारु'।
మాస్టర్ జీ	:	బిల్‌కుల్ సహీ. ఇస్‌కే లియే తెలుగు మేం ఏక్ సుందర్ శబ్ద్ హై 'పట్టభద్రులయ్యారు'.
మాస్టర్ జీ	:	అవును. దీనికి తెలుగులో ఒక మంచి పదం ఉంది, 'పట్టభద్రులయ్యారు'.
मास्टर जी	:	अवुनु, दीनिकि तेलुगु लो ओक मंचि पदम् उंदि, 'पट्टभद्रुलय्यारु'।
Master Ji	:	Yes, there is a beautiful word for this in Telugu, 'Pattabhadrulayyaru'.
रामा	:	जी... मास्टर जी...
రామా	:	జీ.... మాస్టర్ జీ.....
రామా	:	అవును... మాస్టరు గారు...
रामा	:	अवुनु... मास्टरु गारु...
Rama	:	Yes... Master Jee...
मास्टर जी	:	'पट्टा' का एक और मतलब है।
మాస్టర్ జీ	:	'పట్టా' కా ఏక్ ఔర్ మత్‌లబ్ హై.
మాస్టర్ జీ	:	'పట్టా' అంటే మరో అర్థం కూడా ఉంది.
मास्टर जी	:	'पट्टा' अंटे मरो अर्थम् कूडा उंदि।
Master Ji	:	There is another meaning to 'Patta'.
रामा	:	जी... जमीन का 'पट्टा'।
రామా	:	జీ.... జమీన్ కా 'పట్టా'.
రామా	:	మాస్టర్ గారు..... భూమి పట్టా.
रामा	:	मास्टर गारु... भूमिकि पट्टा।
Rama	:	Yes.. Master Jee.. documents related to land.
मास्टर जी	:	हाँ... जिससे जमीन के मालिक का पता चलता है।
మాస్టర్ జీ	:	హాఁ... జిస్‌సే జమీన్ కే మాలిక్ కా పతా చల్‌తా హై.
మాస్టర్ జీ	:	అవును... భూస్వామి ఎవరో తెలియజేసే కాగితాలు.
मास्टर जी	:	अवुनु... भूस्वामि एवरो तेलियजेसे कागितालु।
Master Ji	:	Yes.... the documents that certify the ownership of the land.
रामा	:	जी... मास्टर जी...
రామా	:	అవును... మాస్టారు గారు...
रामा	:	अवुनु... मास्टारु गारु...
Rama	:	Yes... Master Jee...
मास्टर जी	:	चलो..., अब अगले अंक में कोई और शब्द सीखेंगे।
మాస్టర్ జీ	:	చలో...., అబ్ అగ్‌లే అంక్ మేం కోయీ ఔర్ శబ్ద్ సీఖేంగే.
మాస్టర్ జీ	:	సరే...., వచ్చే సంచికలో ఇంకేదైనా పదం నేర్చుకుందాం.
मास्टर जी	:	सरे..., वच्चे संचिकलो इंकेदैना पदम् नेर्चुकुंदाम्।
Master Ji	:	O.K..., we will learn the other words in the next issue.
रामा	:	ठीक है... मास्टर जी... नमस्ते।
రామా	:	ఠీక్ హై... మాస్టర్ జీ.... నమస్తే.
రామా	:	అలాగే... మాస్టారు గారు... నమస్కారం.
रामा	:	अलागे... मास्टारु गारु... नमस्कारम्।
Rama	:	Yes... Master Jee... Namaste.

जरा गौर करें

बुंदेलखंड के आम गाँवों की तरह ही उसका गाँव भी था। उसके गाँव में किसी को पीने का पानी भी ठीक से मयस्सर नहीं था। फिर खेतों की सिंचाई और पशुओं के लिए पानी मिलना तो बहुत बड़ी बात थी। बरसात के दिनों में गाँव में वर्षा तो होती थी, लेकिन जल संग्रहण क्षेत्रों के अभाव में वर्षा जल बह कर नदियों में चला जाता था और व्यर्थ हो जाता था। ऐसा भी नहीं था कि उसके गाँव में तालाब और कुँए नहीं थे, बल्कि उसके गाँव में कई कुँए और तालाब थे, जो वर्षो पहले क्षतिग्रस्त होकर बेकार हो चुके थे। गाँव में यदि कोई हैंडपाइप लगवाता या कुँआ खुदवाता तो उसे जमीन में लगभग डेढ़ सौ फीट से अधिक गहराई तक खुदाई करानी पड़ती थी। गर्मियों के दिनों में पूरे इलाके में टैंकरों से पेयजल की आपूर्ति की जाती थी। हालाँकि उसके जिले में हर साल औसतन 600 से 800 मिलीलीटर वर्षा होती थी। इतना सब होते हुए भी उसका गाँव सूखाग्रस्त और बदहाल रहता था। उसे अपने गाँव की स्थिति पर बहुत दुख होता था। वह जिससे भी सुनता कि उसका बुंदेलखंड क्षेत्र सूखाग्रस्त व बंजर है, तो वह विह्वल हो उठता।

उसने अपनी प्रारंभिक शिक्षा के बाद उच्च शिक्षा के लिए इलाहाबाद विश्वविद्यालय में दाखिला लिया। वहाँ से दर्शनशास्त्र में स्नातक परीक्षा पास करने के पश्चात उसने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर एवं पी एच डी किया। कुछ दिन वहाँ काम करने के पश्चात उसने कोरिया के वाव्कांग विश्वविद्यालय में दस वर्षो तक अतिथि प्रोफेसर के रूप में काम किया। उसके बाद वह पुन: वाराणसी लौट आया और अपने गाँव के पानी की समस्या का समाधान ढूँढ़ने में लग गया।

उसे मालूम था कि उसका क्षेत्र हमेशा से ऐसा नहीं था, बल्कि महोवा क्षेत्र में अपने शासन के दौरान चंदेल शासकों ने यहाँ खूब तालाब खुदवाये थे। लेकिन रखरखाव के अभाव में वे सभी विलुप्त हो गये। उसे अपने आप पर विश्वास था। इसलिए उसने पहले अपने खेत में एक तालाब खुदवाया और बरसात का इंतजार करने लगा। बरसात हुई, तालाब भर गया। लेकिन गर्मी आते-आते तालाब सूख गया। लेकिन दो साल बाद तालाब में बने बोर में पानी आने लगा और तालाब पूरी तरह से भर गया। उसे देखने के लिए भीड़ आने लगी। इससे उसका मन और उत्साहित हुआ और उसने अपने दूसरे खेत में भी यही प्रयोग किया। यहाँ भी उसका प्रयोग सफल रहा।

अब उसकी योजना का स्वरूप बड़ा हो गया। वह महोवा जिले के कलेक्टर से मिला और अपनी योजना बताई। कलेक्टर को बात अच्छी लगी और उसने मामले को शासन के ध्यानार्थ अग्रसारित कर दिया। शासन से तालाब बनवाने हेतु 50% की धनराशि के अनुदान की मंजूरी मिल गई। इधर इसने भी लगभग 200 किसानों को अपने खेतों में तालाब खुदवाने के लिए राजी कर लिया। मंजूर अनुदान राशि से काम होने वाला नहीं था। इसलिए उसने अपनी ओर से जे सी बी मशीन किराये पर मँगाया और शुरु हो गया गाँव को हरा भरा बनाने का कार्यक्रम। इस प्रकार उसके प्रयास से लगभग दो सौ तालाबों की खुदाई हो गई और अब गाँव का कायापलट हो चुका है। अब उसके गाँव में साल भर पेयजल और खेतों की सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध हो रहा है।

जिस गाँव में कभी केवल बबूल के कांटेदार वृक्ष होते थे, अब उस गाँव में आम, आँवला, जामुन, अमरूद आदि जैसे फलदार वृक्षों के साथ-साथ वृक्षों की अनेक प्रजातियाँ एवं धान की खेती लहलहाने लगी हैं। साथ ही लगभग पचास प्रजातियों के पक्षी वहाँ के तालावों में अठखेलियाँ करते हैं। उसकी उपलब्धि से पूरा इलाका खुश है और यह मॉडल एक मिसाल बन गया है।

यह व्यक्ति कोई और नहीं, बल्कि डॉ धर्मेंद्र मिश्र हैं, जो उत्तर प्रदेश राज्य के महोवा जिले में चरखारी ब्लॉक के काकुन गाँव के निवासी हैं और अब विदेश की नौकरी छोड़कर अपने जिले को हरा-भरा करने तथा अपने गाँव में 18 बीघे जमीन पर वैदिक पार्क बनाने में तल्लीन हैं।

गैंगटोक में आयोजित हिंदी सलाहकार समिति की बैठक में माननीय इस्पात मंत्री द्वारा 'सुगन्ध' पत्रिका का विमोचन

माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा जयपुर शाखा बिक्री कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन का निरीक्षण

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड - फोर्ज्ड व्हील संयंत्र
लालगंज, रायबरेली, उत्तर प्रदेश

- भारतीय रेलवे के साथ समझौता ज्ञापन के तहत निर्मित
- क्षमता : 200000 व्हील प्रतिवर्ष विस्तारण प्रावधान सहित वर्तमान में 100000 व्हील प्रतिवर्ष
- संयंत्र के उत्पाद मिश्र का अनुपात 40:60 (लोकोमोटिव : कोच व्हील)
- ईंधन गैस (प्रोपेन एल पी जी) : आर आई एन एल ने संयंत्र के प्रचालन के लिए आवश्यक ईंधन की आपूर्ति हेतु मेसर्स इंडियन ऑयल कार्पोरेशन के साथ दीर्घकालिक करार पर हस्ताक्षर
- पानी : भूमिगत जल सुविधा
- विद्युत : यू पी पी टी सी एल
- मानवशक्ति : परियोजना की प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष तौर पर लगभग 200 एवं 500 कर्मचारियों की नियुक्ति

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र
की गृह-पत्रिका